हिन्दी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका

वर्ष -1, अंक -2, (अक्टूबर - दिसम्बर)

हिन्दी की गूँज

हिन्दी की गूंज
Saqib Majeed
अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका
संरक्षक एवं संपादक
रमा शर्मा
जापान
日本

संरक्षक एवं सम्पादक

डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा

जापान

उप संपादक

शामलाल पुरी

लंदन

साहित्य सम्पादक

कपिल कुमार

बेल्जियम

वेब संपादक

जे पी द्विवेदी

गाजियाबाद

सलाहकार सम्पादक

विनोद पाण्डेय

गाजियाबाद

वरिष्ठ परामर्शदाता

डॉ हरीश नवल

प्रकाशन :

हिन्दी की गूँज

जापान

हिन्दी की गूँज

♦ सभी पद अवैतनिक हैं। ♦

नोट : पत्रिका में प्रकाशित किसी सामग्री के लिए संपादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा सक्षम न्यायालय द्वारा किया जाएगा।

अनुक्रम

संपादकीय

अपनी बात- डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा /5

आलेख

अनेकता में एकता का स्वर है हिन्दी-निक्की शर्मा 'रश्मि' /7
हिन्दी केवल भाषा नहीं बल्कि पूर्ण संस्कृति-दीपक श्रीवास्तव /29
साहित्य अकादमीः इतिहास के झरोखे से- विवेक शर्मा /31&32
हरियाणवी लोकगीतों में वीरता-डॉ संजीव कुमारी /36

कविता /गीत /गजल

गजल-कपिल कुमार /6
एक गजल-विनोद सिंह नामदेव'शजर' /8
गजल-अमिताभ पाण्डेय /8
गजल-बलजीत सिंह बेनाम /9
गजल-कुमार शैल /9
कितनी अभागिन होती हैं प्रेमिकाएं- रीमा मिश्रा 'नव्या' /10&11
अकिंचन-नवीन गौतम /12
साध्य की साधन-नवीन गौतम /12
दो टूक कहो- नरेंद्र सिंह 'निहार' /15
लाकडाउन का सबक -नरेंद्र सिंह 'निहार' /15
मुझे तुम जरूरी हो-ज्योति विश्वकर्मा /16
नज्म - ज्योति विश्वकर्मा /16
फूँक दी फूलवारियाँ- मोहन द्विवेदी /17
मेरे सपनों का भारत-लाल देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव /17
पर्यावरण बचाओ-प्रवीण त्रिपाठी /26 27
स्वक्षता- प्रवीण त्रिपाठी /27
सजल-किस्सा-डॉ संजीव कुमारी /28
आचार्य संदीप की कवितायें-आचार्य संदीप कुमार त्यागी 'दीप' /30
इश्क-राकेश छोकर /37
पंचतत्व-रितु कुलश्रेष्ठ /37
कोरोना भी चकराया है-विनोद पाण्डेय /39
तेरी वह मुस्कुराहट-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /44
पुतला-डॉ रमा शर्मा /44&45
यह भी कोई मरने की उम्र थी-डॉ सुमन सिंह /45
गजल-विजय तिवारी /46

संस्मरण /कहानी

भूख-मृदुला मिश्रा /18
लाल किला और खाई-डॉ हरीश 'नवल' /18
चंचल-रमेश कुमार /19&20
ट्यूशन-विनोद पाण्डेय /21&24

लघुकथा /विचार

जीवन की उलझने-चंद्रप्रभा सूद /**13**
पहचान- डॉ जयशंकर शुक्ल /20
अदला बदली- डॉ जयशंकर शुक्ल /21

साक्षात्कार

साहित्य में एक बहुत सुंदर सी जिंदगी जी
जा सकती है:पूनम के सुजीबुन - कपिल कुमार /42&43

समीक्षा

समाज को उद्वेलित कर विमर्श को प्रेरित करता
संग्रह-बोलने दो- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /24&26

स्माचार

डॉ शैलेश शुक्ला को राष्ट्रपति करेंगे सम्मानित /38

व्यंग

एक व्यंग-सौम्या दुआ /14
पत्नी और आतंकवाद-अरविंद पथिक /33&34
नेताओं की भर्ती-अभिषेक अवस्थी /35
हाय मेरी नींद-डॉ अरविंद सिंह नागपाल /40&41

संपादकीय

इस वर्ष भी हिंदी दिवस बीत गया। हर वर्ष हिंदी दिवस आता है ,हिंदी के लोग पखवाड़े में जागरूक होते हैं। राजभाषा अधिकारियों की सक्रियता देखने लायक होती है। सरकारी संस्थानों में हिंदी के नाम पर कवि सम्मलेन, काव्य-गोष्ठी, काव्य-प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया जाता है। उत्सव में उल्लास भी दिखाई देता है और कहीं-कहीं मजबूरी भी। मजबूरी का मै कतई समर्थन नहीं करती लेकिन ये एक दिन का उल्लास भी मुझे खटकता है। मैं उल्लास के पक्ष में तो हूँ लेकिन एक दिन के इस उल्लास से हिंदी का कितना भला हो सकता है? यह विचार करने योग्य है। राजभाषा से आगे हिंदी क्यों नहीं बढ़ पा रही है? इसमें किसका दोष है? हिंदी विश्व में बड़े व्यापक पैमाने पर बोली जाती है,भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाले भाषा है। साहित्यकार और फिल्म इंडस्ट्री ने भी हिंदी के प्रचार -प्रसार में खूब भूमिका निभाई और निभा रहे हैं फिर भी आज हिंदी उपेक्षित क्यों है?

यह प्रश्न विशेषकर उन लोगों से है जो पढ़ लिख कर किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी कर रहे हैं। यह प्रश्न सरकारों से हैं जिनके पास तमाम फिजूल के मुद्दे हैं लेकिन हिंदी पर चर्चा करना उपयुक्त नहीं समझते। अन्य सभी भाषाओँ का स्वागत है,हम किसी भाषा का विरोध नहीं करते लेकिन भारत ही पहचान जिस भाषा से है वो हिंदी है,उसका सम्मान और उसका हक बहुत जरुरी है। अन्य देशों से सीख लेकर भी हम इस दिशा में उपयुक्त कार्य कर सकते हैं लेकिन सी खने को कौन कहे हमारी नयी पीढ़ी के अधिकतर लोगों को हिंदी में आपस में बात करने में झिझक महसूस होती है। हिंदी बड़े-बड़े शोधों से नहीं मजबूत होगी, हिंदी बड़ी-बड़ी किताबों से नहीं मजबूत होगी,हिंदी राजभाषा दिवस पर किये गए एकदिवसीय कार्यक्रमों से नहीं मजबूत होगी। हिंदी को मजबूत करना है तो जनमानस में इसका बढ़ावा जरुरी है। लोग भले की कई भाषाओँ के ज्ञाता हों लेकिन कम से कम हर भारतीय आपस में हिंदी में बातचीत करे और गर्व महसूस करे। टेक्नहलजी की भी इस विषय में महत्वपूर्ण भूमिका है। जहाँ-जहाँ अंग्रेजी की निर्भरता है वहाँ रिसर्च और अनुसन्धान की आवश्यकता है ताकि हम हिंदी का प्रयोग इंटरनेट और कंप्यूटर के साथ भी खूब कर सकें।

वैश्विक स्तर पर भी हिंदी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जिसमें सरकार का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। हिंदी दिवस की सार्थकता तभी है जब दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में हिंदी का उपयोग धड़ल्ले से हो। हर भारतीय हिंदी में बात करने में सम्मान महसूस करें। कान्वेंट स्कूल के बच्चों को अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी की व्यवस्थित ट्रेनिंग दी जाय और समय-समय पर हिंदी में शोध कार्य करने वाले विद्वानों को पुरस्कृत किया जाय ताकि शोध में भी बढ़ावा मिले।

हिंदी की गूँज का भी यही उद्देश्य है कि हिंदी पूरे विश्व में फैले। भारत से दूर रहने वाले हर भारतीय हिंदी के फूलों को अपने ह्रदय में लेकर अपने आस-पास खुश्बू फैलाता रहे। जुलाई से सितम्बर अंक को आप सभी का बहुत प्यार मिला। मुझे उम्मीद है इस आगामी अंक को भी आपका बहुत प्यार मिलेगा।

आभार
डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा
मुख्य संपादक
हिंदी की गूँज

अपनी बात

डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा
मुख्य संपादक
जापान

गजल

तुम छुपी रहने दो जो हम ने छुपा रख्खी है
इस कलेजे में सुनामी सी दबा रख्खी है

हमको मालूम है इज्जत क्या हुआ करती है
हम ने इज्जत की सुनो साख बचा रख्खी है

तुमने रो – रो के ये क्या हाल बना रखा है
तुमने तो सर पे ही ये दुनिया उठा रख्खी है

तुमको औरों को भला सुनने की कब फुर्सत है
तुमने बस अपनी बस अपनी ही लगा रख्खी है

आईना एक ही रखते हो सदा घर में तुम
उस में भी अपनी ही तस्वीर लगा रख्खी है

कपिल कुमार
बेल्जियम

अनेकता में एकता का स्वर है- हिंदी

हिंदी हिंदुस्तान की भाषा है।हिंदी भारत देश की मातृभाषा है और अनेकता में एकता का स्वर है हमारी हिंदी। इसका सम्मान करना हम सब देशवासियों का कर्तव्य है। दुनिया भर में हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है लेकिन भारत देश की मातृभाषा हिंदी दिवस 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में मनाते है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सारे देश को एक सूत्र में बांध ाती हैं आज भी कई जगह इसका विरोध हो रहा है। आज भी हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा है।हिंदी के प्रति लोगों के नजरिए को बदलने के लिए जन जागरूकता अभियान को बढ़ावा देना होगा। जन-जन तक हिंदी को पहुंचाने के लिए प्रचार करने की कोशिश तेज करनी होगी। हिंदी के प्रयोग को हर जगह बढ़ावा देना होगा। हिंदुस्तान से बाहर रहने वाले और भारतीय लोग हिंदी के सम्मान में बहुत तरह का आयोजन करते हैं ।एक दिन के आयोजन और सम्मान से क्या हिंदी की दशा सुधर जाएगी?

नहीं..

हमें हिंदी भाषा को बढ़ावा देना होगा । कुछ लोग अंग्रेजी में लिखकर उसे हिंदी बोल देते हैं सरकारी कर्मचारी भी हिंदी की जगह अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते हैं ।हर कार्यालय में ज्यादातर अंग्रेजी में ही काम होता है।अंग्रेजी भाषा का उपयोग ही हर जगह होता है। अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कार्यालय में हर जगह है। हिंदी दिवस मनाने से क्या होगा कुछ नहीं जब तक हम पुरी तरह इसे उपेक्षा से बाहर न निकाल लें। हिंदी दिवस मनाने के साथ यह प्रण लेना होगा सभी को ज्यादा जागरूक करना होगा ज्यादा से ज्यादा काम हम हिंदी में करें तभी इसे बढ़ावा मिलेगा। हिंदी में अपनत्व की भावना को बढ़ाना होगा, हिंदी दिवस के रूप में एक दिन मनाने से हिंदी जो अभी भी उपेक्षित का शिकार है कई जगह विरोध होता आया है धीरे-धीरे शायद सम्मान अपनत्व पूरी तरह मिल जाए।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार इस के सम्मान में हिंदी दिवस के अवसर पर हम सभी ये प्रण लें ज्यादा से ज्यादा काम हम हिंदी में करें।हिंदी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए विदेशों से लोग हमारे देश का रूख कर रहे हैं और अपने ही देश में हिंदी उपेक्षा का शिकार है।हिंदी का सम्मान और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हम सब हिंदी दिवस पर इसबार ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरूक करें।

हिंदी को उपेक्षा से बचाएं चलो एक आंदोलन चलायें,

हिंदी जो एक सूत्र से बांधती है हमें उस सूत्र को मजबूत बनाएं।

नयी सोच नया बदलाव लाएं
हर जगह अब हिंदी ही अपनायें
हिंदी हमारी शान है
हमको इसपर अभिमान है
तिरंगा अगर शान है तो
हिंदी हमारा अभिमान है
हिंदी को उपेक्षा से बचाए
आओ सब मिलकर कसम खाएं
एक सुत्र से सबको बांधती हिंदी
हमें जन जन तक पहुंचाती हिंदी
भारत की मातृभाषा है हिंदी
लोगों के दिल तक पहुंचने का रास्ता है हिंदी

निक्की शर्मा 'रश्मि'
मुम्बई

एक गजल

शबे गम नहीं आसमां देखता हूँ।
है कोई जिसे खामखां देखता हूँ।

हजारों हसीं हैं जमाने में फिर भी,
मैं शिद्दत से तुमको ही जां देखता हूँ।

नजर में बसे हो बसे ही रहोगे,
निगाहों से क्या नागहां देखता हूं।

तेरे शहर में खूबसूरत सड़क है,
मगर थोड़ी मैं रायगां देखता हूं।

मिली थी गुलों सा तब्बसुम लिए वो,
अब उजड़ा हुआ बागबां देखता हूँ।

बड़े छोटे पर्दों पे बस आजकल तो,
सियालों के झूठे बयां देखता हूँ।

महल ही महल थे 'शजर' आज उनके,
मैं तन्हा खड़े ये मकां देखता हूँ।

विनोद सिंह नामदेव
शजर शिवपुरी
इन्दौर मध्यप्रदेश

गजल

आप का नजरें झुकाना आज हमको याद है।
चंद पल का मुस्कुराना आज हमको याद है ।।

देख कर भी कुछ न कहना देखते रहना सदा।
बिन कहे सब कुछ जतानाआज हमको याद है ।।

धूप में छत पर टहलना देखना घर को मेरे।
बेवजह खिड़की पे आना आज हमको याद है ।।

खत बनाकर भेजने की कोशिशें बेकार थी।
दूर से खत को दिखाना आज हमको याद है ।।

राह जाते देख कर के दूर जाते थे कभी।
पास आने का बहाना आज हमको याद है ।।

रात में करवट बदलना नींद का आना नही।
भोर में सपने सजाना आज हमको याद है।।

बात सुन अमिताभ मेरी और कुछ कहना नहीं ।
याद में आंसू बहाना आज हमको याद है ।।

अमिताभ पाण्डेय
बुद्ध विहार पार्ट सी कालोनी
तारामंडल रोड गोरखपुर (उ.प्र.)

गजल

किसे खबर थी किसे पता था
जिधर नहीं था वहीं खुदा था

कोई परस्तिश की राह पर भी
नए गुनाहों में मुब्तला था

जले थे दीपक नगर में लेकिन
मेरा ही दिल क्यों बुझा बुझा था

सभी ने क्यों मय से तौबा कर ली
तुम्हारी नजरों में क्या नशा था

मैं उसके जाने के बाद समझा
वो बेवफा था कि बावफा था

बलजीत सिंह बेनाम
हिसार

गजल

पास बैठो कभी चंद पल के लिए।
बात करनी बहुत अपने कल के लिए।।

एक उनवान बन के मेरी जिन्दगी।
हर्फ-दर-हर्फ बैठो गजल के लिए।।

गर न सँभले तो एक दिन तरस जाओगे।
जैसे पपिहा तरसता सुजल के लिए।।

जिन्दगी को न इतना भी उलझाइए।
बस भटकते ही रह जायें हल के लिए।

मत उड़ें आप इतना की फिर एक दिन।
मन का पंक्षी विकल हो अचल के लिए।।

मढ़ दिए सब गरीबों पे इल्जाम जो।
क्या बचेगा तुम्हारे महल के लिए।।

शैल के भाव कोमल सहज ही रहे।
उम्र भर ये समर्पित गजल के लिए।।

कुमार शैल

कितनी अभागिन होती हैं प्रेमिकाएं--

जानते हो? कौन होती हैं ?
वो अभागिन प्रेमिकाएं,
जिन्हें मिल नहीं पाता ।
साथ जीवन भर ,
अपने प्रेमी का ।

इन प्रेमिकाओं का ,
कोई नाम नहीं होता है।
कोई चेहरा भी नहीं होता है,
अनामिका होती हैं प्रेमिकाएं ।

जानते हो?
इनके वो प्रिय प्रेमी,
पुकार नहीं सकते जोर से।
अपनी प्रेमिकाओं के नाम,
सार्वजनिक स्थानों पर ।
उन्हें अनदेखा कर देते हैं ,
दुनिया की इस भीड़ में।

बेचारी प्रेमिकाएं,
अपने प्रेमी के एकांत की साथी होती हैं ,
जहां उनके प्रिय प्रेमी फुसफुसाते हैं ।
उनका नाम,और कहते हैं,
उनके चेहरे को चाँद - चंद्रमुखी।

जानते हो?
इनके वो प्रिय प्रेमी, जब माँ की मृत्यु से टूटते हैं।
बहन की विदाई से अकेले होते हैं ,
पत्नी की जिल्लत से जब परेशान होते हैं।
आकर अपनी प्रेमिकाओं की बाहों में ही पनाह पाते हैं...।

इनके वो प्रिय प्रेमी ,
अपने दुखों का अस्थि -कलश ,
प्रेम की गंगा में विसर्जित कर देना चाहते हैं,
पता ही नही चलता कब वो प्रेमी,
एकायक शिशु -सा बन जाता है।
प्रेमिका इस शिशु को मन में धारण करती है,
छिपा लेती है अपने आँचल में ।

प्रेम का ये सबसे पवित्र क्षण होता है,
ये पवित्र क्षण केवल एकांत में ही संभव हो पाता है।

अपने मौज में वो प्रेमी,
उस प्रेमिका को कभी फूल कहता है।
कभी खुशबू पुकारता है,
कभी जानू कभी जानेमन कहकर चिढाता है।
कभी कहता है काश तुम पहले मिली होती तो,
तुमसे ही शादी करता।
जवानी में मिलती तो हम साथ फिल्म देखने चलते,
अब तो कोई न कोई टकरा जाएगा थिएटर में।
यूँ सबके सामने तमाशा बनाना ठीक नहीं,
प्रेमिका अनसुना करती है।
प्रेम को तमाशा पुकारना ,उसे अच्छा नहीं लगता...।

जब पूछती है वो अपने प्रेमी से ,
चाय तो पियोगे न ।
खूब अदरक डाल के बनाती है चाय ,
देर तक खौलती-उबालती है।
वो जानती है पसंद है उसके प्रेमी को मीठी चाय,
एक चम्मच चीनी ज़्यादा डाल देती है।
पर अभागिनी पूछ भी नहीं पाती ,
की कैसी बनी थी चाय ।
बस अपने प्रेमी के जूठे चाय के कप को ,
स्पर्श कर लेती है अपने होठों से.।

जानते हो?
वो प्रेमिका अपने प्रेमी के सुख की सबसे ,
आखिरी हिस्सेदार होती है ।
और उसके दुःख की पहली साथी बनती है,
प्रमोशन मिलने पर वो प्रेमी।
सबसे पहले पत्नी को फोन करता है,
ओर चौक बाउंस हो जाने पर प्रेमिका को।

बिचारी प्रेमिका पूछती है ,
बताओ कितने पैसों की जरूरत है ।
कहो तो कुछ इंतजाम करूँ ,
प्रेमी पैसे को इनकार करता है ।
कहता है नहीं, मैं तो बस बता रहा ,

तुमसे पैसे कैसे ले सकता हूँ ।
प्रेमिका को जाने क्यूं खयाल आता ,
पैसे प्रेम से अधिक कीमती है ।
वो कहना चाहती है की ,
सुनो...।
प्रेम दे दिया फिर पैसे क्या चीज है ,
लेकिन कहते-कहते रुक जाती ।
ये फिल्मी डायलाग सा सुनाई देता ,
इस उम्र में ये चोंचलेबाजी अच्छी नहीं लगती।

जब कभी वो प्रेमिका ,
अचानक से महल में टकराती है अपने प्रेमी से।
वो देखती है अपने प्रेमी को ,
अनदेखा करने की कोशिश करती।
लेकिन पहचान लेती है उसे प्रेमी की पत्नी,
जो प्रेमिका को अपने पति की सहकर्मी के रूप में जानती है।

जब पूछती है उसके प्रेमी की पत्नी,
प्रेमिका का हाल ।
कितने दिन बाद मिली आप ,
कैसी हैं क्या कर रही हैं आजकल?
बेचारी प्रेमिका,
बिल्कुल नजरअंदाज करती है प्रेमी को।
और बड़े प्रेम से बातें करती है अपने प्रेमी के पत्नी से,
फिर जल्दी का बहाना बना निकल जाती है बाहर ।

अब जब रात को प्रेमिका फोन करती है ,
प्रेमी बताता है पत्नी पूछ रही थी ।
सुंदर लग रही थी वो लड़की,
प्रेमिका को छेड़ते हुए कहता है।
मेरे प्रेम ने तुम्हें खूबसूरत बना दिया,
बिचारी प्रेमिका फिर भी नहीं बताती की।
कल लौटते हुए अपने आंसूओ पर काबू पाया,
बडी मुश्किल से और कहती है ...सुनो।

कल खरीदी थी ,
तुम्हारे फेवरेट कलर की टी शर्ट।
कल मिलकर ले जाना,
आता है प्रेमी ले जाने टी शर्ट ।

और...
निकलते-निकलते प्रेमिका से कहता है,
सुनो घर जा रहा हूँ ।
अब मैसेज मत करना ,
फोन बच्चों के हाथ में होता है अक्सर।

पिछले दिनों को याद कर वो प्रेमिका ,
रुआसी - सी हो जाती है।
जाते हुए प्रेमिका का माथा चूमने की आदत थी प्रेमी को,
अब जब प्रेमिका को नहीं मिलता वो स्नेह।
बस अब अपने आंसूओं को आंखों में छुपाये,
एक हंसीं मुस्कान के साथ विदा करती है प्रेमी को
कार में बैठते ही प्रेमी को भेजती है एक कोमल संदेश,
फिर कोई जवाब न पाकर सोचती है।
सच मे !
कितनी अभागिन होती हैं प्रेमिकाएं।

रीमा मिश्रा 'नव्या'
आसनसोल(पश्चिम बंगाल)

अकिंचन

रोज निकल पड़ता हूँ
अपने पथ पर
लेकर मन की
स्वप्निल अभिलाषाओं को
लेकिन इस तमोमय भवनिधि में
किसे नजर आएगी
मेरे मन की
खामोश वेदना
असह्य पीडा
और करूण चीत्कार

जानता हूँ
तुम दाता हो
और मैं अकिंचन
शायद याचकता ही
मेरी धरोहर है
इसलिए गुजार लेता हूँ
किसी के सहारे
दुखी और व्यथित
अधूरे जीवन को

हे विधाता !
क्या तुम भी हो गए हो
रुष्ट मुझसे
नहीं है डर ?
इस बात का भी
कि कैसे गुजरेगी
ये जिन्दगी
लेकिन इसी आस पर तो
दुनिया कायम है
कि चोंच दी है
तो चुग्गा भी मिलेगा ही ।

नवीन गौतम
नयागाँव
कोटा (राजस्थान)

साध्य की साधना

साधना हो साध्य की बस ,
एक ही आराध्य की बस ।
कर्म में हो सत्वता ही ,
धर्म में हो तत्त्वता ही ।।

मन वचन से हो न हिंसा ,
कर्म में भी हो अहिंसा ।
पाठ है यह सत्यता का ,
है बदी की कृत्यता का ।।

इन सभी के मूल में बस ,
नेक संगत तूल है बस ।
सज्जनों के संग रहकर ,
बन्दगी में कष्ट सहकर ।।

पूज्य होंगे कर्म सारे ,
आपको ही जग निहारे ।
यूँ बनोगे आप चन्दन ,
सब करेंगे रोज वन्दन ।।

स्वप्न सारे पूर्ण हों अब ,
शूल सारे चूर्ण हों अब ।
सुप्त होना कहकशा है ,
जागरण उत्तम दशा है ।।

कर्म में हो नेह सिंचन ,
अब न कोई हो अकिंचन ।
शील हो सद्गुण विनय हो ।
प्रीत की ही बस विजय हो ।।

नवीन गौतम
नयागाँव
कोटा (राजस्थान)

जीवन की उलझनें

धागे चाहे ऊन के हों या रेशम के अथवा फिर कोई और, सब उलझ जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य भी अपने जीवन में किसी न किसी उलझन में उलझा रहता है। धागों की भाँति वह उन्हें भी सुलझाने में लगा रहता है। एक सीमा तक उन्हें सुलझा भी लेता है, फिर कुछ समय पश्चात उसे कोई अन्य उलझन घेर लेती है। यह मनुष्य जीवन की त्रासदी है कि उसे सुख और शान्ति थोड़े ही समय के लिए मिल पाती है। कोई न कोई परेशानी मुँह बाये उसके सामने खड़ी ही रहती है।

मनुष्य जितना अपनी उलझनों को सुलझाने में व्यस्त रहता है, उतना ही वह मानसिक तौर पर अस्वस्थ रहता है। उसे मानसिक सुख-चौन तभी मिल सकता है, जब अपने जीवन की समस्याओं से दो-चार न हो ले। जब तक उसकी उलझनें या परेशानियाँ उसकी रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा बनी रहती हैं, तब तक वह बेचौन रहता है। उनसे दूर भागने का हरसम्भव प्रयास भी करता है। पर ये हैं कि मुँह चिढ़ाती हुई, मनुष्य को लाचार बनाकर दम लेती हैं।

मनुष्य अपनी इन सभी मुसीबतों से छुटकारा तभी पा सकता है, जब वह अपने परिवार के साथ मिल-बैठकर, उनके साथ सब साझा करें। अपने पास रहने वाले सज्जनों से परामर्श ले और ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रखे। उसके इधर-उधर भटकने यानी तथाकथित गुरुओं के पास जाने, तन्त्र-मन्त्र का सहारा लेने या तीर्थों एवं जंगलों में वह भटकते रहने से तो उसे कोई भी लाभ नहीं होने वाला। ये सब उसका परिश्रम से कमाया हुआ धन व समय नष्ट करने वाले हैं।

अपने घर में बैठकर, शान्त मन से विचार करे या ध्यान करे, तो अवश्य ही उसे कोई न कोई समाधान मिल जाता है। धागों को सुलझाने के लिए भी सहनशीलता की आवश्यकता होती है। अफरा-तफरी करने से वे कोमल धागे टूट जाते हैं। यदि मनुष्य अपने झूठे अहं के कारण शान्ति नहीं बनाए रख सकता, तो उसका कुछ भी नहीं हो सकता। फिर यदि वह अनावश्यक ही परेशान रहता है तो रहे। यह तो उसका स्वभाव ही कहा जाएगा।

मनुष्य का जीवन सदा ही उलझनों से घिरा रहता है। बड़ी कठिनाई से एक उलझन सुलझती है, तो दूसरी मुस्कुराते हुए मुँह चिढ़ाने लगती है यानी सामने आकर खड़ी हो जाती है। फिर उसे सुलझाने के लिए मनुष्य को अथक परिश्रम करना पड़ता है। उसे दिन-रात एक करके उपाय खोजना पड़ता हैं। तब जाकर कहीं उसे चौन की साँस आती है। इस प्रकार परेशानियों की आँख-मिचौली का यह खेल अनवरत चलता रहता है।

दुख-परेशानियाँ या उलझने मनुष्य के पास अपने कर्मों के अनुसार आती रहती हैं। पूर्व जन्मों में यदि अच्छे कर्म अधिक किए हैं, तो उलझनें कम सताती हैं। परन्तु यदि पूर्वजन्मों में अपेक्षाकृत अधिक दुष्कर्म अधिक किए हैं, तो ये अधिक दुख देती हैं। इन उलझनों के मकड़जाल में मनुष्य तभी उलझकर जकड़ जाता है, जब वह पूर्व जन्मों में सद्कर्म करने में कंजूसी करता है और अपनी इच्छा से दुष्कर्म हँस-हँसकर करता है।

पता नहीं किस जन्म में मनुष्य दुखों और परेशानियों के बीज बोता है और किस जन्म में आकर उस पेड़ के कड़वे फल काटकर खाता है। ईश्वर का न्याय तो सबके लिए एकसमान है। उसकी अदालत में किसी के साथ भी पक्षपात नहीं होता। और न ही वहाँ किसी प्रकार की कोई रिश्वत ही चलती है। अपनी उलझनों से मनुष्य को तभी मुक्ति मिल पाती है, जब कोई मनुष्य इन दुखों और परेशानियों की भट्टी से तपकर निकलता है।

मनुष्य को सदा अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिए। उसे देश, धर्म, समाज और परिवार के विपरीत जाकर कोई भी कर्म नहीं करने चाहिए। उसे अपने धर्म यानी अपने कर्त्तव्यों का पालन ईमानदारी और सच्चाई से करना चाहिए। ताकि इस जीवन में और आने वाले जीवन में उसे कभी कड़वे फलों का स्वाद न चखना पड़े। और न ही उसे अपने जीवन में असफलता का कभी मुँह देखना पड़े। उसे अतीत के कटु अनुभवों को स्मरण करके व्यथित न होना पड़े।

यह सब तभी सम्भव हो सकता है, जब मनुष्य जागरूक बन जाए और अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने से बचे। उसके द्वारा बरती गई थोड़ी-सी सावधानी उसे इन सभी उलझनों और परेशानियों से निश्चित ही बच सकती है। सबसे बड़ा मन्त्र यही है कि मनुष्य को अपने कर्मों की शुचिता पर ध्यान देना चाहिए। जाने-अनजाने में भी अपने से कोई ऐसा कार्य न होने पाए, जो किसी का अहित कर दे।

अब यह मनुष्य विशेष पर निर्भर करता है कि उसे क्या रुचिकर है? वह उलझनों के उधेड़ बुन में फँसा रहना चाहता है या इनसे मुक्ति प्राप्त करके अपने जीवन में सुख-शान्ति की कामना करता है। उसे अपने रास्ते का चयन स्वयं ही करना है। कोई अन्य उसे सन्मार्ग सुझा तो सकता है, परन्तु जबर्दस्ती चला नहीं सकता। इसलिए मनुष्य को स्वयं ही सही मार्ग को चुनकर उस पर चलना है, ताकि उसके जीवन में उलझने कम से कम आ सकें।

चन्द्र प्रभा सूद

एक व्यंग्य

''जीव्हा, नैना, कर्ण चाहते हैं तखलिया''

ऊई मां... मम्मी टीवी बंद कर दो ना। जो कीचड़ के तीर जो आ रहे हैं। काहे अपना बीपी बढ़ा रहे हो।

नंनदिया जी की बेटी ने अपने मां पिलपिलीबाई से कहती है....

कितना हल्ला है टीवी पर हर चैनलों पर ।लोग चिल्ला रहे हैं । हर कोई अपनी रोटी सेक रहा है।

नंनदिया जी की बेटी बोली...''पूछता है भारत इतना चिल. लाने की जरूरत क्या है ?'' फिर जोर जोर से हंसने लगी ....कोई ट्विटर पर मैसेज कर रहा है ।यहां हर चैनल चिल्ला रहा है कितना हल्ला है हर पक्ष में ।

''फंस और थक चुका है आम आदमी''। जिसको अंदरूनी किसी भी बात की खबर नहीं ।जो सामने आ रहा है सुन लेता है ।देख लेता है। बस बोल नहीं पाता। जुबां पर ताला लगा है।''बोलेगा तो फंसेगा।

टीवी देखते देखते पिपलिबाई का बीपी हाई होता जा रहा था गया। नंनदिया जी भी समझा रहे थे बंद कर दे टीवी।सामने वो प्रश्न दाग रहा था।

पहले क्यों नहीं किया? क्यों हुआ? कैसे हुआ? ऐसा क्यों नहीं हुआ? वैसा क्यों नहीं हुआ ?अभी मानसून तो आया नहीं था छींटाकशी शुरू हो चुकी थी ।यह ऐसा मानसून है जिसके बादल काले घनियारे, मौज में, मस्ती में ,कहीं भी ,जहां दिल करे ,छीटों से, अपनी बूंदों से समाज का रोम-रोम तर कर देते हैं। फिर इस कीचड़ में गोते लगाता रहता है आम वोटर।

यह अक्सर नाश्ते के वक्त ,दिन के खाने के वक्त, रात के खाने के वक्त नमक मिर्च बढ़ाते हैं। जिससे खाने वाले को चटपटे स्वाद का एहसास होता है।

दूसरी तरफ से बरसता है तारीफों का मानसून । जिसकी तीव्रता इतनी तेज होती है तारीफों की बाढ़ आ जाती है जिसमें बांध बनाने का हक किसी भी अधिकारी को नहीं होता। अब बाढ़ आई है आपदा है। उसे समेटना, संभालना भी कठिन होता है इसमें फंसती है पब्लिक। अब तक काफी उबरना सीख चुकी जनता फिर से गोते लगाती है बाढ़ में।

जिव्हा ,नैना और कर्ण इन तीनों की स्थिति हालातेनजर बहुत खराब हो चुकी है। एक दूसरे पर तानाकशी का मुजरा देखते देखते।

कर्ण सुनने की क्षमता खोने लगते हैं ।

नैना पत्थरा जाते हैं , अपने भाव खो चुके होते हैं। ना उन्हें खुशी का एहसास होता है ना गम का । शरीर की धमनियों के मरुस्थल में दूर-दूर तक मीलों तक फैला होता है सन्नाटा।

फिर मंच पर गीत बनकर उभरने की उत्सुकता होती है भावनाओं की, जज्बातों की जिन्हें मौका नहीं मिलता।

जिव्हा कुछ कह नहीं पाती। कुछ कहेगी ,तो पकड़ने वाले बहुत हैं। कुछ मुजरा देखने आते हैं। कुछ समाज में लुढ़कते बैगन की भूमिका व दो मुंहें सांप की भूमिका निभाते हैं। कुछ अपनी बात रखने में सक्षम नहीं है।सबको अपनी कुर्सी का डर है।

जो सम्मानित है, वह छोटी बात करके यानी सामाजिक कुरीतियों ,राजनीतियों के मानसून पर कुछ भी कहना नहीं चाहते ।उनका मानना है जो कुर्सी पर बैठ गया उसको यह ''लक्ष्मण रेखा'' पार नहीं करनी चाहिए। ऐसे प्रश्न उठाने से वह छोटे हो सकते हैं। सबकी नजर में गिर सकते हैं। और हम साफ-सुथरे हैं ऐसे कीचड़ में भीगकर फिसलना क्यों।

हालात तो यह पैदा हो चुके हैं कि जिव्हा, नैना, कर्ण सब चाहते हैं ....तखलिया... तखलिया... तखलिया...

बस एक प्रश्न उठता है अगर नामी लोग प्रश्न नहीं उठाएंगे तो आम जनता की सुनेगा कौन?

सौम्या दुआ
हल्द्वानी नैनीताल

दो टूक कहो

मुँह पर ताला क्या मजबूरी,
खुलकर बोलो यार मुंगेरी।
जोड़ घटा का वक्त नहीं है,
सही गलत का भेद जरूरी।

सच को सच कहने का जज्बा,
और झूठ को झूठ कहो।
किससे डरना क्योंकर डरना,
सही बात दो टूक कहो।

मौन स्वीकृति और समर्थन,
दिखला रहा प्रेम प्रदर्शन।
चेहरे की धुँधली रेखाएँ,
दिखला देगा उजला दर्पण।

आँख के आंसू सूख न जायें,
शिथिल न हों कोमल स्पंदन।
निहित स्वार्थ की कारा तोड़ो,
झूठमूठ के सारे बंधन।

कलमकार का फर्ज यही है,
सच को केवल सच बतलायें।
गहन तिमिर का मंथन करके,
झूठ का बादल दूर भगायें।।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

लॉक डाउन का सबक

धरती से अम्बर तक देखो,
विहँस रहीं है दसों दिशाएँ।
नदियों में कल-कल निर्मल जल,
पर्यावरण की खुली शिराएँ।
दमक उठे हिम शिखर दूर से,
नील गगन और झिलमिल तारें।
वन प्रान्तर में घूमें जीव सभी,
हो निर्भय स्वच्छंद उन्मुक्त नजारे।
रवि - शशि की छवि मनोहर,
लौटे वायु में पुनः प्राण।
लॉक डाउन ने बाजी पलटी,
प्रदूषित गैसें मन्द - म्लान।
ओजोन परत हुई दुरुस्त,
धूल-धुआँ फलक से गायब,
प्रगति चक्र हुआ बाधित विराम।
पिंजरे में बन्द रहा मानव,
ढूंढे मुक्ति के सकल धाम।
त्राहि -त्राहि महा तबाही,
मौत के घातक मंजर हैं।
कोई बचाये राह दिखाये,
सोचें सभी धुरन्धर हैं।
साहचर्य भाव जगा मन में,
तू नहीं जायेगा कभी ठगा।
प्रकृति पदार्थ जीव जगत संग,
बाँट प्रेम और खुशियाँ पा।।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

मुझे तुम जरूरी हो.....,

मुझे तुम बहुत जरूरी हो
उस हर जगह
जहां मैं होती हूं
फिर चाहे भीड़ हो,
या बिल्कुल सन्नाटा
मेरे गुपचुप लफ्जों को ,
तुम्हारे होने का ,
तुम में रचने बसने का हक जरूरी हैं
हां.....,
मुझे तुम बहुत जरूरी हो
शायद इतनी कि .....
मैं .....,खुद को खो देती हूं
तुम्हारे स्तंभ परछाइयों में
जो तर हो चुकी हैं
मेरे भीतर
हां....., मैं रंग चुकी हूं
तुम्हारे स्याह में ,
श्याम की तरह
जहां बस और बस
तुम चमकते हो ....
उस ब्रह्मांड की तरह
जो खोज हैं.....,
जन्मों से....
हां .....,मैं जान चुकी हूं
कि ना तुम्हारे पहले था ,कोई
और ना तुम्हारे बाद कुछ होगा
पूर्ण विराम हो ,
मेरी विजय आत्मा की
सभी दर्शन मैं ....,
तुम में पाती हूं
जर्रे से लेकर खुदा तक
जब तुम्हारी सोच में होती हूं
तो मुझे अपने होने का भी ,
एहसास नहीं होता
इतना तुम्हें जीती हूं
कि मैं .....,
तुम जैसी लगने लगी हूं
मुझे तुम्हारी खुद से ज्यादा
जरूरत हैं.....
हां .....,
मुझे तुम, बेहद जरूरी हो...!!

नज़्म......

वो मकां बनाकर ,..भूल गए
इसे घर भी तो ,.....बनाना था

रिश्ते हुए ...,......पैदा मगर
पानी को... खूं.... बनाना था

सज गया कोना -कोना, तो क्या
खुद को थोड़ा... ..महकाना था

खंडहर हो जाती हैं,... बेशक कब्रे
किसी से, ...तो ..दिल लगाना था

कौन किसको कब ,याद करता हैं
बेफिक्र एक ..आशियां बसाना था

थोड़े करते वादे ,खाते थोड़ी कसमें
किसी को ,किसी को... तो ....,अपनाना था

ज्योति विश्वकर्मा
सागर (मध्य प्रदेश)

फूँक दी फुलवारियाँ

डाल कोरोना कसाई , फूस में चिंगारियाँ,
चीन के सौदागरों ने , फूँक दी फुलवारियाँ।

विश्व सहमा सा अचानक , मौन है आलोचना,
मूँदकर आँखें सियासी , सो गई संवेदना।
लाकडाउन में फँसी है ,अर्थ की मादक बहारें,
भूख पर पड़ती दया के , बर्फ की ठंडी फुहारें।

काँपती अनजान भय से , ट्रंप की लाचारियाँ।
चीन के सौदागरों ने , फूँक दी फुलवारियाँ।

फ्रांस भी कुंठित हुआ अब ,कष्ट में जापान है,
हाथ में काला कटोरा , द्वार पाकिस्तान है।
:स मुरझाने लगा है ,और यूके रो रहा,
बेच नकली किट्स ड्रैगन , डालरों पर सो रहा।

ढाँक ली है नाक अपनी ,पाक की दुश्वारियाँ।
चीन के सौदागरों ने ,फूँक दी फुलवारियाँ।

व्यस्त हैं इतने सितारे , रात भी सोती नहीं,
चाँदनी से चाँद की भी , बात अब होती नहीं।
मारकर पत्थर जमाती ,पा रहे बिरियानियाँ,
हाथ जोड़े ढूँढती , सरकार की नादानियाँ।

मरकजों ने थाम ली है , हाथ अपने आरियाँ।
चीन के सौदागरों ने फूंक दी फुलवारियाँ।

रौंद डाले वे भले ही ,डालियों को पाँव से,
मुस्कुराई कोपलें गहरी , जड़ों के गाँव से।
गा बसंती राग भँवरे , वेदना के साज पर,
खिल उठेगी यह कली , फिर गुनगुनी आवाज पर।

नौ महीने बाद गूँजेंगी , नई किलकारियाँ।
चीन के सौदागरों ने , फूँक दी फुलवारियाँ।।

मोहन द्विवेदी

मेरे सपनों का भारत...

मेरे सपनों का भारत सुंदर और सलोना हो,
उत्तर से दक्षिण तक महकता हर कोना हो।
सभी के आँगन में उन्नति की सुनाई दे गूँज,
देश में न कोई निर्धन, न किसी का रोना हो।।

जातीयता मजहब का न अनर्गल प्रलाप हो,
हर बच्चे को श्रेष्ठ शिक्षा पाने का हिसाब हो।
बेटा बेटी में न कहीं कोई भी न ही विभेद करे,
विषता कटुता का दिलों में न बहता श्राप हो।।

पढ़े लिखे नवयुवकों को कहीं रोजगार मिले,
प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर सदा मुस्कान खिले।
किसी के अस्मिता स्वाभिमान पे न आए आँच,
ऊँच नीच, अगड़े पिछड़े के न हो शिकवे गिले।।

बहन बेटियों के लिए सबके मन में सम्मान हो,
पुरुष प्रधानता के विचारों का न कहीं मान हो।
पीड़ितों मुजलिमों को सर्व सुलभ न्याय मिले,
बहु बेटियों को जो भी छेड़े, सरे कत्लेआम हो।।

प्रतिभाओं का हर जगह मिले खूब ही मान हो,
भ्रष्टाचार का मेरे देश से मिटता नामोनिशान हो।
अमीरी गरीबी को सम करने की सही नीति बने,
देश के प्रति सब दिलों में जगता स्वाभिमान हो।।

शोषण के खिलाफ मुखरित सब की आवाज हो,
नई क्रांति नव निर्माण का हर जगह आगाज हो।
हमारे देश में शासन सत्ता हो जनता के हाथ में,
प्रगति का मेरे देश में बजता संगीत का साज हो।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
ग्राम-कैतहा,पोस्ट-भवानीपुर
जिला-बस्ती, उत्तर प्रदेश,

भूख

सकीना चलती चली जा रही थी कितने रास्ते कट गये इसका भान ही नहीं रहा,जब एक पत्थर से ठोकर लगी और अंगूठा लहूलुहान हो गया तब रुकना ही पडा। थोड़ी देर वहीं बैठकर अंगूठे को सहलाया तब एहसास हुआ कि वह जीवित है । न जाने किस घ ड़ी में उसकी शादी खुर्शीद के साथ हुई थी । तबसे एक पल का भी चौन नहीं था उसके जीवन में। पेशे से दर्जी और दो बच्चों का बाप था खुर्शीद। गरीबी जो न कराए वह कम है। खुर्शीद की बड़ी बेटी नगीना उसी के उम्र की थी। खुर्शीद की पहली बीबी मर चुकी थी इसलिए सकीना के चाचा-चाची ने उसकी शादी खुर्शीद से करा दी। खुर्शीद के पास पढ़ाई-लिखाई की कोई दौलत नहीं थी पर, दर्जी के पेशे में वह माहिर था। कपड़े बहुत बढ़ियां सिलता था। और,उसी से किसी तरह खुद को और परिवार को सम्भाल रहा था। लेकिन अल्लाह से क्या कहे जिन्होंने उसपर यह गाज गिरायी थी। खुर्शीद जब बेटी नगीना का रोका करके आया तो नजाने कैसे कोरोना वायरस की चपेट में आ गया।जब बुखार बहुत तेज हो गया तो सकीना उसे डह्क्टर के पास ले गई पर खुर्शीद बच नहीं पाया।इधर B.m.c. वालों ने उसे, नगीना को और खुर्शीद के बेटे को घर में ही कैद कर दिया।एक रात सकीना की आँखों के सामने खुर्शीद के बेटे आफताब ने दम तोड़ दिया। B.m.c. वाले आफताब को ले गये। सकीना समझ गई कि अगर वह इस घर में रही तो वह भी इस बीमारी से मर जायगी, महज पच्चीस साल की उम्र में वह मर जायेगी। वह अजीब कशमकश में थी। नगीना के लिए वह क्या करे। दूसरे दिन B.m.c. वाले उन दोनों को अस्पताल ले गये जाँच करने के लिए। नगीना को कोरोना वायरस ने जकड़ लिया था लेकिन जब उसकी जाँच की गई तो वह निगेटिव निकली डॉक्टर ने उसे घर में ही चौदह दिन रहने के लिए कहा। कुछ दिनों बाद अस्पताल से खबर आई कि नगीना भी नहीं रहीअब वह घर में किसके भरोसे रहती। मुहल्ले वालों ने उसके घर को भुतहा घर घ ोषित कर दिया था।

वह घर से निकल गई, तबसे वह चल ही रही थी।इस अंगूठे की चोट ने उसे भूख का एहसास कराया सामने अस्पताल दे खकर वह वहां अपना खून बेचने चल दी। उन्हीं पैसों से भूख मिटाने की सोंच रही थी।खून बनेगा तब तो बेच पायेगी।और इस भू ख को मिटाने का यही जरिया उसके पास था।सब खत्म हो गया था,सिवाय इस भूख के।

मृदुला मिश्रा
मुम्बई

लालकिला और खाई

भारतवर्ष में वर्षभर जितने पर्यटक आते हैं, वे जिन पर्यटन प्रसिद्ध नगर, प्रांतरों में भ्रमण करते हैं, वहाँ किले जरूर होते हैं। भारत एक किला प्रधान देश है। किले बहुत आकर्षित करते हैं। बरसों बरस से मुस्तैदी से खड़े हैं। उनकी विशालाता, दृढ़ता और इतिहास उनके पार्श्र्व में उनकी 'यशोगाथा' कहते हैं।

कभी अपने सोचा कि आजादी के बाद के हमारे नेता और किलों में कुछ समानताएँ होती है। उनकी विराटता कई बार किलों से भी अधिक विशाल होती है। वे दृढ़ता के प्रतीक होते हैं, जो भी देश के नाम पर वे अपने लिए करते हैं, उसमें अडिग रहते हैं, बहुधा देश की अर्थव्यवस्था ऋणात्मक होती है किंतु इनकी उत्तरोत्तर धनात्मक। उनकी बुर्जियों पर उनकी विजयपताका फहराती रहती है जैसे किलों पर ध्वज। दिल्ली गए होंगे तो आपने लालकिला देखा होगा। भारत की शान दिल्ली और दिल्ली की पहचान लालकिला। दूर से देखने पर लालकिला को अपनी बाँहों में घेरे एक खाई आपको नजर नहीं आती है। ऐसी ' खूबसूरत' खाई प्रायः हमारे हर बड़े नेता के साथ होती है। दरअसल जितनी बड़ी और गहरी खाई होती है, उतना ही बड़ा हमारा नेता होता है। दूर से वह आपको जमीन की सतह से जुड़ा दिखता है पर जैसे जैसे आप उसके करीब जाते हैं, आप पाते हैं कि वह अभी भी दूर है और आप कब खाई में गिर जाते हैं, आपको पता भी नहीं चलता। कृपया किला देखने से पूर्व उसकी 'खाई' के विषय में अवश्य सावधान रहें।

हरीश नवल
साक्षरा अपार्टमेंटस
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

चंचल

चंचल अपने मम्मी पापा की प्यारी सी, न्यारी सी, इकलौती बेटी थी। उसके पापा बैंक मैं नौकरी करते थे, उनका घर दिन भर चंचल की किलकारियों से गूंजत रहता था। वह चंचल हर खुशी का ध्यान रखते थे, उसके पापा बैंक से आने के बाद जी भरकर चंचल के साथ खेलते थे, और कोशिश करते थे अपना ज्यादा से ज्यादा समय चंचल के साथ बिता सकें। जब चंचल स्कूल जाने लायक हो गई उसे स्कूल में दाखिल करा दिया गया।

ये क्या? चंचल को स्कूल में दाखिल करवाने के बाद से उसका स्वभाव बदलने लगा। अब वो पहले की तरह चहकती नहीं थी, ना ही घर में आने जाने वाले लोगों से कोई बात करती थी। घर से बाहर भी उसे अपने मम्मी पापा के सिवा और किसी से कोई लेना-देना नहीं था। उसके पापा ने उसके इस बदले व्यवहार की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अब वो चंचल के साथ सिर्फ खेलते नहीं थे, बल्कि उसे अपने पास बिठाकर पढ़ाई और होमवर्क भी करवाते थे।

जब चंचल तीसरी क्लास में पहुँची तो उसी साल उसके पापा का तबादला किसी दूसरे शहर में हो गया। नई जगह, नया माहौल, नया स्कूल, नई टीचर, इन सबके बीच चंचल तालमेल नहीं बिठा पाई। इस बात को उसके मम्मी पापा ने नोटिस ले लिया। ध ीरे-धीरे चंचल का स्वभाव बदलने लगा, यही सब उसके मम्मी पापा के लिए परेशानी की वजह बन गया। ऐसा भी नहीं था कि, चंचल पढ़ाई से जी चुराती थी। जिस भी बात को उसे एक बार पढ़ाया या समझाया जाता था, उसे वो भूलती नहीं थी। ये अलग बात थी कि उसने दूसरे बच्चों के साथ खेलना बंद कर दिया था। अब वो बातें भी कम करती थी। हाँ अब उसने अपने आसपास होने वाली हर गतिविधि को ध्यान पूर्वक देखना शुरू कर दिया था। चंचल की परेशानी पता लगाने के लिए उसके मम्मी पापा ने हर मुमकिन कोशिश कर ली थी, मगर उन्हें सफलता नहीं मिली। चंचल की स्कूल टीचर से मिलकर भी उन्हें कोई वजह समझ नहीं आई। क्योंकि उसकी स्कूल टीचर को उससे कोई शिकायत नहीं थी।

धीरे-धीरे दिन गुजरने लगे। अब बड़ी हो रही थी, फिर भी उसने कभी अपनी परेशानी के बारे में नहीं बताया। इधर चंचल के मम्मी पापा ने चंचल के दुख को समझने और दूर करने की कोशिश जारी रखी। एक दिन वो चंचल को बाल विशेषज्ञ के पास ले गये।जल्द ही चंचल की परेशानी की वजह समझ आ गई। दरअसल वो बात करते-करते कुछ शब्द पर अटक कर रह जाती थी। उसके चुप रहने पर उसके दोस्त उसको बुद्धू कहकर चिढ़ाते थे, और बात करने पर उसके हकलाने पर ताना दिया करते थे। इस बात को उसने अपने घर में कभी किसी को नहीं बताया।

चंचल के पापा ने जल्दी ही दिल्ली शहर के स्पीच थरैपिस्ट से मिलने का appointment (वक्त) ले लिया। साथ ही अपने अहफिस से छुट्टियाँ चंचल के साथ जाने का पूरा कार्यक्रम तय कर लिया। दिल्ली शहर उनके घर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर था। सो उन्होंने दिल्ली तक का सफर कार से तय करने का निर्णय लिया। परंतु किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। रास्ते में उनकी कार दुर्घटना ग्रस्त हो गई। इस हादसे में चंचल तो बच गई, लेकिन उसके मम्मी पापा इस दुनिया में नहीं रहे।

इस हादसे के बाद चंचल अपने दादा दादी के पास रहने लगी। धीरे धीरे चंचल गुमसुम होती गई उसका स्कूल जाना छूट गया चंचल का डहक्टर से इलाज भी चल रहा था मगन दवाइयां कोई असर नहीं कर रही थी डह डाक्टर का कहना था चंचल अपनी माँ को खोने का सदमा झेल नहीं पाई। और शायद दुर्घटना वाली बात उसे रह रहकर परेशान करती होगी, आप निश्चित रहे एक दिन चंचल अवश्य ठीक हो जायेगी। की महीने बाद भी चंचल की तबीयत में कोई सुधार नहीं आया था।

एक दिन चंचल की बुआ चंचल से मिलने आई। उनकी अपनी तो कोई बेटी थी नहीं, सो वो चंचल को अपने घर ले आई। उनका एक बेटा था उसका नाम अंश था। अंश की अपनी तो कोई बहन थी नहीं, सो उसको दिल बहलाने के लिए एक गुड़िया मिल गई। चंचल की बुआ उसे अपने बेटे से भी ज्यादा प्यार करती थी। अंश भी उसे रोज सुबह सैर पर ले जाता था। इतना ही नहीं वो अपने घर आने वाले दोस्तों से भी चंचल को मिलवाना नहीं भूलता था। जब उसके कालेज की छुट्टी होती, वो उसको पिकनिक पर ले जाता था। खाली समय में जब चंचल अकेली होती तो ड्रहइंग करना पंसद करती थी। जो कोई भी चंचल की चित्रकारी को देखता तो उसकी तारीफ जरूर करता था।
एक बार जब अंश के दोस्त चंचल की ड्रहइंग देख रहे थे तो उसके द्व ारा बनाई गई एक तस्वीर पर उसके एक दोस्त ने कुछ लिख दिया था।

‘‘बोलता चेहरा थोड़ा सा हैरान हैं

शब्द नहीं हैं उसके पास, लेकिन वो परेशान हैं

सुना हैं उसने ‘प्यार‘ हैं जीवन का आधार, लेकिन ‘प्यार‘ इस जहान में कहाँ हैं?
अब तो मासूम बच्चे भी रहते हैं अकेले, वक्त बच्चों के लिए माँ-बाप के पास कहाँ हैं‘‘।

जब चंचल ने कहा ‘‘आपने इस पर लिख क्यूँ दिया’’ तब अंश ने चंचल को समझाया तुम्हारे द्वारा बनाई गई बेजुबान तस्वीर यही बोलती महसूस होती हैं तब चंचल मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी थी।

अब चंचल दिनों दिन सामान्य होने लगी थी। उसे फिर से स्कूल में दाखिल करवा दिया गया था। उसकी बुआ ने उसे कह दिया था " जिस काम में तुम्हारा दिल लगे, उसे ही करना हमारी तरफ से पढ़ने की जबरदस्ती नहीं हैं। हाँ इतनी पढ़ाई अवश्य कर लेना कि कोई तुम्हें धोखा ना दे सके, और तुम अपनी मंजिल तक पहुँच सको"।

एक दिन चंचल की क्लास के सभी बच्चों को पिकनिक पर ले जाने का कार्यक्रम बनाया गया। उनकी प्रिंसिपल मैडम भी अपने दोनों बच्चों को स्कूल के साथ पिकनिक पर ले जा रही थी। जहां बच्चे बस से जा रहे थे वही प्रिंसिपल मैडम और उनके बच्चे कार से जा रहे थे। दिनभर सभी बच्चों ने जमकर मस्ती की, वापसी पर प्रिंसिपल मैडम की कार सड़क पर अंधेरा होने की वजह से छोटे से गड्ढे में फँस गई।

बस के ड्राइवर और कार के ड्राइवर दोनों ने मिलकर अपनी अपनी तरफ से हर मुमकिन कोशिश कर ली, मगर कार गड्ढे से बाहर नहीं निकल पाई। जब भी कार को गड्ढे से बाहर निकालने की कोशिश की जाती, कार का टायर तो धिसता जाता मगर कार टस से मस नहीं हो पा रही थी। बस में बैठे बैठे बच्चे बहुत देर से ये सारा नजारा देख रहे थे। अचानक चंचल बस से नीचे उतर कर अपनी प्रिसिंपल मैडम के पास आई और धीरे से उनके कान में कुछ कहकर वापिस अपनी बस में आकर बैठ गई।

फिर प्रिसिंपल मैडम ने अपने ड्राइवर को कार में से जैक निकालने को कहा। फिर जेक को उस पहिये के नीचे लगाया गया जो गड्ढे में धंस गया था। उसके बाद दोनों ड्राइवरों ने मिलकर कार को हल्का सा ऊंचा उठाया और हल्का सा धक्का देकर पीछे की तरफ धकेल दिया। अब कार गड्ढे से बाहर निकल आई थी। ये देखकर सभी बच्चे खुशी के मारे हो हल्ला मचाने लगे।

उसके बाद प्रिसिंपल मैडम ने सभी टीचर्स और बच्चों को बताया कि चंचल की बुद्धिमत्ता की वजह से ही कार गड्ढे से बाहर निकल पाई हैं। ये जानने के बाद सभी बच्चे चतुर चंचल से दोस्ती का हाथ मिलाने लगे।

रमेश कुमार

पहचान

हर माह आयोजित होने वाली संगोष्ठी साहित्यिक संस्था सन्देश की पहचान बन गयी है।सन्देश के सदस्यों में इनके कई स्तरीय रूप देखने को मिलते हैं।यदि उन्हें साहित्यिक विधाओं के रूप में देखा जाय तो कविताकार ,गीतकार ,गजलकार ,मुक्तककार ,हाइकूकार,दोहाकार आदि नाम दिया जा सकता है।यूँ तो संस्था के अध्यक्ष छंदधर्मिता के आग्रही हैं और यथासंभव उनके निर्वाह की बात भी करते हैं पर यदि कवि के साथ-साथ व्यक्ति अधिकारी,व्यवसायी ,बिल्डर आदि है तो यह नियम उस पर लागू नहीं होता।

वार्षिक समारोहों के अलावा हर वर्ष सदस्यों की रचनाओं के संग्रह का प्रकाशन भी अवश्यम्भावी है इनके संपादन व प्रकाशन में बहुत ही सजगता बरती जाती है।आज उसी 'सन्देश' का वार्षिकोत्सव है। संस्था ने मुख्यवक्ता अतिथि के रूप में सुविख्यात साहित्यकार श्री आर्चेन्दु को बुलाया है।दो सदस्यों के सम्मान के उपरांत आर्चेन्दु जी के बोलने की बारी आयी।

वह अपने विशेष शैली में बोले कि साहित्य रचना की तीन श्रेणियाँ हैं।प्रथम वे जो अधिकारी हैं।वे कुछ भी लिखें छपता है ।

ज्यादातर पुरस्कार वहीं ले जाते हैं क्योंकि वे प्रतिदान में समर्थ होते हैं।दूसरे स्थान पर प्राध्यापक होता है,जो अकादमिक रूप से शोध आदि में सशक्त भूमिका निभाता है ।तीसरा बेचारा मौलिक व विशुद्ध साहित्यकार होता है जो इन दोनों की कृपा पर निर्भर होता है।

साहित्यकार इस समय तीन प्रकार के होने लगे हैं इस आधार पर ... ... मै अपनी स्थिति के विषय में सोच रहा था।

डॉ जयशंकर शुक्ल

अदला-बदली

शहर के विख्यात संभागर पूजा सदन में आज लोकप्रिय पत्रिका 'नियति' के २५ वर्ष होने पर कार्यक्रम का आयोजन था। पत्रिका के सम्पादक श्री देवेंद्र पर एक व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लक्ष्य करके रघुनाथ द्वारा सम्पादित पत्रिका 'सुलभा' का अंक भी आज ही इसी की साथ लोकार्पित होना था।

सभागार में काफी गहमा गहमी थी। मेरी बगल वाली सीट पर बैठे रवि जी ने प्रश्न किया, मित्रवर क्या बात है ? कुछ माह पहली सुलभा के संपादक रघुनाथ का व्यक्तित्व व कृतित्व पर केंद्रित 'नियति' का अंक भी आया था ।

हाँ भाईसाहब जमाना ही ऐसा आ गया है ,आप मुझी खुजाओ ,मै आपको खुजाता हूँ । मैंने कहा ।

पर इस प्रकार के लेन-देन से साहित्य का कितना भला होगा ।रवि जी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा ।उनके मंतव्य को समझते हुए मैंने आँखों की आँखों में सहमति व्यक्त की ।थोड़ी देर बात रवि जी ने कहा

''सर वो जो आप एक संकलन निकाल रहे थे,मै अपनी रचनाएँ भेजना चाहता हूँ । '' और आपकी रचना मैंने अपनी पुस्तक से लेकर अखबार के अपने कहलम में छपवा दी है।

रवि जी बोले जा रहे थे और मै उनकी बातों को 'नियति' और सुलभा के देवेंद्र और रघुनाथ से मिला रहा था।

डॉ जयशंकर शुक्ल

ट्यूशन

अभिषेक ग्यारहवीं के छमाही परीक्षा में फेल हो गया । हालांकि इस परीक्षा का कुछ तत्कालीन प्रभाव नहीं होता और असली परीक्षा तो फाइनल का ही माना जाता है लेकिन अभिषेक के परिवार वालों के लिए यह एक बड़ी दुर्घटना थी । क्योंकि हाईस्कूल टॉप करने के बाद अभिषेक से और बेहतर करने की उम्मीद थी । परिवार वालों की उदासी देखकर पड़ोसियों ने भी ताड़ लिया कि मामला क्या है । फलस्वरूप वो भी बहुत दुःखी हो गए क्योंकि पिछले सात महीने से अभिषेक का उदाहरण दे कर वो अपने लड़कों को पढ़ाई-लिखाई के लिए खूब कोस रहे थे,खास कर जब उन लोगों के बच्चे सुबह पढ़ने के लिए नहीं उठ पाते थे । उन्हें अभिषेक के फेल होने से ज्यादा दुःख इस बात का था कि अब किसका उदाहरण देकर अपने लड़कों को पीटेंगे ?''यह कैसे हो सकता है ? ''यह प्रश्न न केवल घरवालों बल्कि गाँववालों को भी हैरान कर रहा था द्य अभिषेक की पढ़ाई-लिखाई पर किसी को भी शक नहीं था ,हाईस्कूल में फर्स्ट डिविजन लाकर उसने सबका ध्यान पहले ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया था,और अब शहर के नामी स्कूल में दाखिले के बाद तो लोगों को विश्वास ही हो गया था कि यह लड़का कुछ करके निकलेगा ।

हाँ अगर किसी को अभिषेक की क्षमता पर थोड़ा भी डाउट था तो वो थे अभिषेक के पापा छोटेलाल के जिगरी दोस्त सिद्धनाथ उर्फ पहलवान । पहलवान किसी से कहते तो कुछ नहीं थे, लेकिन उनका मानना था कि दसवीं में अभिषेक का तुक्का लग गया । इसका स्पष्ट कारण भी उन्होंने ढूढ़ कर अपने पास सुरक्षित रख लिया था । दरअसल पहलवान का लड़का सनी अभिषेक का सहपाठी था, जो हाईस्कूल में लटक गया था । इस घटना ने पहलवान को हिला कर रख दिया । रिजल्ट वाले दिन उनको ऐसा लगा जैसे कि किसी ने जोरदार धोबीपाट मारकर चित्त कर दिया हो । उस दिन से पहलवान का मेहनत पर से भरोसा उठ गया क्योंकि उनका विश्वास था कि हाईस्कूल परीक्षा की तैयारी में सनी से ज्यादा मेहनत गाँव में किसी लड़के ने नहीं की थी । सनी की मेहनत पर घर में किसी को शक नहीं था । यह सौ प्रतिशत सही था कि सनी बहुत पढ़ाई करता था । लेकिन यह भी सही था कि परीक्षा के दौरान भी वो कोर्स किताबों से ज्यादा सरस सलिल और मनोहर कहानियाँ पढ़ा करता था । पहलवान जी दूसरे कमरे में लेटे-लेटे खाली कमरे का जलती हुई ट्यूबलाइट देखकर सनी के मेहनत का अंदाजा लगाते रहे और खुद उनके दिमाग की बल्ब कभी जल नहीं पायी ।

शहर का स्कूल था ,अंग्रेजी मीडियम के भी बच्चे थे । बस यही सोचकर छोटे लाल कभी-कभी बेटे के डिविजन को लेकर थोड़ा चिंतित जरूर हो जाते थे फिर भी उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि लड़का छमाही में एक विषय में फेल हो जाएगा । दसवीं में अपने स्कूल में टॉप करने वाला लड़का सिर्फ छः महीने में इतना लापरवाह हो सकता है ? या कोई और कारण है ?

मध्यमवर्गीय परिवार में लड़के का हाईस्कूल पास होना एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है । और इंटर में दाखिला दिलाने के बाद से ही घरवाले सपने देखना शुरू कर देते हैं । घरवालों की उम्मीद के पौधे यहाँ से बड़े होने शुरू होते हैं । पास होने वाले लड़कों को उनके डिविजन के हिसाब से भविष्य का प्रशासनिक अधिकारी ,डॉ अथवा इंजीनियर या सरकारी क्लर्क मान लिया जाता था । छोटे लाल की उम्मीदें अभिषेक के ऊपर न केवल टिकी भर थी, बल्कि दिन-प्रतिदिन उसी तरह से बढ़ती जा रही थी जैसे अमरबेल किसी दीवार का सहारा पाकर ऊपर उठता जाता है । अभिषेक के मम्मी-पापा ही नहीं बल्कि दोस्त-रिश्तेदार भी सोचते थे कि अभिषेक के नंबरों का ग्राफ अब नीचे नहीं आने वाला । लेकिन यह क्या अभिषेक ने सबके एक्जिट पोल पर पानी फेर दिया । एक घटना ने उस किशोर को उन सभी के सपनों को तोड़ने का अपराधी बना दिया जिन सपनों के बारे में उसे खुद भी कुछ पता नहीं था।

ग्यारहवीं की छमाही में लड़खड़ाने के बाद घरवालों को लगने लगा कि कभी जीनियस कहलाने वाला अभिषेक अब सामान्य लड़का होकर रह गया है । लेकिन यह सत्य नहीं था । अभिषेक को खुद भी विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब कैसे हो गया । परीक्षा की तैयारी में उसने कोई कसर नहीं छोड़ा था ।सभी पेपर भी बढ़िया हुए थे । यहाँ तक कि उत्तर मिलाने के बाद उसे उसी समय विश्वास हो गया था कि ठीक-ठाक नंबर से पास हो जाऊँगा । फिर केमेस्ट्री में चार नंबर से फेल होना उसकी समझ से परे था ।

हाँ, यह भी बात सही है कि अभिषेक के सहपाठी घुमा-फिरा कर इस बात पर जोर देते रहे कि अभिषेक को क्लास टीचर वर्मा मास्टर के यहाँ ट्यूशन पढ़ना चाहिए । रिजल्ट आने के बाद अभिषेक उन बातों में छुपे रहस्य को समझने का प्रयास कर रहा था, लेकिन अभिषेक का कोमल ह्रदय यह स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि भला कोई मास्टर अपने विद्यार्थियों को जान बूझकर इतना कम नंबर दे सकता है ? क्या कोई मास्टर अपने होनहार बच्चों को अपने यहाँ ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य कर सकता है ? ‘‘नहीं ऐसा नहीं हो सकता ‘‘ उसके दिल से यहीं आवाज निकलती थी। अगर ऐसा ही करना होता तो वर्मा मास्टर मासिक टेस्ट में भी तो फेल कर सकते थे ? ऐसे कई प्रश्न अभिषेक के मन में कई दिनों से उमड़ रहे थे । लेकिन हर बार वो इन प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने के बजाय इसे दबा देना बेहतर समझता था ।

दरअसल वो उस स्कूल से पढ़कर आया था जहाँ के मास्टरों की सुन्दर छवि उसके मन से उतरती ही नहीं थी । वहाँ के मास्टर उसे एक साधारण छात्र नहीं बल्कि अपने बेटे जैसा प्यार देते थे और उसकी हर गलतियों पर उसे प्यार से समझाते थे । ट्यूशन वहां भी पढ़ाया जाता था लेकिन ट्यूशन न पढ़ने बावजूद भी अभिषेक को अन्य छात्रों से कभी अलग व्यवहार होने का भान नहीं हुआ । अभिषेक सोच रहा था, कि एक बार तो स्काउट ट्रेनिंग के दौरान जानबूझकर भगवती मास्टर को ऐसा धक्का दिया कि वो मुँह के बल गिर पड़े। नाक से खून निकलने लगा । अगले दिन अभिषेक की क्लास में जमकर पिटाई हुई । अभिषेक को डर था कि दस दिन बाद रिजल्ट आएगा कहीं अंग्रेजी में फेल न कर दें लेकिन रिजल्ट आने पर सबसे अच्छा नंबर अभिषेक का था । हर मास्टर को विद्यार्थियों के प्रति अपना मूल कर्तव्य अच्छे से मालूम था । व्यक्तिगत खीझ कभी-कभी स्वाभाविक थी लेकिन व्यक्तिगत खीझ के कारण किसी के ईमानदार प्रयास पर पानी फेर देना कम से कम वहां के मास्टरों के खून में नहीं था जहाँ से अभिषेक हाईस्कूल पास करके आया था ।

लेकिन अभिषेक ने अब तक जो दुनिया देखी थी, वो बहुत छोटी थी । उस दुनिया के लोगों के लिए शायद पैसा ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं रहा होगा । लेकिन उससे अलग भी दुनिया है । जहाँ लोगों की नजर में पैसा ही सब कुछ है और वो येन केन प्रकारेण इसे इकट्ठा करने के प्रयास में लगे रहते हैं ।

अच्छाइयाँ और बुराइयाँ हर जगह हैं चाहे कोई राजनीति का क्षेत्र हो ,चाहे चिकित्सा का क्षेत्र हो ,चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो अथवा कोई भी अन्य क्षेत्र हो। इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्मा मास्टर अभिषेक को अपने यहाँ ट्यूशन पढ़ाना चाहते थे । जिस तरह दुकानदार ललचाई नजरों से बाजार में घूमने वाले हर आदमी को अपना ग्राहक समझते हैं ,वैसे ही वर्मा मास्टर हर वर्ष ग्यारहवीं में आये हुए होनहार बच्चों पर नजरें गड़ाये रहते थे ।

यह केवल एक वर्मा मास्टर तक ही सीमित नहीं था और भी कई मास्टर थे जो अपने-अपने दाँव-पेंच से विद्यालय को व्यापार का अड्डा बनाये हुए थे और सुदूर गाँव से आने वाले भोले-भाले होनहार बच्चों से मोल-भाव करते रहते थे । पहले मासिक टेस्ट में बढ़िया नंबर लाने के बाद से ही वर्मा मास्टर की नजर में अभिषेक चढ़ गया था । अभिषेक से कम नंबर पाने वाले कई लड़के वर्मा मास्टर के यहाँ आना-जाना शुरू कर चुके थे । चूँकि हहस्टल में रहने वाले हर लड़कों को उनके सीनियर बीड़ी-सिगरेट-गुटखा के साथ-साथ विद्यालय की हर अच्छी-बुरी बातें समझा देते हैं अतः हॉस्टल के लड़कों को पहले दिन से ही पता था कि इंटरमीडिएट की इस वैतरणी को पार करने के लिए वर्मा मास्टर की पूँछ की पकड़नी ही पड़ेगी। अभिषेक गाँव से आया था ,उसे मास्टरों द्वारा बनायें गए इस नियम की कोई जानकारी नहीं थी ।हालाँकि वर्मा मास्टर केवल २०० रूपये महीने के लाभ के लिए अभिषेक को अपने यहाँ ट्यूशन नहीं पढ़ाना चाहते थे बल्कि उन्हें विश्वास था कि अभिषेक जैसा जीनियस लड़का उनके यहाँ पढ़ते हुए बारहवीं टॉप करेगा तो उसके नाम का इस्तेमाल करके को अपनी ट्यूशन की दुकान और बढ़िया चला सकते हैं ।

सभी संभावनाओं को नकारने के बावजूद भी अभिषेक को इस परेशानी का हल तो निकालना ही था क्योंकि अभी आगे वार्षिक परीक्षा है। अगर ऐसा ही कुछ ऊपर-नीचे हो गया तो एक साल बर्बाद होने का डर है । अगले दिन अभिषेक अपने चेहरे पर थोड़ी उदासी लिए क्लास रूम के बाहर बैठ कर मास्टर जी के आने का इंतजार कर रहा था कि सहसा पीछे से कंधे पर किसी ने हाथ रखा ।अभिषेक ने मुड़ कर पीछे देखा तो गुरप्रीत था । अभिषेक ने धीरे से गुरप्रीत के हाथ पर हाथ रखा तो गुरप्रीत मुस्कुराते हुए आगे आ गया ।अभिषेक की हालत उस आदमी जैसी थी जिसके घर में बेटी की शादी से पहले चोरी हो जाय और जिसे बदहाली में भी एक नए सिरे से तैयारी करनी पड़े ।

अभिषेक के पास अभी एक और मौका था वार्षिक परीक्षा में थोड़ा अधिक मेहनत करके वो अपना जलवा फिर से कायम कर सकता था लेकिन फिर भी वो थोड़ा डरा-डरा था क्योंकि मेहनत में तो उसकी कभी कमी रही ही नहीं । थोड़ी देर खड़े-खड़े चुटकुले सुनाने के बाद गुरप्रीत अभिषेक के पास ही बैठ गया और उसके मन में उठ रही लहरों की ऊँचाइयों का अंदाजा लगाने लगा । गुरप्रीत अपने दोस्त की परेशानी को भाँप कर अभिषेक को यहाँ के मास्टरों की पूरी कहानी साफ-साफ शब्दों में कह डाला । अंत में उसने जोर देकर बोला कि वर्मा मास्टर के यहाँ ट्यूशन पढ़ ही लो ,दोनों यार साथ-साथ चलेंगे ।

अभिषेक की एक परेशानियाँ हो तब ना ट्यूशन पढ़ लें । ट्यूशन के पैसे कहाँ से आएँगे ? बड़ी मुश्किल से घरवाले स्कूल का फीस भर पाते थे । ये सारी वो बातें थी जो अभिषेक गुरप्रीत को बता भी नहीं पा रहा था । अभिषेक ने मुस्कुराते हुए बोला, ‘‘सोचूंगा दोस्त । गुरप्रीत खुश हो गया ।उसे अपने साथ जाने वाला एक साथी मिल गया पर इससे अधिक खुशी उसे इस बात की थी कि अभिषेक ग्यारहवीं में पास हो जायेगा । उसे अचानक से याद आ गया कि ट्यूशन न पढ़ने की जिद में ही उसका बड़ा भाई मनप्रीत ग्यारवीं में फेल हो गया था । हालाँकि यह बात भी सच थी कि फेल होने के बाद मनप्रीत ने अपने क्लास टीचर शुक्ला जी का कम्बल परेड करवा दिया । उस शाम घर आकर अभिषेक ने अपने पिता छोटेलाल को यह बात बता दिया । छोटेलाल थोड़े हिचकिचाए लेकिन अभिषेक की माँ ने उन्हें मना लिया । उस रात अभिषेक को पता चला कि शाम को पापा के जेब से पैसे निकालने वाली माँ कितनी दूरदर्शी है । माँ ने कई जगह से सिक्के और कुछ रूपये निकाल कर बेटे की हथेली पर धर दिया और उसके आँखों से छलकते हुए गंगाजल को अपने आँचल में समेट लिया ।

परिस्थितियों से हारा हुआ अभिषेक अगले दिन वही करता है जो उस वक्त की माँग थी । इस बात को धीरे-धीरे तीन महीने बीत गए । अभिषेक ,वर्मा मास्टर के यहाँ आता-जाता रहा । वर्मा मास्टर अपने घर पर ही क्लास रूम बना कर पूरी ईमानदारी से बच्चों को पढ़ाते थे । कभी-कभी ऐसा लगता था कि उनकी नियुक्ति की इसी शर्त पर हुई कि बच्चों को पढ़ाने का काम घर पर करेंगे । स्कूल तो केवल अटेंडेंस लेने और देने आएंगे । उनके यहाँ पढ़ने वाला हर स्टूडेंट परीक्षा से एक सप्ताह पहले बहुत सक्रिय हो जाता था । उनकी उत्सुकता इस बात को लेकर रहती कि मास्टर जी परीक्षा में आने वाले प्रश्नों को जल्द से जल्द बता दें । लेकिन वर्मा मास्टर ने यह गलत काम कभी भी नहीं किया। उन्होंने स्टूडेंट्स को यह कभी नहीं बताया कि प्रश्न-पत्र में कौन-कौन से प्रश्न आएँगे । हाँ बातों-बातों में वो यह संकेत दे देते थे कि इस बार प्रश्न-पत्र में कौन-कौन सा प्रश्न नहीं आने वाला है । इतना जान लेने के बाद स्टूडेंट अपने आप अंदाजा लगा लेते थे कि कौन-कौन से प्रश्नों के आने की उम्मीद अधिक है । स्टूडेंट्स अंदाजा भले लगा लें लेकिन वर्मा मास्टर ने किसी बच्चों को परीक्षा से पूर्व प्रश्नो को कभी नहीं बताते थे । अतः वो प्रिंसिपल के सामने हमेशा गंगाजल लेकर कसम खाने को तैयार रहते थे जब कहीं से यह बात निकलती थी कि वर्मा मास्टर अपने यहाँ ट्यूशन पढ़ने वालों को प्रश्न-पत्र परीक्षा से पहले ही बता देते हैं।

खैर परीक्षा का दिन भी आया। प्रश्नों को हल करने के लिए अभिषेक को अधिक मेहनत नहीं करना पड़ा । गणित और विज्ञान से सारे प्रश्न-पत्र बहुत अच्छे हुए । वर्मा मास्टर की इज्जत करने वाले मास्टरों की ही क्लास में ड्यूटी लगी थी अतः उन लोगों ने भी विद्यार्थियों की सारी सुविधाओं का ध्यान रखा गया । गुरप्रीत को तो भौतिक विज्ञान की परीक्षा में वर्मा मास्टर ने १५ मिनट एक्स्ट्रा भी दिलवाया ताकि यदि अगर उत्तर आता है तो पूरे प्रश्नों को हल करे । वर्मा मास्टर के इस उदारता की अगले दिन बड़ी चर्चा हुए लेकिन गुरप्रीत का कहना था कि उसके भाई मनप्रीत ने अपने तीन दोस्तों के साथ परीक्षा के एक दिन पहले शाम को वर्मा मास्टर जी को रास्ते में रोक कर के उनसे नमस्ते किया था । उसी नमस्ते का प्रभाव है जो मास्टर जी ने उसे इतना टाइम दिलवाया ।

परीक्षा संपन्न हो गयी । पंद्रह दिन बाद रिजल्ट आना था । रिजल्ट ने नाम पर सबको उत्सुकता थी लेकिन अभिषेक को कुछ अधिक थी । अभिषेक ने मेहनत भी बहुत किया ।अंततः रिजल्ट आया और अभिषेक ने ग्यारहवीं में टॉप किया । गाँव वाले बहुत खुश हुए ,घरवाले बहुत खुश हुए पर अभिषेक ज्यादा खुश न था । उसके नजरों के सामने तो पूरी कहानी एक बार फिर गुजर गयी । वो बिना ट्यूशन के पास हो सकता था और होता तो उसे और अधिक खुशी मिलती ।

बहरहाल रिजल्ट आने के तीसरे दिन एक किलो रसगुल्ला और गुरप्रीत को साथ लेकर दोनों दोस्त वर्मा मास्टर के घर पहुँच गए । अभिषेक का जाने मन बिल्कुल न था लेकिन छोटेलाल ने

कहा कि गुरु जी का मुंह मीठा होना चाहिए । गुरु धरती पर भगवान् से भी बढ़कर होते हैं ।अभिषेक उनके घर पहुँचा ,पैर छूकर बैठ गया । चूँकि आज दोनों ट्यूशन पढ़ने तो आये नहीं थे इसलिए उनका स्वागत मेहमान जैसे हुआ । वर्मा जी की धर्मपत्नी बहुत खुश थी । अभिषेक को लगा कि शायद उसके हाथ में मिठाई का डिब्बा देखकर वो इतना खुश हैं लेकिन अभिषेक गलत था । वर्मा मास्टर जी ने बताया कि उनके लड़के का भी आज रिजल्ट आने वाला है जो शहर के सबसे बड़े विद्यालय में ग्यारहवीं में पढता है।

वर्मा मास्टर से औपचारिक बातचीत के बाद दोनों ने जाने की अनुमति माँगी तो मास्टर साहब रोकते हुए बोले कि थोड़ी देर और बैठो । उन्होंने कहा कि उनका बेटा रोहित भी आ ही रहा होगा ,जिसे उन्होंने कल ही बोल रखा था कि मार्कशीट लेकर आते वक्त स्वाद सरोवर से दो किलो गुलाब जामुन लेकर आना । इसका सीधा-सादा मतलब था वर्मा मास्टर अभिषेक और गुरप्रीत के सामने अपने बेटे के पास होने की खुशी सेलेब्रेट करना चाहते थे ।

गुरप्रीत स्वाद सरोवर के गुलाब जामुन का अनुमान कर लार टपकाने ही वाला था कि रोहित तेजी से अंदर आया और सीधे अपने कमरे में चला गया । अभिषेक को किसी दुर्घटना का आभास हो रहा था और गुरप्रीत का दिमाग गुलाब जामुन पर अटका था । वर्मा मास्टर की पत्नी अंदर गयीं, फिर रोते हुए बाहर आयीं और मास्टर साहब को अंदर जाने का इशारा किया । वर्मा मास्टर सकपकाए से अंदर कमरे में घुसे और दो मिनट में मुँह से पसीना पोछते हुए बाहर आ गए । अभिषेक समझ गया कि रोहित ग्यारहवीं में लटक गया । गुलाब जामुन का ख्याल छोड़कर गुरप्रीत ने हिम्मत करके वर्मा मास्टर से पूछा कि क्या हुआ मास्टर जी ?

वर्मा मास्टर दबे स्वर में बोले कि बड़ी दुःख भरी खबर है,पता नहीं कैसे रोहित फेल हो गया ? मास्टर साहब का इतना कहना था कि तमतमाते हुए रोहित बाहर आया और बोला कि फेल हुआ नहीं, जानबूझकर फेल किया गया । यह सब गणित वाले मास्टर की कारस्तानी है और थोड़ी आपकी भी गलती है । आँसुओं से भरी आँखों को पोछते हुए रोहित ने कहा जब नवम्बर में गणित वाले मास्टर ने मुझे अपने यहाँ ट्यूशन पढ़ने के लिए संकेत किया था तो मैंने आपके कहने पर मना कर दिया । आपका कहना था कि फिजूल में दो सौ रूपये खर्च करने की कोई जरुरत नहीं है । आज उन्होंने अपना असली रूप दिखा दिया ।

वर्मा जी ,सर पर हाथ धरे-धरे बोले कि मुझे मालूम नहीं था कि उस स्कूल के मास्टर इतने हरामी हैं ,हरामी सुन कर अभिषेक थोड़ा सा मन ही मन मुस्कुराया ।गुरप्रीत तो ठहाका मार देता इससे पहले अभिषेक ने वर्मा मास्टर का पैर छुआ और बाहर निकल आया । रिक्शे पर बैठे-बैठे गुरप्रीत कुछ नई गलियों का दोहराने का अभ्यास करने लगा और अभिषेक अपने हाईस्कूल वाले मास्टर साहब को याद कर के भावुक हो गया ।

विनोद पाण्डेय

समाज को उद्वेलित कर विमर्श को प्रेरित करता संग्रहः 'बोलने दो'

सामाजिक ताना बाना और उसका रख-रखाव सदियों से रीति-कुरीति की पाटों के बीच पीसता मनुष्य और उससे बाहर निकाल पाने की आतुरता और उस आतुरता को उत्प्रेरित करता मन जब किसी व्यवस्था से विद्रोह करता है तो स्वाभाविक रूप से विमर्श की उत्पत्ति होती है। हमारा यह समाज स्त्रियों के प्रति सहिष्णु कम ही रहा है। यदा-कदा ' यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते ---' की बात तो करता है , उसे लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा होने का भान भी कराता है परंतु सम्यक समाज उसे उसका उचित स्थान देने से कतराता हुआ दिखाई देता है। परम्पराओं की वेणी में उसे जकड़कर बाँध भी देता है। विभिन्न प्रकार के बंधनो से जकड़ी स्त्री की पीड़ा जब कुलबुलाती है, कसमसाती है तो सामाजिक ताने-बाने की नीव डगमगाने लगती है। बार-बार उसे रोका जाना और प्रताड़ित किया जाना स्त्री मन को चित्कार उठने को विवश कर देता है। उसकी यही विवशता जब शब्दों का आकार ग्रहण करती है,समाज और सामाजिक व्यवस्थाओं पर प्रश्न खड़ा करती है, तो स्वतः विमर्श का जन्म होता है।

ऐसे ही अनेक प्रश्नो और विमर्श के साथ पाठकों के समक्ष विदुषी कवियित्री के काव्य कर्म का एक संकलन जिसमें हिन्दी की ३६ कवितायें संकलित हैं,'बोलने दो' अपनी उपस्थिती दर्ज कराता है। कवियित्री डह संध्या सिन्हा 'सूफी'वैसे तो अपने रचनाधर्मिता और सम्प. ादन कर्म को लेकर हिन्दी और भोजपुरी साहित्य जगत में किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। हिन्दी और भोजपुरी दोनों ही साहित्य जगत उनकी साहित्यिक सक्रियता से लगातार सरोकार करता रहता है।

काव्य संग्रह 'बोलने दो' अपने शीर्षक को सार्थक करती रचनाओं को लेकर पाठकों के समक्ष आया है। जिस संकलन का शीर्षक अपने नाम से ही विमर्श का आभास दे जाता हो, वहाँ निश्चित रूप से विमर्श की रचनाएँ होंगी ही। काव्य संकलन 'बोलने दो' में स्त्री विमर्श की कई रचनाएँ है। इस संकलन की पहली रचना 'मैं और मेरी जिंदगी' से स्त्री विमर्श की शुरुवात होती है । कवियित्री एक चित्र प्रस्तुत करती है-

"सच है मैंने तुमको जिया
और खूब जिया
थोड़ी ही सही,
छीनी अपनी खुसियाँ
समन्दर भर आँसू पिया!!"

स्त्री विमर्श का कारवाँ आगे बढ़ता है जहां उसे 'बोलने दो, बोलो जरूर बोलो,नकबेसर सी तेरी यादें, तीर-धनुष,दीया,सोहनी की खिड़की,होली हूँ मैं,प्रश्न बदल दो,मुनियाँ की ओढनी,ट्विंकल के हत्यारे से होती हुई 'अपनी आदिवासी सखी को' तक पहुँचती है। 'ट्विंकल के हत्यारे'कविता में कवियित्री का क्रोध फूट पड़ता है और वह उन हत्यारों को गिद्ध से भी निम्न कोटि में रखते हुये मीडिया पर भी प्रश्न खड़े करती है-

"तुम गिद्ध नहीं हो सकते

मीडिया तुम्हें गिद्ध कहती रही
लेकिन
तुम गिद्ध तो हो ही नहीं सकते।''

अपनी इस तुलना के पक्ष में इसी कविता में अपना तर्क प्रस्तुत करती हुई कवियित्री इसे स्पष्ट भी करती है-

''अफ्रीका के अकाल में भी
जब एक मासूम
अपनी अंतिम साँसे गिन रहा था तो
गिद्ध ने पास बैठकर धैर्य से
उसकी मृत्यु का इंतजार किया
वो तश्वीर तुम्हें याद है न?''

कविता आगे बढ़ती है और स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि कवियित्री उनके अस्तित्व को ही कटघरे में खड़ा कर देती है-

''मनुष्यता और भाषा दोनों के लिए
चुनौती बने तुम
बोलो ना तुम्हें क्या कहूँ???
सोचती हूँ
तुम कुछ कहने सुनने लायक भी हो???''

'अपनी आदिवासी सखी को' शीर्षक कविता के बहाने कवियित्री आदिवासी महिलाओं की स्वतन्त्रता और परम्पराओं के पक्ष में मजबूती से खड़ी होती है। उनके हक की बात के बहाने प्रकृति और संस्कृति के छरण के विरुद्ध अपनी लेखनी की धार को तीव्र करती हुई कामना करती है-

''ओ स्वेद-रस रसीली
मेरी प्यारी सखी
तुम जैसी हो वैसी ही रहो
बिंदास.....बेखौफ
ओ जामुनी गात मेरी प्यारी सखी
इतना तो हक है तुम्हें।''

स्त्री विमर्श के साथ-साथ स्त्रियों की मनोदशा और उनके स्वप्न पर भी कवियित्री की लेखनी चलती दिखाई पड़ती है। नायक प्रेमी से उसका सौंदर्य और आगमन के सुखद होने की कामना कराती है-

''माथे पर बिंदिया, नयनों में कजरा,
मुखड़े पर घुंघटा डाले
नूपुर झनकाते कदमों से
जब वह प्रथम प्रवेश करेगी
मेरा घर खुसियों से नहा जायेगा
चाहे जैसी होगी वह।''

समाज और सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रति कवियित्री डह संध्या सिन्हा 'सूफी' का मन खिन्न भी होता है और खुलकर प्रश्न उठाती है। 'बताना बसंत','बुढ़ापा','सीखना चाहती हूँ', 'आउटडेटेड कही जाती हूँ' और 'चीखना जरूरी है' सरीखी कवितायें इसकी गवाह हैं। 'बताना बसंत' पूरी कविता में तीखे प्रश्नों का अंबार है-

''पूछ रही अँगने की छोटी वह मुनियाँ
लौटा दो ओ गुड्डे वो गुड़िया
छीन लिया पुस्तक बस चूल्हा संभालना
आँख भरे आँसू और गोंद बना पलना
खूब हुआ आना, बसंत तेरा आना।''

समाज और उसके द्वारा थोपी गयी व्यवस्थाओं पर कवियित्री प्रश्न खड़ा करने में जरा सी भी हिचकिचाहट नहीं दिखाती।

आजादी से जुड़ी कविताओं में भी केवल आजादी का जश्न भर नहीं है, केवल देश भक्ति की बातें भर रही हैं। वहाँ भी प्रश्न सीना ताने खडें हैं-

''आजादी
तू झंडे में ही क्यों रह गयी कैद??''

आज के युग में जहां सूचना क्रांति की बयार बह रही है, वहीं अपनत्व की थाती दरक रही है। पास-पास रहने वाले लोग भी दूर होने का आभास देने लगे हैं। 'नेट पैक खत्म हो गया' इसी का एक रेखाचित्र है। शायद आज ऐसे ही रेखाचित्रों को खींचने की जरूरत भी है। जिससे लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो सके। यही कवियित्री की चाहत भी है-

''बहुत दिनो बाद
हम दोनों आज
बैठे साथ---

बहुत दिनो बाद॥''

समय को उलाहना और चुनौती देने की बात हो, बेरोजगारी जैसी समस्या की बात हो या फिर पलायन के पीड़ा की बात हो कवियित्री की ले खनी स्वच्छंद भाव से इन प्रश्नों को भी उठाती है और लोगों को सोचने पर मजबूर करती है।

स्त्री मन और उसका हृदय दोनों ही प्रेम के अथाह समुद्र होते हैं। उसमें भला कौन सराबोर होना नहीं चाहता। फिर कवियित्री भला इससे अछूती कैसे रह पाती। प्रेम की अनुभूति और प्रकृति के साथ स्वप्न देखती 'मन की धरती' जैसी कवितायें इसका शंखनाद करती हमारे समक्ष अपनी उपस्थिती दर्ज कराती हैं। श्रम सौंदर्य का यह वर्णन किसी भी मन को स्वतः आकर्षित कर लेता है-

''धान रोपती ननद-भाभियाँ सपनों को फिर बुनती हैं
फसल बेंचकर झुनझुन्ना दूँ नन्हकू को बाजारों से

सोंधी हो गयी मन की धरती साजन के मनुहारों से॥''

आज के समाज से अपनत्व का छय निश्चित रूप से चिंताजनक है। उससे कहीं अधिक चिंताजनक बचपन का खो जाना है। डॉ संध्या सिन्हा जी की लेखनी इन चिंताओं से भी रूबरू होती है। दुख में भी सुख और प्रसन्नता खोजती है और उस हासिल को छोड़ना भी नहीं चाहती----

‘‘पर क्या बताऊँ
मुझे बीमार होना अच्छा लगता है -
xx xx xx xx
बच्चों के अनबोले दुलार की फुहार
फोन पर बरसता अपनों का प्यार
ओह--- पर सबसे अच्छा लगता है
तुम्हारा मासूम सा दुलार -‘कैसी हो?’
इससे ज्यादा तुम्हें आता भी कहाँ है कुछ?’’

भले ही कवियित्री सारे झंझावतों से टकराती है,चिंता करती है,दुखी होती है, प्रश्न खड़े करती है किन्तु उसने संभावनाओं और उम्मीद का दामन छोड़ा नहीं है। शायद यही भारतीयता का जीवन दर्शन है-

‘‘कुछ हासिल अब भी बाकी है
एक साहिल अब भी बाकी है
मेरी जान तू सँवर,
सँवर, अभी और सँवर .... ।’’

डॉ संध्या सिन्हा का रचना संसार संभावनाओं से भरा-पूरा है, जिसके विविध आयाम इस संग्रह में उजागर हुये हैं। लेकिन अभी बहुत कुछ सामने आना बाकी है। कविता संग्रह में कहीं-कहीं प्रूफ की त्रुटियाँ जरूर हैं लेकिन उसका कारण कवियित्री अपनी बात में स्वीकार करती दिखाई पड़ती है। सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन ने अपना बेहतरीन देने का पूरा प्रयास किया है, इसमें कोई संसय नहीं है।समाज को सोचने पर विवश करता यह संग्रह ‘बोलने दो’ पाठक को भी सोचने और बोलने को उत्प्रेरित जरूर करेगा और पाठक वर्ग का स्नेह लेने में स क्षम होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

पुस्तक- बोलने दो
कवियित्री- डॉ संध्या सिन्हा ‘सूफी’
मूल्य- रु २००.००
प्रकाशन- सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

पर्यावरण बचाओ

भारी संकट आन पड़ा है,
धरती कौन बचायेगा।
मानवता का नाम निशां तब,
पृथ्वी से मिट जायेगा।1

बढ़ा प्रदूषण धरती पर यूं,
जनता सारी त्रस्त हुई।
महामारियां जन्म ले रहीं,
मानव क्या बच पायेगा।2

नंगी होती धरा नित्य दिन,
पर्वत जंगल का हो विनाश।
खातिर आने वाली पीढ़ी ,
पादप कौन लगायेगा।3

ग्रसित दिशाएँ धूल गर्द से,
लेना सांस हुआ भारी।
पीकर रोज विषैली गैसें,
कैसे स्वास्थ्य बनायेगा।4

बन अज्ञानी नाश कर रहे,
भूमंडल की थाती को।
पर्यावरण बचाएं कैसे,
आखिर कौन बतायेगा।5

जिधर नजर जाती है दिखता,
ढेर प्लास्टिक कचरे का।
युग युग तक नष्ट नहीं होगा,
कैसे मुक्ति दिलायेगा।6

जागरूक होना है सबको,
आने वाले खतरे से।
नहीं सीख पाया यदि खुद ही,
तो कैसे सिखलायेगा।7

अगर सभ्यता आज न चेती,
धरा नष्ट हो जायेगी।
पृथ्वी पर रहता था मानव,

किस्सा कौन सुनायेगा।8

नदियां व्याकुल दिन प्रतिदिन हैं,
पाप धो रहीं वो सबके।
कितने पाप किये मानव ने,
उसको को कौन गिनायेगा।9

कोई सीमा नहीं बची है,
संसाधन को दुहने की।
शोषण जितना आज करेगा,
वही कभी पछतायेगा।10

अधिक वेदना सह न सकूँ मैं,
जुल्मों का अब अंत करो।
बदले में विध्वंस करूं तो,
कैसे मुझे मनायेगा।।11

स्वच्छता

स्वच्छ रहे जब जीवन अपना, पूरा होगा हर इक सपना।
सर्व मलिनता दूर करेंगे, जन जीवन को स्वच्छ करेंगे।1

वातावरण स्वच्छ जब होगा, रोग दोष तब कहीं न होगा।
साफ सफाई बहुत जरूरी, यदि करनी हर इच्छा पूरी।2

अगर स्वच्छता नहीं रहेगी, फिर तो दूषित वायु बहेगी।
सांस भला हम लेंगे कैसे, जियें जिन्दगी जैसे तैसे।3

मार प्रदूषण की है पड़ती, तभी धरा घुट घुट कर मरती।
आज मुहाल हुआ है जीना, अगर श्वास लें जलता सीना।4

धूल गर्द अरु गैस विषैली, सभी दिशाओं में है फैली।
रुग्ण हो रहे तनमन सबके, रहें प्रदूषण से हम बचके।5

अगर स्वथ्य रहना है हमको, तो सचेत होना है सबको।
फिर से अलख जगानी होगी, सबको शपथ उठानी होगी।6

हटे गन्दगी रहे न रोगी, कहते हर दिन मोदी योगी।
नियत जगह पर कूड़ा डालें, अब से सब मिल मुहिम चला लें।7

सामाजिक कर्तव्य निभाएं, घर बाहर सब स्वच्छ बनाएं।
धूल गर्द जब नहीं रहेगी, स्वच्छ हवा भी तभी बहेगी।8

काया अगर निरोगी रखना, मंत्र स्वच्छता का सब जपना।
वायु स्वच्छ जब हमें मिलेगी, बीमारी तब कहां टिकेगी।9

यज्ञ सफल होगा जब अपना, गांधी का पूरा हो सपना।
अगर नागरिक सजग रहेगा,भारत का तब नाम बढ़ेगा।10

प्रवीण त्रिपाठी,

सजल

१

समय कहीं पर अटक गया है
मन भी शायद भटक गया

यह कैसा अपना ही साया
स्वयं मुझी को गटक गया है

नहीं मुझे आ रहा छिपाना
दृग से आंसू छलक रहा है

यादों को न कुरेदो, देखो
ह्दय हलाहल गटक गया है

मेरा कद कुछ' बडा हो गया है
सबके मन में खटक गया है

२

मन मेरा भटकता है'क्यों'
यादों मे 'सुबकता'है क्यों'

थम गई हैं ये धड़कने

दिल ऐसा धड़कता है क्यों

बहुत घाव दिए अपनों'ने
व्यर्थ मन बहकता है क्यों

तनिक आहट से हूँ डरती
पत्ता ये खड़कता है क्यों

बातों में'है तेरी गंध
फूल फिर महकता है क्यों

डा गीता शर्मा,
रायपुर छत्तीसगढ

किस्सा

बीता हुआ
नहीं किस्सा
मैं तो हूं
सृष्टि का
आधा हिस्सा
चलती है पीढ़ियां
मुझसे ही
पलता है भ्रूण भी
मुझ में ही
आंचल से दूध
मैंने ही है पिलाया
पर क्यों
हर बार
मुझे ही है दबाया
आधा हिस्सा
होने पर भी
क्यों मुझसे हो नाराज
क्या कहीं
यह प्रलय का
तो नहीं है
आगाज
गर मैं बन गई
सच में ही
एक किस्सा
तो फिर
किससे बांटोगे
अपना आधा हिस्सा।

डा० संजीव कुमारी
पर्यावरणविद व लेखिका
पानीपत , हरियाणा, भारत

हिंदी: केवल भाषा नहीं बल्कि पूरी संस्कृति

सृष्टि के संचालन में संचार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है अतः संचार के माध्यम का सशक्त होना अति आवश्यक है। जब दो असमान तत्वों के बीच संचार होता है तो उसका माध्यम अनुभव या भाव-भंगिमा इत्यादि हो सकते हैं।

जब समान तत्वों के बीच संचार की बात होती है, विशेष तौर से मनुष्य में, तब भाषा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही कारण है कि शिशु से भी संवाद करते समय व्यक्ति अपनी मूल भाषा का प्रयोग करता है। शिशु को भले ही वर्णमाला का ज्ञान ना हो किंतु निरंतर हो रहे संवादों से उसे वस्तुओं को पृथक शब्दों के साथ साम्यता स्थापित करने का अभ्यास हो जाता है तथा इस प्रकार उसके अंदर भाषा का विकास होता है। यह एक चरणबद्ध प्रक्रिया है तथा आगे के चरणो में वह वर्णमाला का अभ्यास करता है तथा भाषा को लिपियों के माध्यम से श्रव्य के साथ-साथ दृश्य भाव में भी अंगीकार करता है। किंतु भाषा का क्षेत्र केवल संचार माध्यम तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि भावाभिव्यक्ति का यह माध्यम व्यापार, चिकित्सा, विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए संस्कृति एवं विकास का अंग बन जाता है।

आज भारतीय समाज ने वैश्विक स्तर पर बहुत प्रगति की है तथा लगभग हर देश के साथ अच्छे व्यापारिक एवं राजनैतिक संबंध स्थापित किए हैं। जाहिर सी बात है कि इस कार्य में अन्य देशों की भाषाओं को अपनाने की शैली विकसित की गई है। यह कार्य इसीलिए सफलतापूर्वक हो सका है क्योंकि हमारी संस्कृति प्रत्येक भारतीय के जीवन में वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मजबूती से स्थापित करती है। यह कार्य केवल एक भाषा का चमत्कार नहीं है वरन् जब भाषा में संस्कृति घुली हुई हो, आदर्शों की भावना हो, जीवमात्र हेतु सम्मान का भाव हो, मर्यादाएं हो, स्वतंत्रता हो, विनम्रता हो तभी नागरिकों में इतनी शक्ति आती है कि वे विश्व बंधुत्व की भावना लिए अन्य संस्कृतियों एवं भाषाओं का सम्मान करते हुए उनके मध्य प्रगाढ़ संबंध बना सकते है। हमारी हिंदी में यह सुंदरता नैसर्गिक रूप से रची बसी है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हिंदी केवल संचार का माध्यम न होकर अपने आप में पूरी संस्कृति है। यही कारण है कि एक आम हिंदीभाषी के अंदर अन्य भाषाओं एवं संस्कृतियों के प्रति सम्मान का भाव है। वैश्विक भाषा बन चुकी अंग्रेजी को भी हिंदी से प्रेम रखने वाले उसी भाव से स्वीकार कर पाते हैं। यह हिंदी की शाश्वत सुंदरता है। हिंदी भाषियों के हृदय में श्रेष्ठता का अहंकार नहीं होता बल्कि आदर एवं विनय उनके सहज स्वभाव में सम्मिलित होता है। हिंदी के जितने प्रमाणिक ग्रंथ हैं वे व्यक्ति की आंतरिक दृष्टि को उनकी चेतना से जोड़कर व्यक्ति के सहज स्वरूप का दर्शन कराने की क्षमता रखते हैं। जब व्यक्ति के अंदर श्रेष्ठता का अहंकार होता है तब वह बाहरी नेत्रों द्वारा दूसरों के दोष एवं आत्मप्रशंसा में अपना जीवन व्यर्थ कर देता है। ऐसा जीवन पूरी तरह दिखावटी होता है तथा झूठी श्रेष्ठता के दिखावे के कारण व्यक्ति के अंदर अनर्गल संचय की प्रवृत्ति विकसित होती है जिसके कारण मान-सम्मान एवं मर्यादाओं की परवाह किए बिना वह कोई भी अनैतिक कार्य करने में नहीं हिचकता।

भाषा केवल कुछ अक्षरों, मात्राओं, शब्दों एवं वाक्यों का समुच्चय नहीं है बल्कि यह मानवीय सभ्यता का प्रथम चरण है। अतः इसमें मानवीय संवेदनाओ की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। जो मधुरता का भाव मां, अम्मा, माई, बाबूजी, पिताजी, भइया, दीदी जैसे शब्दों में आता है वही भाव मह्म, पा, ब्रो या सिस जैसे शब्दों में नहीं मिलता। भारतीयों के लिए वैश्विक भाषा को संचार माध्यम के रूप में अपनाना बहुत अच्छा है क्योंकि इसमें देश की प्रगति निहित है।

विकास आवश्यक है किंतु अपनी जड़ों की कीमत पर किया हुआ विकास स्वयं के ही अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है। हम तभी तक सशक्त हैं तथा दूसरों के साथ सक्षम संवाद करने में समर्थ है जब तक हम अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं अन्यथा हमारा जीवन कटी हुई पतंग के समान है जो भले ही जमीन से बहुत ऊंचा दिखाई दे रहा हो किंतु उसके अस्तित्व का भविष्य अनिश्चित है - वह पेड़ों की झाड़ियों में फंसकर नष्ट हो सकता है, नदी नालों में बहकर अपनी लीला समाप्त कर सकता है अथवा बच्चों की छीनाझपटी के दौरान फट सकता है। उसके पुनः आकाश तक पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है कि किसी सुरक्षित हाथ में पड़े जो उसे पुनः डोरी से जोड़ कर उसे ऊंचाई तक पहुंचाने हेतु प्रयास करे।

हिंदी संवेदनशील है। हिंदी में दूसरी भाषाओं का सम्मान है यही कारण है कि इतनी सशक्त भाषा होने के बावजूद हिंदी अन्य भाषाओं जैसे अंग्रेजी, उर्दू, सिंधी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला इत्यादि के शब्दों को भी सहजता से स्वीकार कर लेती है। हमारा दायित्व है कि हिंदी की इस विशालता एवं विराटता को नमन करें तथा इसका प्रयोग करने में गर्व का अनुभव करें। हिंदी हमारी संस्कृति है, हिंदी हमारा गर्व है, हिंदी हमारी धरती है, हिंदी हमारा आकाश है, हिंदी हमारा जीवन है, हिंदी हमारी चेतना है, हिंदी हमारी स्वांस है, हिंदी हमारा प्राण है, हिंदी हमारी जागृति है।

- दीपक श्रीवास्तव

आचार्य संदीप त्यागी की कविताएँ

१

तुषारापात स्वप्नों पै मेरे तुम क्या करोगे ?
उष्ण उच्छवास से हिमशैल तक पिघलाये मैंने ।।

नाव तो नाव, हैं मल्लाह तक भी डूब जाते
मगर पत्थर जहाजों की तरह तैराये मैंने ।।

किसी सम्राट के आगे झुकाऊँ शीश क्यों मैं ।
हृदय सम्राट पद सम्मान में हैं पाए मैंने ।।

जरा आकाशगंगाओं पे दृष्टि तो घुमाओ ।
अरे द्युलोक तक पै विजय-ध्वज लहराए मैंने ।।

खुले आकाश में अनथक उड़ूँ बिन पंख देखो
अतुल उत्साह आशा पंख से फैलाये मैंने ।।

असंभव शब्द मेरे कोश में मिलना असंभव
कायरों के लिए कभी गीत ना गाए मैंने ।।

बवण्डर ये बुझायेंगे भला संदीप को क्या
चिराग ए इश्क तूफाँ में अरे दमकाये मैंने ।।

अँधेरे टिक नहीं सकते मेरी मौजूदगी में
उजाले ही उजाले हैं अरे बिखराय मैंने ।।

२.

जिंदगी की ख़्वाहिश में रोज रोज मरते हैं।
अरमां गरीबों के आँसू बन के झरते हैं ।।

मुश्किलें हजारों ही मुफलिसों पे आती हैं ।
खरे आजमाइश पै फिर भी उतरते हैं ।।

बिजलियाँ नशेमन पे आसमां गिराता है।
तिनके बन परिंदे ये हौसलों के धरते हैं ।।

धूप झांकती ही नहीं बदनसीब झुग्गी में ।
कैद ऐसा सूरज को राजमहल करते हैं ।।

रात हसीं पूनम की भूख को चिढ़ाती है।
अक्स रोटियों के गोल चांद में उभरते हैं ।।

मकबरे अमीरों के खूब जगमगाते हैं ।
बुझे बुझे बेबस के रातदिन गुजरते हैं ।।

जन्नत में मौज सजा दोजख में मिलती है।
अच्छे बुरे बर्ताव खुशी खौफ भरते हैं।।

आचार्य संदीप कुमार त्यागी 'दीप'
प्रो सेरीडान कॉलेज
कनाडा

साहित्य अकादमी : इतिहास के झरोखे से

साहित्येइतिहास के साहित्यिक गलियारों में पुनः एक बहस चल निकली है कि साहित्य-सेवियों के सृजन से जन्मीं रचनाओं को पुरस्कृत करने वाली संस्थाओं की प्रासंगिकता का यथार्थ आधार आखिर क्या है?

सुविज्ञों की पूरी एक जमात इसे प्रमुख मुद्दा बनाकर - पत्र-पत्रिकाओं, अखबारी-लेखों, सेमिनार-संगोष्ठियों, वार्ता-सम्मेलन एवं साक्षात्कारों के माध्यम से इस पर चिंतन-मनन कर रही है। इस विमर्श-प्रक्रिया के दौरान देश की समस्त प्रमुख साहित्यिक संस्थाओं में साहित्य अकादमी के प्रदेय पर शंका नहीं की जा सकती। हमारा यह विचार किसी **"Impressionism"** (प्रभाववाद) से ग्रसित नहीं है अपितु इसके पार्श्व में कुछ गूढ़ ठोस आधार (**Base**) अप्रत्यक्षतः वर्तमान हैं।

अतीत में जाकर भारतीय इतिहास के पन्ने पलटने पर यह ज्ञात होता है कि भारतीय-आजादी से काफी समय पूर्व ही ब्रिटिश शासन के दौरान साहित्य हेतु एक राष्ट्रीय संस्था (**National Organization**) के निर्माण का प्रस्ताव विचाराधीन पड़ा था। रहयल एशियाटिक सोसाइटी अहफ बंगाल (15 जनवरी 1784) यह यह प्रस्ताव 1944 ई. में भारत सरकार द्वारा सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया था! भारत सरकार द्वारा यह दिशा-निर्देश दिए गए थे कि विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रोत्साहन हेतु एक 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक ट्रस्ट' का गठन किया जाना चहिए। उस दौरान 'ट्रस्ट' के अंतर्गत साहित्य अकादमी सहित कुल तीन अकादमियाँ शामिल थीं। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत पश्चात् सरकार द्वारा उपर्युक्त दिशा में सार्थक कदम बढ़ाते हुए विभिन्न बैठकों का आयोजन आरंभ कर दिया गया। अंततः सर्वसम्मति के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर तीन अकादमियों के गठन का निर्णय लिया गया। अकादमियों का प्रारूप इस प्रकार नियत किया गया था - प्रथम - साहित्य हेतु द्वितीय - दृश्यकला हेतु तथा तृतीय-नृत्य-नाटक एवं संगीत के लिए। इसके पश्चात् कई बुद्धि जीवियों के मध्य आपसी मतभेद के चलते यह कार्य दीर्घावधि तक लंबित पड़ा रहा। अंततः तत्कालीन शिक्षामंत्री अब्दुल कलाम आजाद द्वारा इस समस्या का निराकरण किया गया। परिणामस्वरूप भारत सरकार द्वारा द्रुत गति से साहित्य अकादमी (संकल्प सं. एफ-6-4/51 जी 2(ए) दिनाँक दिसंबर 1952) नामक राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था की स्थापना का निर्णय लिया गया तथा इसका विधिवत उद्घाटन स्वयं भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 ई. में जनहित हेतु कर दिया गया।

साहित्य अकादमी का मुख्य ध्येय - उच्च साहित्यिक मानदण्ड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना और उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना नियत किया गया था। निश्चित रूप से साहित्य अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पंजीकरण (7 जनवरी 1956) के उपरांत अपने लक्ष्य की पूर्ति बखूबी की गई है!

दरअसल ... साहित्य अकादमी ने साहित्य में भाषिक असमानता की दूरी को पाट लिया है। संस्था द्वारा संविधान में परिगणित 22 भाषाओं में सृजित साहित्य के अतिरिक्त अंग्रेजी और राजस्थानी साहित्यिक रचनाओं को भी प्रतिवर्ष प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

साहित्य अकादमी पुस्तकालय ने 24 भाषाओं में रचित साहित्य-संग्रह को कंप्यूटरीकृत-कर विभिन्न ज्ञान-इच्छुओं हेतु सुगम बनाया है। अकादमी के बेंगलुरू तथा कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों में भी पुस्तकों की समृद्धता देखते ही बनती है।

साहित्य अकादमी द्वारा भारत की भाषाई विविधता और बहुलता के साहित्यिक संवर्द्धन हेतु अग्रिम प्रयास किए जाते रहे हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर पर सात विभिन्न भाषा-परिवारों से संबंधित 1600 से अधिक भाषाएँ संप्रेषित होती हैं। हमारी वाचिक परंपरा स्वयं 3500 वर्ष प्राचीन है और इसका अस्तित्व आज भी लिखित एवं व्यावहारिक रूप में अखिल भारतीय स्तर पर व्याप्त नजर आता है। साहित्य अकादमी द्वारा इस विशाल साहित्यिक संपदा का दस्तावेजीकरण, विश्लेषण, अभिलेखीकरण एवं डिजिटलीकरण (**Digitalization**) करने का प्रयास किया गया है!

साहित्य अकादमी द्वारा उपर्युक्त दिशा में प्रारंभ किए गए यह प्रयास काफी हद तक सफल सिद्ध हुए हैं! साहित्य अकादमी का वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र इन भाषाओं में उपलब्ध मूल वाचिक पाठ का आडियो-वीडियो अभिलेखिकरण प्रस्तुत करने हेतु प्रयासरत है तथा इसके व्यापक विवरण हेतु इसके अंग्रेजी अनुवाद के लिखित रूप तैयार कर रहा है।

साहित्य अकादमी द्वारा अग्रसरित उक्त कदम भविष्य की दृष्टि अत्यंत सराहनीय प्रयास है...। निश्चित रूप से यह हमारे साहित्यिक इतिहास में बहुमूल्य सामग्री का समावेश करने में कारगर कदम सिद्ध होंगे। अतः इनके फलस्वरूपः हमारी साहित्यिक विधा (साहित्यिक आलोचना) भी समृद्धता को प्राप्त होगी!

साहित्य-सेवा हेतु साहित्य अकादमी के क्षेत्रिय कार्यालय कलकत्ता, चेन्नई तथा मुंबई में स्थित हैं। कलकत्ता कार्यालय - असमिया, बांग्ला, बोडो, मणिपुरी तथा ओड़िया के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा तिब्बती भाषा साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन एवं प्रोत्साहन कार्य वहन करता है। बेंगलुरू कार्यालय अंग्रेजी साहित्यिक कृतियों के अतिरिक्त कन्नड़, मलयालम, तमिल तथा तेलुगु भाषी साहित्य को संवद्धित करता है तथा मुंबई कार्यालय हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त गुजराती, कोंकणी, मराठी तथा सिन्धी भाषी साहित्य के गुणवत्ता विस्तार का पथ-प्रदर्शित करता है!

यदि पिछले 4-5 दशकों पर गौर फरमाया जाए तो साहित्य अकादमी द्वारा प्रत्येक भाषा-भाषी साहित्यिक क्षेत्र में जीवट कदम उठाए गए

अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष भारत की प्रमुख भाषाओं (मान्यता प्रदत्त) में रचित सर्वोत्कृष्ट कृति को पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित किया जाता रहा है।

साहित्य अकादमी द्वारा भाषा सम्मान (1966) की स्थापना, इस दिशा में सराहनीय कदम है। अकादमी द्वारा उत्कृष्ट साहित्यानुवादों को वार्षिक पुरस्कार प्रदान-कर पुरस्कृत-प्रोत्साहित किया जाता रहा है। जिस कारण, इस क्षेत्र में उभरती नवीन प्रतिभाओं को पंख फैलाने हेतु नवीन आकाश प्राप्त हुआ है।

भारत एक बहुभाषिक तथा बहुभाषायी देश के रूप में विश्व-विख्यात है। ऐसे में साहित्य अकादमी का अग्रिम उद्देश्य अपनी परिसीमा को 'मान्यता प्राप्त भाषाओं' तक ही सीमित न र खकर इससे परे 'गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं' तथा सृजनात्मक साहित्य सहित शैक्षिक अनुसंधान प्रोत्साहन तक विस्तृत करना है।

निःसंकोच यह बहुभाषी साहित्य को प्रोत्साहन देने की दिशा में उल्लेखनीय कदम है। वर्तमान समय में यह सम्मान प्रतिवर्ष 3-4 साहित्य प्रतिभाओं को प्रदान किया जाता है। श्री धरीश्रण मिश्र से प्रारंभ यह परंपरा आज श्री गगनेंद्र नाथ सम विद्वतजनों तक विस्तार पर चुकी है।

साहित्य अकादमी अनुवाद सम्मान सर्जनात्मक साहित्य एवं लेखन को प्रोत्साहित करने का हेतु एक सार्थक कदम है। वर्ष 1989 से प्रारंभ यह सम्मान साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं के श्रेष्ठ अनुवादकों को प्रदान किया जाता रहा है। इस प्रकार के आयोजनों से नवीन परिश्रमी अनुवादकों तथा साहित्यिक कृ तियों की संख्या में निरंतर इजाफा हुआ है। विगत वर्ष (2018) प्रभात त्रिपाठी तथा सुबाश्री कृष्णास्वामी को दिया गया सम्मान इस मत की पुष्टि करता है।

अत्यंत विलंब के साथ ही सही किंतु साहित्य अकादमी द्वारा तकरीबन 5-6 दशक पश्चात् बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा (स्थापना) साहित्य अकादमी द्वारा उठाया गया एक अद्भुत कदम है। इसके माध्यम से 'चंपक', 'लोटपोट' और 'चंदामामा' के पश्चात् लगभग थम-सी-चुकी यह परंपरा पुनः पुर्नजीवित हो चली है! प्रकाश मनु कृत ''एक था ठुनठुनिया'' (उपन्यास) तथा गोविंद शर्मा कृत ''काचू की टोपी'' (कहानी) पाठकों के जेहन में भूलाए नहीं भूलती।

साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य सर्जन हेतु प्रत्येक वर्गीय योगदान की सुनिश्चितता स्थापित-कर नवीन कीर्तिमान स्थापित किया गया है। बाल साहित्य पुरस्कारों के पश्चात् अग्रिम प्रयास के तौर पर युवाओं द्वारा सृजित साहित्य को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार की घोषणा प्रशंसनीय प्रयास है।

उमा शंकर चौधरी कृत ''कहते हैं तब शहंशाह सो रहे थे'' (कविता संग्रह), इंदिरा दांगी कृत ''हवेली सनातनपुर'' (उपन्यास), नीलोत्पल मृणाल कृत ''डार्क हॉर्स-एक अनकही दास्तां'' (उपन्यास) सहित हाल के समय में सुर्खियों में रही अनुज लुगुन कृत ''बाघ और सुगना मुंडा की बेटी'' (कविता) इसका साहित्यिक प्रमाण है।

यूँ तो ..... कोई भी 'संस्था' अथवा 'सम्मान' साहित्य को सम्मानित करने की योग्यता अंतर्निहित रखता है, ऐसा कहने भर में अतिव्याप्ति दोष मानना चाहिए। चूँकि पुरस्कार तो मात्र - 'साधन' है जबकि रचना और लोकमंगल ही प्रमुख 'साध्य' कहलाने के अधिकारी होते हैं किंतु यह कहना 'अत्युक्ति' न होगी कि अपनी 6-7 दशकीय सफल यात्रा के दौरान साहित्य अकादमी ने अखिल भारतीय स्तर पर साहित्य को संवद्धित-प्रोत्साहित करने का जीवट प्रयास किया है। यह प्रमुख कारण भी रहा कि आज से कई दशक पूर्व एक 'भारतीय आत्मा' (माखनलाल चतुर्वेदी) के हृदय से निकली राष्ट्रधर्मिता (हिमतरंगिनी) ने आज वर्तमान समय में विमर्श (पोस्ट बॉक्स नं. 203 - नाला सोपारा) का रूप अख़्तियार कर लिया है। यह जीवंत प्रमाण है कि साहित्य अकादमी ने अपने संकल्प (साहित्य-सेवा) में विकल्प का रिक्त ... शेष नहीं छोड़ा।

अतः कहना अनुचित न होगा कि साहित्य अकादमी साहित्य का ''सिरमौर'' सम्मान है...।

विवेक शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग एवं विदेशी भाषा विभाग
सेंट स्टीफेंस कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

पत्नी और आतंकवाद

मुझे लगता है और मेरी बात से आप भी १०१ फीसदी सहमत होंगे ही कि सबसे बडी आतंकवादी होती है पत्नी।कितने आतंकवादी हैं जो शादीशुदा हैं? वही आतंकवादी बडा और श्रेष्ठ आतंकवादी माना जाता है जो ज़्यादा से ज़्यादा बीबियां संभाल लेता है।जैसे जन्नतनशीन लादेन साब।'लादेन साब' इसीलिए आतंकवादियों के सिरमौर थे क्योंकि दर्जनों बीबियों के होते हुये भी अफगानिस्. तान -पाकिस्तान की पहाडियों में मस्ती से घूमते थे ।अपनी मरजी के मालिक थे .इतनी बीबियों को सफलता से संभाल लेने के हुनर ने ही उन्हे इतना हिम्मती और आत्मविश्वासी बना दिया था कि सीधे अमेरीका की नाक, मेरा मतलब 'वर्ल्ड ट्रेड टावर ' और 'पेंटागन ' पर ही विमान घुसेड दिये .उत्तरी वजीरिस्तान मे जन्न. तनशीन हुये हकीमुल्ला महसूद साब और उनसे पहले इस दुनिया दृ ए दृफानी से कूच कर गये बैहतुल्ला महसूद साब की भी मैं बडी इज्ज़त करता हूं क्योंकि आधा दरजन बीबियों और कई दर्जन बच्चों के साये में रहने के बाद भी बाकी दुनिया को---और महाबली सर्वशक्तिमान अमरीका-तक को दहशत के साये में जीने के लिये मजबूर कर देने वाले इन जन्नतनशीन आतंकवादियों की हिम्मत को कोई कुंवारा चाह कर भी समझ नहीं सकता .नया नया शादी शुदा तो बेवकूफी या अहमकपना ही मानेगा इनके कारनामो को .पर सही मायनों में समझ वही सकता है जिसकी शादी को कम से कम ८-१० साल हो गये हों ।नया -नया शादी शुदा तो अपनी पत्नी को चंद्रमुखी , जुही की कली और गुलाब की डली से इतर मानने को तैयार ही नही होता और जब हकीकत समझ में आती है तब तक इतनी देर हो चुकी होती है की इहलोक और परलोक दोनों में सुधार की गुंजायश ही नहीं रहती .जब आलू -प्याज के रेट सुनकर आये चक्कर पत्नी के चक्करों को देखकर सहम जाते हैं . --किनारा कर लेते हैं। दूसरी बार जब पत्नी का खट्टा खाने का मन करती है तो दिल बैठने लगता है और अतिउत्साह में आकर किसी रोज अतिरिक्त प्यार लुटाने के प्रतिफल में पत्नी कहीं इमली या अचार की फरमाइश कर बैठती है तो कलेजा कांपने लगता है और मन से नार्मल डिलीवरी हो जाने के लिए करुण-विगलित स्वर में स्वतः ही प्रार्थनाएं फूटने लगती हैं . लेबर पेन की शुरुआत होते ही एटीएम पिन भूल भूल जाने का मन करने लगता है और लेडी डाक्टर का चेहरा सूर्पनखा और तड़का की याद दिलाता है तब सुन्दर से सुन्दर पत्नी फिदायीन नजर आती है . सूत्र बताते हैं कि अभी कुछ दिन पहले ही एक फांसी की सजा पाए आतंकवादी को जब यह पता चला कि एक उसे भले ही जेल में ११ साल हो गये हों पर उसकी पत्नी को माँ बने १७ साल ही हुए हैं तो उस गैरतमन्द ने सुप्रीम कोर्ट के जजों से दरख्वास्त कर अपने लिए खुद ही फांसी मांग ली .ये होता है पत्नी और पत्नी के कारनामों का आतंक ।हमारे प्राचीन ग्रन्थ भी पत्नियों के आतंकवादी कारनामों से भरे पड़े हैं . मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के पिताश्री यदि तीन शादियाँ न करते तो रामायण ही नहीं रची जाती.

बिचारे अयोध्या नरेश दशरथ तो पत्नी को वरदान देकर अंततःअयोध्या का राजपाट छोड़कर इंद्र के सिंहासन के अधिकारी हो गये.पत्नी के खुले केशों को रक्त से सज्जित और सिंचित करने के लिए भीमसेन ने दुःशासन के सीने को चीर दिया वरना खुद भीम के साथ वही होने वाला था जो उसने दुशासन के साथ किया . पत्नी के वचनों की मार तलवार की धार से भी ज्यादा पैनी और गहरी होती है ना जाने कितने कालिदास विद्योत्माओं के कर्कश वाक् वाणों.से ही उपजे हैं .कितने रामबोलाओं को तुलसीदास बना देने का श्रेय जिव्हा को हथियार की तरह इस्तेमाल करने में प्रवीन रत्नावलियों को ही है. पहले तो किसी कन्या को पत्नी बनाकर लाना ही हिम्मत का काम है और हमारे देश के बड़े बड़े नेता दृअभिनेता ऐसी हिम्मत जुटा नहीं पाए . उनकी सारी महानता धरी की धरी रह जाती यदि शादी कर लेते. फिर वे चाहे अपने पूर्व प्रधानमन्त्री परम प्रतापी अटल बिहारी वाजपेयी जी हों या बालीबुड के 'बजरंगी भाई जान ' याने अपने सलमान खान . अटल जी भले ही 'आर-पार' और 'काल के कपाल' पर लिखने का हौसला रखते थे पर कभी शादी करने की हिम्मत नही जुटा पाये।पोखरण में विस्फोट करना आसान है, पत्नी को बर्दाश्त करने से . पूर्व महामहिम कलाम साहब ने कितनी ही अग्नि और पृथ्वी मिसाइल बनायीं पर पत्नी नाम की मिसाइल घर लाने की हिम्मत जुटा नहीं पाए . शादी कर लेते तो नोन,तेल ,लकडी का भाव पता चल जाता ।एक अदद पत्नी और दो अदद बच्चे सारी हेकडी निकाल देते.फिर तीन जोड़ी पेंट शर्ट में काम नही चलता. - एक बार पत्नी की दहशत में जिये आदमी को आतंकवाद से डर नही लगता।जब मुंबई में विस्फोट हुये तो सब मुंबईकरों के जज़्बे को सलाम कर रहे थे पर मुझे बडी हंसी आ रही थी।कितने नादान लोग हैं जो मजबूरी को जज़्बे का नाम दे रहे थे।परिवार और पत्नी की जरूरतों की फेहरिस्त से आतंकित मुंबईकर तो ईर्ष्या कर रहे थे उनसे जिन पर आतंकवादियों ने कृपा की और रोज-रोज की जरूरतों के जाल में छटपटा कर मरने से मजबूर कुछ दर्जन पतियों को मुक्ति प्रदान कर दी।कुछ अदूरदर्शी लोग आतंकवाद को बडा मसला मानते हैं पर मुझे लगता है कि देश की नही विश्व की बहुत सी विकराल समस्याओं का निदान देर -सवेर हमें आतंकवाद में ही मिलेगा।जैसे बेरोजगारी ने हमारे देश के बहुत से युवाओं को आतं. कवाद में ही रोजगार मुहैया कराया हुआ है और इस काम में पाकिस्तान सच्चे पडोसी का फर्ज निभाते हुये हमारी दिलोजान से मदद कर रहा है।भले ही उनके अपने भूखे नंगे तालिबान के यहां ट्यूशन पढाकर गुजारा कर रहे हैं पर वह हमारे नौजवानों को बढिया तालीम दे अव्वल दर्जे का आतंकवादी बनाने में कोई कोर कसर नही छोड रहा है .पाकिस्तान तो कहता है कि उनके यहाँ हमारी शोध संस्था ने भी अपना इंस्टीट्यूट खोला है और बहुत अच्छा काम कर रही है .काश ये सच हो इससे एक तो पड़ोसियों को अच्छी तालीम मिलेगी और हमारे सर से भी कुछ अहसान उतर जायेगा. अहसान तो भाई का भी

चुकाना चाहिये-फिर पाकिस्तान तो अपना पडोसी है।

आतंकवाद से 'जनसंख्या नियंत्रण' भी होता है .कुछ बरस पहले जब भारत सरकार ने जनसंख्या नियन्त्रण की सरकारी कोशिश की तो लोगों ने सरकार को ही उखाड़ फेंका पर आतंकवादी तो बिना अहसान जताए ही सस्ते ,सुन्दर टिकाऊ तरीके से 'जनसंख्या दृनियन्त्रण ' में योगदान देते रहते हैं ।ऐसे में देश की इस विकट समस्या का त्वरित समाधान आतंकवाद में ही है .ये बात आज मैं मान रहा हूं और कल -परसो नहीं तो कुछ-बरसों में आप भी माने ही लेंगे ।आतंकवाद के और क्या क्या फायदे गिनाऊं ?पर चलते चलते यह जरूर कहना चाहूंगा कि ये आतंकवाद हमारा कुछ बिगाड नही पायेगा।हम अमरीका थोडे ही हैं कि एक ९/११ क्या हुआ कि एअरपोर्ट पे सबके कपडे ही उतारने लग गये।इससे एक बात और पता चलती है कि हमारे देश की पत्नियाँ आतंकवाद फैलाने में जितनी माहिर हैं उनके आगे अमरीकन या यूरोपियन पत्नियाँ तो निरी बच्ची हैं वरना यूरोप और अमरीका आतंकवाद से इतना खौफ न खाते . हमे देखो जाने कितने ९/११ और २६/११ हो गये और उन्हे करने वाले जाने सीमा पार कर नौ-दो ग्यारह हो गये पर .हमारा आतंकवाद को बर्दाश्त करने का हौसला कम नही हुआ।अपितु हमने आतंकवाद को जीवन का अंग ही मान लिया है .पत्नी की तरह आतंकवाद में बड़ा साम्य है .... हमारे तो भगवान तक अर्द्ध नारीश्वर हैं और पत्नी से भयाक्रांत हैं फिर हम नराधमो की बिसात ही क्या ?आतंकवाद हमारे लिए इतना परिचित और सहज हो गया है कि अब यदि कुछ दिन तक कहीं से बम फटने की सूचना नही आती तो लगता है कि ये इंटेलीजेंस वाले सारे के सारे नाकारा हो गये हैं--.पता ही नही चलता कि 'आई बी 'और 'रा' आजकल प्रदेशों को कोई 'इनपुट' भेज भी रही है या सब विरोधी पार्टियों का 'आउटपुट' पता करने में ही लगी हैं.ना जाने कितने प्रधानमन्त्री और गृहमंत्री आये गये .सत्ता के शिखर पर जाने कैसी कैसी डिजायन के लोग बैठे और बिठाये गये पर सबका पसंदीदा सम्वाद नहीं बदला.

-''--आतंकवाद को बर्दाश्त नही किया जायेगा ''। कुछ दिन तक कोई आतंकवादी हरकत नहीं होती है तो विदेश मंत्री को चिंता हो जाती है कि बयान का वाला कागज खो गया तो नया टाइप करवाना पडेगा।गृहमंत्री भी सोचने लगते हैं कि शायद आतं. कवादी भी अपनी पुलिस की तरह नाकारा हो गये हैं. पर तभी कही ना कही धमाका करके आतंकवादी सभी को संकट से उबार लेते हैं।आम हिंदुस्तानी भी आतंकवाद को सहन करने की अपनी क्षमता को लेकर आश्वस्त हो जाता है .आतंकवाद का नया झटका झेलते ही अपनी पत्नी और अपने देश पर फख्र महसूस होता है जिन्होंने उसे आतंकवाद के साथ जीने का ,सामंजस्य बिठा लेने का इतना आत्मविश्वास बख्शा है कि उसे परवेज मुशर्रफ की परमाणु बम की धमकी सुरेन्द्र शर्मा का चार लाईना लगने लगी है . ये पत्नी के आतंकवाद का ही प्रताप है कि अब आतंकवाद से हमारे देश और देश वासियों को झूठे भी भय नही है .अब तो घर से दफ्तर तक अघोषित आतंक के साथ जीने में मजा आने लगा है उसे-.क्योंकि,भ्रष्टाचार, बेरोजगारी महंगाई ,कुंठा ,संत्रास का एकमुश्त उत्तर है आतंकवाद .इसलिये डरे नही वरन स्वागत करें आतंकवाद का क्योंकि वह है पत्नी की ही तरह आपके साथ सदैव यत्र-तत्र -सर्वत्र।

अरविन्द पथिक
आकाशगंगा अपार्टमेंट
वसुंधरा,गाजियाबाद

नेताओं की भर्ती...

चुनाव हुए। होने ही थे। कोई विकल्प भी नहीं। चुनाव होना जनता की नियति है। धड़ाधड़ चुनाव होना देश की एकमात्र प्रगति दिखाता है। निपट गए चुनाव। उनकी पार्टी की करारी हार हुई। न जाने हार हमेशा करारी क्यों होती है। खैर हुई तो हुई। होनी को कौन टाल पाया है?अब पार्टी के अंदर विश्लेषण चल रहा है। आखिर क्यों यह हार हुई? चूक कहाँ हुई? बहुत माथापच्ची हुई। बहस हुई। कई नेता इधर-उधर हुए। कइयों को बदहजमी हुई। निष्कर्ष यह निकला कि आलाकमान ने चुनाव पूर्व जो निर्णय लिए, वो आत्मघाती साबित हुए। किसी लालच मे आकर 'साफ-सुथरी' छवि वाले लोगों को भर्ती कर लिया था। जनता को नहीं पचे ये उम्मीदवार। सो हो गयी हार। अब बैठो चिया के। पता था कि जनता को बाहुबल की आदत है। शराफत के उजले कुर्ते मे भ्रष्टाचार की कालिख को ढका ही देखना चाहती है जनता। नए लोग, उसपर एकदम साफ सुथरे पर कोई कैसे भरोसा करे? ये जनता पानी मिला दूध पीने की आदि है। शुद्ध दूध पीने से दस्त लगना लाजिमी है। अपने पैरों पे कुल्हाड़ी नहीं चलाती। सो कर दी वोट की चोट। पड़ गयी मार। डालो अब ईमानदार का आचार।

रात गयी। बात गयी। पार्टी मे तय हुआ कि एक इंटरव्यू पैनल का गठन किया जाएगा। पैनल नेतागिरी के प्रतिभागियों के लिए कठिन मापदंड निर्धारित करेगा। इंटरव्यू की प्रक्रिया अधिक सख्त करेगा। नए नेताओं की भर्ती प्रक्रिया शुरू हुई। अखबारों मे विज्ञापन निकला दृ 'अगले चुनाव हेतु पार्टी मे बम्पर भर्ती। आवश्यकता है योग्य व अनुभवी पुरुष एवं महिलाओं की। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें- पार्टी कार्यालय, सिविल लाइंस, मंत्री टल्लीमल के बंगले और बाबा जिस्मानी के क्लीनिक के बीच मे।

भारी भीड़ उमड़ पड़ी। प्रांत के कोने-कोने से लोग आए। कुछ युवा। कुछ अधेड़। कुछ लोग अपना एक पाँव कब्र मे छोड़ कर आए थे। बेरोजगारी की वर्षा मे आदमी राजनीति की छतरी ढूँढता है। एक बार सेट हो जाए। फिर दूसरों की छतरी मे भाले घुसेड़ेगा। भीड़ अधिक होने के कारण, माहौल मे अफरातफरी सी होने लगी। पैनल के नेता खुश हुए। नेताओं को अफरातफरी से बड़ा लगाव होता है। स्वयं को संभालते हुए बाहर आए। आपस मे गुफ्तगू हुई। माइक हाथ मे थामा। थोड़ी जान आई। पूरे करियर मे इनके पास कई बार, कई 'जानें' आती हैं। फिर भी कमी बनी रहती है। पैनल के एक नेता बोले, 'देखिए, हमे खुलापन पसंद है। अतः इंटरव्यू हम खुले मे ही करेंगे। कुछ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'आप राजनीति मे क्यों आना चाहते हैं? विकल्प हैं- (1) जनसेवा के लिए (2) देश बदलने हेतु (3) तन-मन की सेवा (4) स्वयं की हालत बदलने हेतु।'

जिनका उत्तर '1* है, वे बाईं ओर आ जाएँ। जिनका उत्तर '2* है, वे दाईं ओर आ जाएँ। जिनका उत्तर '3* या '4* है, वे यथास्थान जमे रहें।

आधे से अधिक युवक-युवतियाँ बाईं ओर आ गए। कुछ जोशीले लोग दाईं ओर चले गए। ज़ुयादातर अधेड़ व अंतिम साँसों के अधिकारी यथास्थान खड़े रहे। अर्थात जमे रहे। दूसरा पैनलिस्ट बोला, 'अब जो दाईं और बाईं ओर वाले हैं, वे घर जा सकते हैं। आप हमारी पार्टी के लिए मुफीद नहीं। सब दाएँ-बाएँ हो गए। न कोई सवाल। न कोई जवाब। अब गिनती के पचास लोग बचे।
अगला प्रश्न - क्या आप कभी जेल गए हैं?

उत्तर- हाँ हाँ हाँ....सबने एकस्वर मे अपना जेल जाना खुशी-खुशी और गर्व के साथ स्वीकार किया।

'ठीक...आप मे से जो लोग छोटी-मोटी चोरी के लिए जेल गए हैं, वे दायीं ओर आ जाएँ...' इस बार दस लोग सकुचाते हुए दाईं ओर आ गए। उनके चेहरे का रंग पीला पड़ने लगा। पैनल ने जब उनपर नजर डाली, तो सब के सब शर्म से पानी-पानी हो गए। आज उन्हें अपने किए पे पछतावा हो रहा है। काश कुछ बड़ा किया होता। राजनीति से हाथ धोना पड़ गया।

अब बचे-खुचे लोगों से सवाल करने की जरूरत नहीं थी। फिर भी मौखिक रूप से उन्होने बताया कि उन्होने कितनी हत्याएँ की हैं, कितनी डकैतियाँ डाली हैं, कितने का गबन किया है, कितनी बार दुष्कर्म तक कर डाला, और बावजूद उसके उनकी समाज मे बड़ी इज्जत है। इन विशेषताओं वाले सभी गुणीजन नेता मान लिए गए। पार्टी मे भर्ती कर लिए गए। अब जीत पक्की।

-अभिषेक अवस्थी

हरियाणवी लोक गीतों में वीरता

हरियाणा प्रदेश हरी की भूमि है। यहां सब हरा भरा होने के कारण खुशहाली छाई रहती है। यहां की संस्कृति लोकगीतों के कारण ही सदृढ़ है। यहां पर हर के मौके,अवसर व त्यौहार पर लोकगीत बने हैं। आज मैं यहां उन लोकगीतों पर चर्चा करना चाहूंगी जो देश भक्ति से संबंधित हैं। जब भारत में आजादी की लहर चली तो हरियाणा के वीरों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। हरियाणा के पानीपत में आजादी के लिए तीन लड़ाई लड़ी गई थी। यह सब यहां के लोकगीतों में भी देखने को मिलता है। जब अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए तैयारी चल रही तो छोटे बच्चे भी आजादी में योगदान की बात करते हुए कहते हैं –

'बाबू मनैं बंदूक दुआ दे, फौज म्हं भर्ती करवा दे, तू ना होवै परेशान रै, मैं खो दयूं अंग्रेजां की शान रै।'

आजादी में भारत की वीरांगनाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वे कहती हैं –

'ना रोको, ना रोको, मनैं भी सीमा पर जाण दयो, देश खातर मनैं भी अपना शीश कटाण दयो।'

देश के नौजवान युवक सेना में भर्ती होने की इच्छा जाहिर करते हुए एक दूसरे को फौज में भर्ती होने के लिए उत्साहित करते हुए कहते हैं–

भर्ती हो लयो रै बाहर खड़े रंगरूट, आडै मिलैं ना टूटी जूती उड़ै मिलैंगे फुल बूट, आडै मिले ना पाट्टे लितर उड़ै मिलैंगे सूट।'

फौज में भर्ती सैनिकों को उनकी मां देश के लिए लड़ने को कहती है–

'जर्मन में जाकर लड़िये, अपने मां बाप का नाम करिये, तैं तोपां कै आगै अड़िए, अपनी छाती नै दे खोल।'

हरियाणा प्रदेश के वीरों की निडरता पर भी अनेकों लोकगीत बने हैं। ऐसे ही एक गीत में कहा गया है– **'कदे दुनिया म्हं रणधीर डरया नहीं करते, जिननै सै नहीं मरणा आंदा, उननै हर कोई डर दिखलांदा, हरियाणा के वीर कदे डरया नहीं करते।'**

मां अपने बेटे को देश की रक्षा के लिए अपनी दूध की लाज रखने की बात करते हुए कहती है–

'कर देश की रक्षा चाल, लाल मेरे सज धज के, जिस दिन खातर दूध पिलाया, वो दिन लाडले आज सै आया। करके दिखा कमाल, लाल मेरे सज धज के।'

मां के साथ-साथ हरियाणा के वीरों की पत्नी अपने पति को सेना में जाते हुए गर्व से विदा करते हुए कहती है–

'जा साजन या तेरी जवानी पूंजी मां भारत की, रही भुजा फड़क मेरी भी तनै विदा करती की।'

इसके साथ साथ महिलाएं वीरता के रंग में रंगी साड़ी की मांग करते हुए कहती है–

'बहस इसी साड़ी ल्यादे हो जिसकी चमक निराली, जिस पै गांधी, सुभाष हों और हो इंदिरा प्यारी।'

सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज बनाई इसका भारत की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी कारण जब नेता जी जर्मनी गए तो इस स्थिति में बने गीत में कहा गया है–

'घड़ी ना बीती ना पल गुजरया, यो उत्तरया जहाज चमन तै। बरसण लागे फूल बोस पै हाथ मिलया हिटलर तै।'

भगत सिंह जिसका नाम बच्चा बच्चा जानता है, जब जेल गए तो उनके बारे में उनकी मां उन्हें समझाते हुए कहती है–

'सौ-सौ पड़ै मुसीबत बेटा उम्र जवान म्हं, देखे भगत सिंह कदे जी घबरा ज्या तेरा बंद मकान म्हं।'

देश के आजादी में अनगिनत वीरो ने कुर्बानी दी है। युद्ध के समय जब एक नौजवान गोली लगने से घायल हो जाता है तो अपने साथियों को यह संदेश पहुंचाने की कहता है–

'साथ रहणिया संग के साथी या दया मेरे पै फेर दियो, जिस रस्ते मेरी अर्थी जावै उस रस्ते फूल बखेर दियो। देश कै ऊपर जान झोक देयी, लिख चिट्ठी म्हं गेर दियो।'

इस तरह अनगिनत कुर्बानियों के बाद भारत को आजादी मिली तब डहक्टर अंबेडकर ने भारत का संविधान लिखा जिनके बारे में कहा गया है –

'भारत का संविधान बनाया भीम नै, इस देश तै कानून का राह सिखाया भीम नै।'

सरदार पटेल ने छोटी छोटी रियासतों को इकट्ठा करके भारत को मजबूत बनाया, उनके बारे में कहां है– **'हिंद की कर दी ऊंची सज्जनों शान पटेल नै, एक बार फेर पैदा कर भगवान पटेल नै।'**

इस तरह भारत की वीरता का गुणगान करते हुए गाया जाता है –

'यो भारत देश महान सै, मेरा भारत देश महान। इसकी जग म्हं सै ऊंची शान, यो भारत देश महान,मेरा भारत देश महान।'

–डा० संजीव कुमारी
पर्यावरणविद व लेखिका
पानीपत , हरियाणा, भारत

इश्क

इश्क हैं मुझे
हीर की बेताबी से
सोहनी के अहसास से
लैला की खूबसूरती से
उनके जज्बातों
चाहत से
बेताबियों,
तल्खियों से
वायदों की फेहरिस्त ,
जिंदगी की तब्दीलियों से
अंतरंगता और अनुभूतियों से
स्नेह की प्रतिमूर्ति से
आसक्ति और विरक्ति से
इश्क हैं मुझे
गंगे और तिरंगें से
सरहद पर लड़ते जवान से
खेत पर जूटे किसान से
गिलहरी और मधुमक्खी से
दहाड़ते शेर और फुंकारते नाग से
नीम और बबूल से
फूल और काँटे से
चूंकि
सब हैं प्रकृति का हिस्सा
मेरा इश्क हैं इसी प्रकृति से
उस रब से
जहाँ के मालिक से
जमी और आसमां से
मौत और जिंदगी से
तुम से और
खुद से।

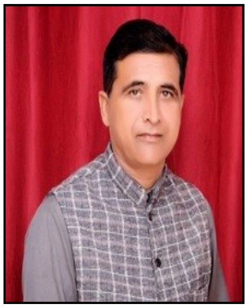

राकेश छोकर

पंचतत्व

पंच तत्व समाहित हैं इस तन में भी..!!
पंचतत्व समाहित हैं ‘‘नारी के मन‘‘में भी..!!

पहले तत्व ‘‘आकाश‘‘ जैसा विशाल, नारी का मन
जो समां लेता है सारा जहां अपने आंचल में..
अनगिनत तारे टिमटिमाते हैं ख्वाहिश बनकर
एहसासों के बादल से ढका रहता है हर पल..!!

दूसरा तत्व ‘‘अग्नि‘‘ जो सुप्त रहती है
मन के किसी कोने में...
जब देखती है असहाय पर होते अन्याय कहीं
भस्म कर देना चाहती है दुर्गा बनकर
अन्याय के ‘‘भस्मासुर‘‘ को...
अपनों की तरफ उठती हर कुदृष्टि को
राख कर देना चाहती है ज्वाला बन कर..!!

तीसरा तत्व ‘‘वायु‘‘ जैसा चंचल मन
तीव्र वेग से एक पल में कभी यहां से वहां..
नाप लेना चाहती है क्षितिज तक की दूरी
अपने सपनों के कदमों से..
हर पल महकती है रिश्तों के एहसास से..!!

चौथा तत्व ‘‘जल‘‘जैसा निर्मल मन
द्रवित होता है दूसरों के दुख देखकर
धो देता है दूसरों के दूषित इरादों को
बहता रहता है अविरल गंगा सा पवित्र
अपनों के कष्ट बहा लेना जाना चाहता है..!!

पांचवें तत्व ‘‘पृथ्वी’’ सा दृढ़ सशक्त नारी का मन
सहनशक्ति की मिसाल, स्थिरता भी बेमिसाल
सबको स्थान देती अपने हृदय में
बोझ उठाएं कितने ही अनकहे जख्मों का
फिर भी हर पल मुस्कुराती हुई..!!

सचमुच नारी का मन भी तो इन पांच तत्व से बना है।

रितु कुलश्रेष्ठ
फरीदाबाद, हरियाणा

डॉ शैलेश शुक्ला को राष्ट्रपति करेंगे पुरस्कृत

सुप्रसिद्ध कवि, वरिष्ठ पत्रकार, अनुवादक, हिन्दी सेवी, भारत सरकार के एक उपक्रम में राजभाषा अधिकारी एवं सृजन अहस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ शैलेश शुक्ला को भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। वर्ष 2019-20 हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार की पत्रिका - राजभाषा भारती (अंक 157) में प्रकाशित लेख ''न्यू मीडिया में हिन्दी की वर्तमान स्थिति'' पर डॉ. शुक्ला को राजभाषा गौरव पुरस्कार घोषित किया गया है। डॉ शैलेश शुक्ला को हिन्दी भाषी क्षेत्र के लेखकों की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार की घोषणा की गई है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर दिल्ली में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राष्ट्रपति महोदय के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया जाता है।

डॉ. शैलेश शुक्ला ''न्यू मीडिया में हिन्दी साहित्य'' पर पीएचडी करने वाले विश्व के पहले विद्वान हैं।डॉ शैलेश शुक्ला पिछले दो दशकों से अधिक समय से हिन्दी सेवा में संलग्न हैं। बहुआयामी प्रतिभा के धनी डॉ शैलेश शुक्ला ने एक दशक से अधिक अवधि तक दिल्ली में साहित्य-सृजन, पत्रकारिता और दिल्ली विश्वविद्यालय साहित अन्य शैक्षणिक संस्थाओं में पत्रकारिता एवं जनसंचार, व्यावसायिक संचार, अंग्रेजी एवं अर्थशास्त्र विषयों का शिक्षण, लगभग छः वर्ष तक सिक्किम केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पहले राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य किया है। सिक्किम विश्वविद्यालय में उन्होंने हिन्दी विभाग प्रारंभ करने, एम ए (हिन्दी) का रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम तैयार करने में महतपूर्ण भूमिका निभाई और नव गठित हिन्दी विभाग में एम ए (हिन्दी) की कक्षाओं में अध्यापक कार्य भी किया।

सिक्किम विश्वविद्यालय के पहले राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करने के दौरान डॉ शैलेश शुक्ला सिक्किम में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। वे सिक्किम में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाई जाने वाली हिन्दी शिक्षण योजना के सर्वकार्यभार अधिकारी (Officer in Over-All Charge) रहे और सिक्किम स्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों के सैकड़ों अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण प्रदान करवाया। डॉ शैलेश शुक्ला ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाई जाने वाली हिन्दी शिक्षण योजना के परीक्षा अधीक्षक के रूप में विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों के सैकड़ों अधिकारियों एवं कर्मचारियों की विभिन्न स्तर की परीक्षाओं - प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत आदि का सफलता पूर्वक आयोजन करवाया।

डॉ शुक्ला ने गंगटोक, सिक्किम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -नराकास की गतिविधियों का संयोजन किया और साथ ही नराकास, गंगटोक के बहुत से सदस्य कार्यालयों (जिनमें से प्रमुख हैं 'दूरदर्शन केंद्र-गंगटोक', 'आकाशवाणी केंद्र-गंगटोक', 'क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अनुसंधान संस्थान, आयुष मंत्रालय', 'राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परिषद', 'राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र -ऑर्किड', 'भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण', 'केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग', 'प्रधान महालेखाकार कार्यालय', 'भारत-तिब्बत सीमा पुलिस', 'पावर ग्रिड' आदि) में राजभाषा कार्यान्वयन को गति देने में उन्होंने बहुमूल्य एवं प्रशंसनीय योगदान दिया।

वर्तमान में डॉ शैलेश शुक्ला 'सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका' के प्रधान संपादक एवं वैश्विक संयोजक का कार्यभार देखने के साथ-साथ भारत सरकार के एक उपक्रम में राजभाषा अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

हिन्दी सेवा में उनके कुछ उल्लेखनीय कार्य : -

- 1996 से साहित्य सृजन एवं लेखन में सक्रिय, देश विदेश के विभिन्न प्रतिष्ठित प्रकाशनों - राजभाषा भारती, खनिज भारती, शिक्षायण, नाट्य-मंजूषा, साक्षी भारत, दिल्ली न्यूज ट्रैक, दैनिक जागरण, दक्षिण भारत राष्ट्रमत, अमर उजाला, पुरवाई, विश्वा, तीस्ता-हिमालय, भारतवाणी, सामाज्ञा, अनुगामिनी, सलाम दुनिया, साक्षरता संवाद, कर्माबक्श, गर्दभराग, आवाम केसरी, अस्मिता, समाज-धर्म, पूर्वोत्तर भारती दर्पण, जनकृति, विश्वहिन्दीजन, IJHER, AMIERJ, आदि पत्र-पत्रिकाओं एवं विभिन्न पुस्तकों में कविताओं, कहानियों, व्यंग्यों, लेखों और शोधपत्रों सहित शताधिक प्रकाशन।
- दिल्ली विश्वविद्यालय में स्नातक अध्ययन के समय से हीअंतर-महाविद्यालय स्तर के कई पुरस्कारों सहित, 'गांधी भवन' दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ''मेरे लिए गांधी के अर्थ (What Gandhi Mean's To Me) विषय पर आयोजित 'राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता' में 'द्वितीय' पुरस्कार एवं उनकी सुप्रसिद्ध हिन्दी कविता ''हाँ, मैं एक वेश्या हूँ'' पर हिंदी अकादमी, दिल्ली का 'नवोदित लेखक पुरस्कार' - प्रथम (2004)आदि प्रमुख हैं।
- डॉ शुक्ला का दिल्ली विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो पर लाइव साक्षात्कार प्रसारित किया गया।
- आकाशवाणी, टीवी चौनलों, कवि सम्मेलनों और काव्य गोष्ठियों में काव्य पाठ
- राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों में शोध आलेख प्रस्तुत।
- 30 अगस्त को अमर उजाला, साहित्यम और प्रगतिशील द्वारा "हिन्दी : अवसर और चुनौतियाँ" विषय पर आयोजित परिचर्चा की अध्यक्षता,25 अगस्त 2020 कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कोल्हार, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेब-संगोष्ठी की अध्यक्षता, 31 जलाई 2020 को प्रेमचंद जयंती पर निर्मला कॉलेज, राँची द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में में डॉ. मृदुला सिन्हा, पूर्व राज्यपाल, गोवा एवं विश्व के अनेक प्रख्यात अंतरराष्ट्रीय विद्वानों के बीच विशिष्ट वक्ता के रूप में व्याख्यान सहित विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, आईटीबीपी, दूरदर्शन, आकाशवाणी, आईसीएआर, केलोनिवि, पावर ग्रिड, आयुष, ईपीएफओ आदि कार्यालयों में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और स्रोत वक्ता के रूप में वक्तव्य
- राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई भाषिक, साहित्यिक एवं अकादमिक आयोजन

कोरोना भी चकराया है

दुनिया है बहुत डरी-सहमी
हर शख्स बहुत घबराया है
लेकिन मैं मस्त रहा हरदम
जब से कोरोना आया है

मै लह्कडाउन से ही खुश था
घर में चौपाल लगाया था
मोदी जी बोले ताली
मैंने थाली खूब बजायी थी
जब आया मजा बजाने में
मुँह से एक कविता फूट गयी
तब जोश में इतना पीट दिए
घर की दो थाली टूट गयी

जी भरा नहीं फिर शंख लिया
बीवी को देकर के घंटी
वो समय देखने लायक था
मनोरंजन की थी गारंटी
फिर मोदी जी ने दीया जलाने
वाला मंतर फूँक दिया
मैं इतना प्रेरित हुआ कसम से
बिस्तर-चद्दर फूँक दिया

कुछ ऐसा दीया जलाया मैंने,
अब तक बुझ नहीं पाया है ||

जब महल बंद हो गए तो क्रेडिट
कार्ड को भी आराम मिला
पिज्जा बर्गर मोमोस बंद
खाने को लंगड़ा आम मिला
शह्पिंग -थियेटर सब बंद हुआ
लग नहीं रहा, वाइफ का मन
वो कहती ,जीवन कठिन बहुत
मैं कहता देखो रामायण
बीवी ने मेकअप छोड़ दिया
कहती थी यह बचकानी है
मेकअप करके क्या होगा जब
तुमको ही शक्ल दिखानी है
घर में रहकर अपने मन से मैं
काम सभी निपटाता था
और कभी-कभी झाड़ू पोछा
करते-करते सो जाता था

इतना क्या कम है चार महीने,
मैंने रोज नहाया है||

जिससे उधार ले रखा था
वो मुझे ढूढ़ता रह जाता
जबकि मै मास्क लगाकर
उसको रोज नमस्ते कर आता
खुद क्वारंटीन बताता मै
जब वो पैसा लेने आता
मैं इतना जोर खाँसता कि
वो उलटे पाँव भाग जाता
जुल्फों से लगता था मंजनू
ढाढ़ी से लैला के अब्बा
दस दिन में खाली करता था
मै चव्यनप्राश का एक डिब्बा
न पैंट छुआ , न सर्ट छुआ
सब छोटे हो गयें बाँट दिया
केवल लोअर बनियान पहन
कर चार महीना काट दिया

एसी क्या चार महीने तक
पंखा भी नहीं चलाया है||

घर से अह्फिस जब शुरू हुआ
तो अनुभव भी कुछ खास हुए
अह्फिस में एक बहस थे पर
अब घर में दो - दो बहस हुए
है काम बहुत लेकिन उससे
जूयादा मीटिंग हो जाती है
हड्डियाँ दर्द करने लगती
इतनी सिटिंग हो जाती है
मुझको घर में ही पड़े देख
बच्चे भी जरा नहीं डरते
मैं हैंग आउट मीटिंग करता
वो पीछे से झाँका करते
अह्फिस का काम भी करता हूँ
वाइफ को भी समझाता हूँ
बच्चे आपस में लड़ बैठें
तो झगड़ा भी सुलझाता हूँ

इस तरह काम घर से अपना,
मैंने हँस कर निपटाया है||

एक बार बह्स ने सुबह-सुबह
जब मुझे वीडियो कह्ल किया
थी बात जरुरी उस टाइम
पर मुझको तो बेहाल किया
मै जस्ट नहा कर निकला था
सब काम समेटे बैठ गए
कपड़े भी पहन नहीं पाया
तौलिया लपेटे बैठ गया
उस दिन मीटिंग के साथ-साथ
ही ब्रेकफास्ट भी खाया था
क्या होती मल्टीटास्किंग है
उस रोज समझ मै पाया था
जल्दी जल्दी में खाया तो
कुछ भाग गले में अटक गया
गिर गयी चाय में मक्खी तो
मै बिन देखे ही गटक गया

जिस दिन से कांड हुआ है यह ,
कोरोना भी चकराया है||

विनोद पाण्डेय
गाजियाबाद

हाय मेरी नींद

चंद वर्ष पहले की बात है बाबा रामदेव के समर्थकों पर दिल्ली में आधी रात को पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किये जाने पर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सोए हुए लोगों पर लाठी चार्ज करा कर पुलिस ने उन पर बहुत जुल्म किया है और चैन की नींद सोना हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। मुझे अपनी नींद बहुत प्यारी है क्योंकि यह बहुत मुश्किल से मिलती है। मुझे उनसे ईर्ष्या होती है जो कार,बस,ट्रेन या प्लेन में सफर करते हुए या घर में सोफे पर बैठे हुए ,फिल्म देखते हुए ,मीटिंग या कांफ्रेंस में बैठे हुए ,जब भी चाहे झपकी ले लेते हैं।मै तो जिस दिन मुझे चैन से 6 घंटे सोने को मिल भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ।

जैसे-जैसे उम्र बढ़ रही है वैसे-वैसे यह घंटे भी घटते भी जा रहे हैं। जब भी मै रात को सोने की कोशिश करता हूँ तो चारो तरफ से आ रहा शोर इसमें रूकावट बन कर खड़ा हो जाता है , फिर चाहे यह किसी बारात का बैंड हो ,मैरिज पैलेस का डीजे जागरण या कीर्तन। माननीय सुप्रीम कोर्ट तो पहले ही एक फैसले में कह चुका है कि रात को दस बजे के बाद कोई शोर नहीं कर सकता है ,मगर यहाँ सुनता कौन है। मुझे नहीं मालूम कि अब जो नींद को मौलिक अधिकार बताया गया है उसको लागू कौन करेगा ।

मेरा घर एक हाइवे पर है और एक मैरिज पैलेस भी पास में ही है । मै हर वक्त बैंड ,पटाखे व ट्रक के हॉर्न में घिरा रहता हूँ। अब मुझे कोई बताये कि मेरी नींद बर्बाद करने के लिए जो मच्छर भिनभिनाते हुए मेरे बिस्तर के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं उन्हें सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश की जानकारी कैसे हो ? मेरा पड़ोसी आधी रात को दुकान से घर आता है और गेट खोलते हुए इतना शोर करता है कि पूरा मोहल्ला जाग जाए। मुझे कॉलेज के जमाने में हॉस्टल में खर्राटे लेने वाले साथी ही मिलते रहे। कानों में रुई डालने से भी कोई हल नहीं निकला और अब सोने पे सुहागा मुझे जीवन संगिनी भी खर्राटे लेने वाली मिली । सिरहाने के नीचे सिर छुपाने से भी बात नहीं बनती।

मुझे पता है कि अच्छी नींद लेने से सेहद अच्छी रहती है। नींद पूरी न होने से आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है और दिन भर थकान महसूस करता है । बचपन में सुनी हुई कहावत भी याद आती है ''जल्दी सोने व जल्दी उठने से आदमी सेहतमंद ,सयाना और अमीर बन जाता है ।'' मुझे अपनी नींद तो पता नहीं मगर अब कोर्ट के इस फैसले के बाद मीटिंग या कांफ्रेस में झपकी लेने वालों को कोई कुछ नहीं कहेगा क्योंकि यह तो अब उनका मौलिक अधिकार है।

फास्ट फूड जेनेरेशन

बदलते वक्त के साथ जैसी हमारी सभी आदतें बदल रही है वैसे ही हमारे खाने-पीने का अंदाज भी तेजी से बदल रहा है। भारत की माध्यम वर्ग की आमदनी में पिछले दो दशकों में काफी बढ़ोत्तरी हुई है जिसका फायदा फास्ट फूड चेन और रेस्त्रां उठा रहे हैं । दोनों जन की आमदनी व कम बच्चों वाले परिवार बढ़ रहें हैं । घर में खाना बनाने का वक्त किसी के पास नहीं है ,इसलिए खाना या तो बाहर खाया जाता है या आर्डर पर बाहर से मंगवाया जाता है। रेस्तरां की तड़क-भड़क व खाने की सजी हुई हांडिया हमारे मुँह में पानी ला देती हैं। तब हमें यह मालूम नहीं होता कि यह सेहत के लिए ठीक है या नहीं। धीरे-धीरे इस परिवर्तन ने हमारे शरीर पर असर करना शुरू कर दिया है। शुगर ,ब्लड प्रेशर,मोटापा व हार्ट अटैक जैसी बीमारियाँ इन्हीं बातों का बुरा नतीजा है।

एक बार मेरी एक दोस्त जो कि बच्चों की डॉक्टर है ने मुझे अपने एक मरीज की कहानी सुनाई जो केवल एक वर्ष का था । उसकी माँ उसे बार-बार उसकी पेट की तकलीफ के इलाज के लिए ला रही थी। डॉक्टर हर तरह की दवा आजमा चुका था। उसने बच्चे की जाँच करने के लिए उसे अस्पताल में दाखिल कर लिया। जब वह सुबह राउंड पर गया तो उसने बच्चे की माँ से पूछा ''बच्चे को खाने के लिए क्या दिया'' ? उसकी माँ ने कहा डॉक्टर साहब इसको तो केवल मन्चुरियन ही पसंद है अभी ऑनलाइन आर्डर दिया है आता ही होगा। डॉक्टर ने अपना माथा पीटा और सोचने लगा कि मै इस बच्चे का इलाज कैसे कर सकता हूँ।

मै जब अपने दोस्तों को मिलने अमेरिका गया तो मैंने देखा कि उनके घरों में बड़े-बड़े फ्रिज व फ्रीजर हैं ,जिसमें वह बहुत सा खाना बाजार से खरीद कर रखते हैं और रोज उसमें से कुछ निकाल कर गर्म करके खा लेते हैं। उनके बच्चों को बाजार की खाने की इतनी आदत हो चुकी है कि घर का पका हुआ खाना एक बार भी नहीं खाते। मुझे लगता है कि वह वक्त आने वाला है जब हम रसोई में केवल फ्रिज में से निकाला हुआ खाना गर्म करने के लिए ही जाया करेंगे । आने वाली पीढ़ी माँ के हाथ के पके हुए खाने का स्वाद तो भूल ही जाएगी ।

कुछ दिन पहले मेरे पास एक औरत आयी ,उसका पेट खराब था। मैंने पूछा ''क्या कल कुछ बाजार से खाया था '' वह हँस कर बोली ''डॉक्टर साहब आजकल घर का खाना खाता कौन है''। हमारे जमाने में महीने में एक या दो बार बाहर जाकर खाना खाने का रिवाज था। अब तो बाहर जाकर खाना खाना एक रूटीन बन चुका है और घर का खाना अपवाद। विश्व में फास्ट फूड उद्योग 400 बिलियन डहलर को पार कर चुका है। अर्थव्यवस्था कमजोर होने पर भी इसका ग्राफ ऊपर की ओर जा रहा है। टीवी पर खाने के कार्यक्रम जैसे कि मास्टर शेफ ,जायका इंडिया का ,हाइवे ऑन

प्लेट मशहूर हो रहे हैं। अब औरते हर क्षेत्र के मर्दों से आगे निकल गयी हैं। उम्र के पहले 25 वर्ष वह अपने. पढ़ाई व कैरियर पर लगाती हैं।

शादी के बाद भी उनके पास खाना बनाना सीखने या बनाने का वक्त ही नहीं होता है।इसलिए या तो मर्दों को रसोई के काम में हाथ बटाना होगा या फिर बाहर का खाना ही खाना होगा। बड़े शहरों में घर में टिफिन सप्लाई का काम जोरों से चल रहा है । हम तेज रफ्तार से आगे बढ़ रहे हैं मगर इस तेज तर्रार जिंदगी की दौड़ में सेहत शायद पीछे छूट गयी है।

मेल एटीएम फीमेल कुक

मै कभी भी तड़क-भड़क वाली शादी के हक में नहीं रहा मगर आज जहाँ एक तरफ बेटी बचाओ का कार्यक्रम चल रहा है ,वहाँ दूसरी ओर पितृसत्ता के खेल में शादी-ब्याह अभी भी माँ-बाप के जी का जंजाल बना हुआ है। शादी के मौसम में हर रोज ही किसी ना किसी का न्योता आया होता है। लड़की के माँ-बाप उम्र भर की कमाई लड़की की शादी पर खर्च कर देते हैं। हालाँकि लड़कियाँ ,लड़कों में मुकाबले में पढ़ाई में आगे निकल चुकी हैं और कमाने भी लग गयीं हैं मगर क्या उनको समाज में मर्दों के बराबर अधिकार मिल गए हैं ? शायद नहीं । आजकल सभी लड़के वाले शादी में शानो शौकत की माँग रखते हैं और वह भी अपने शहर में ताकि उनके बारात का खर्च भी बच जाये और शहर में वाह-वाह भी लूट लें।

कुछ दिन पहले मै एक विवाह में गया । आजकल स्वागती दरवाजे पर एक तरफ लड़के की और दूसरी तरफ लड़की की तस्वीर लगाने का रिवाज है। लड़के ने फोटो में एक तख्ती पकड़ी हुई थी जिसका तीर का निशान लड़की की तस्वीर की तरफ था । उस पर लिखा हुआ था “ माई कुक” लड़की ने जो तख्ती पकड़ी हुई थी उसका तीर लड़के की ओर था और उस पर लिखा हुआ था “मेरा एटीएम”। मै उस परिवार को अच्छी तरह से जानता था ।लड़की लड़के से ज्यादा पढ़ी हुई थी और कमाती भी ज्यादा थी। उसे लड़के के एटीएम कार्ड की कोई जरुरत नहीं थी। दूसरी और लड़के को अगर रसोइए की जरुरत थी तो नौकरी पर रख लेता इसमें शादी करने की क्या जल्दी पड़ी थी ? मेरा मन इसे देखकर बहुत दु:खी हुआ ।

लड़कियों की तरक्की के लिए इतने प्रयास करने के बावजूद हम समाज में उनकी भूमिका को नहीं बदल पाए । मेरी पत्नी और मै डॉक्टर हैं । कुछ दिन पहले मेरी बेटी अपने कहलेज के साथियों के साथ अमृतसर जा रही थी । उसने कहा कि चूँकि हमारा घर रास्ते में ही पड़ता है इसलिए वह और उनके जमाती नाश्ता घर पर ही करेंगे । जब यह बच्चों की टोली घर पहुँची तो मैं और मेरी पत्नी नाश्ता बनाने रसोईं घर चले गए ।

मेरी बेटी की सहेलियाँ हैरान हो. गयीं । उन्होंने कहा “ हमें चलकर ऑन्टी जी की मदद करनी चाहिए हमारी वजह से अंकल को रसोईं में काम करना पड़ रहा है ।” मेरी बेटी ने उनको जवाब दिया “यह आपकी वजह से नहीं है यह हमारे घर की दिनचर्या है। यह दोनों मिलजुल कर रसोईं में अच्छा काम कर लेते हैं हमें इसमें विघ्न नहीं डालना चाहिए”।

मुझे मालूम नहीं कि हमारा समाज औरत और मर्द को बराबर कब मानेगा मगर मुझे यह लगता है कि माँ-बाप की यह जिम्मेदारी है कि वह लड़का और लड़की को बराबर समझे। शादी तो एक पवित्र बंधन है लड़के को एटीएम और लड़की को कुक कहकर इस रिश्ते की पवित्रता को धूमिल ना करें।

डॉ अरविंदर सिंह नागपाल

''साहित्य में एक बहुत सुंदर सी जिंदगी जी जा सकती है''- पूनम के सुजीबुन

(निदेशक, एसोसिएट निदेशक, मुख्य सहायक निदेशक,कहानी लेखक, पटकथा लेखक, कॉन्सेप्ट राइटर, कॉर्पोरेट और विज्ञापन फिल्म निर्माता, लाइव शो में टीवी एंकर, समारोह के मास्टर, फ्लोर मैनेजर पूनम के सुजीबुन जी से कपिल कुमार की बातचीत)

कपिल कुमार : आप मॉरीशस से हैं तो सबसे पहले आपसे मेरा सवाल है मॉरीशस में हिंदी भाषा की क्या स्थिति है?

पूनम के सुजीबुन : मैसेज में सभी लोग हिंदी भाषा का इस्तेमाल बहुत अच्छे से करते हैं अपने रोजमर्रा की जिंदगी में और स्कूल में भी पढ़ाई जाती है हिंदी कार्यक्रम टीवी पर कार्यक्रम हिंदी रेडियो हिंदी सीरियल हिंदी मूवीस बहुत ही प्रेम से सभी देखते हैं और सुनते हैं वह अपनी भाषा को बोलने समझने और पढ़ने में इच्छुक होते हैं और हिंदी को पढ़कर वह अपनी पढ़ाई को और पूर्ण करते हैं।

कपिल कुमार : हिंदी में आपके मनपसंद कवि कौन है और उनकी कौन सी रचनाएं आपको पसंद है?

पूनम के सुजीबुन : परम श्रद्धेय महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी जिनकी लिखी हुई तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस,तुलसी मंजरी,विनय पत्रिका रसखान जी के पद मुझे बहुत पसंद है।

कपिल कुमार : फिल्म. इंडस्ट्री में यूपी बिहार के हिंदी भाषी प्रदेश के लोगों के साथ भाषा के स्तर पर कोई भेदभाव महसूस किया है आपने?

पूनम के सुजीबुनः जी यह सकते हैं की फिल्म इंडस्ट्री में दूसरे प्रदेशों के भाषाई स्तर पर भेदभाव होता है पर कारण यह है की आज पूरे संसार में हिंदी भाषा जो कि दिल्ली में आम लोगों द्वारा बोली जाती है, उस हिंदी भाषा को सभी ने सराहा कर उच्च स्थान देकर अपना लिया है। जब दूसरे प्रदेशों से या तो बहुत शुद्ध हिंदी या अशुद्ध हिंदी बोली जाती है तो बह्लीवुड में उसे आसानी से अपनाया नहीं जा पाता।

कपिल कुमार : आपको किसी हिंदी उपन्यास पर फिल्म बनाने हो तो आप किस उपन्यास को चुनेंगे और क्यों?

पूनम के सुजीबुन : आ.... ऐसे तो सभी उपन्यास अपने में एक अलग महत्व रखते हैं, पर एक मारीशस में 1911 के आसपास 13 हुई थी उनका नाम था अंजलि कूपन वह महरीशियन एक्टिविटी जिनकी मृत्यु बहुत छोटी उम्र में हो गई तो वह सिर्फ 32 साल के थे और जिस दिन वह उस देश को आजाद कराने में एक धरना दे रही थी तो प्रेग्नेंट थी उस पल उनकी मृत्यु गोली लगने से हुई उसी तरह से थी जैसे हिंदुस्तान की रानी की झांसी तो मैं अगर बनाना चाहूंगी तो अंजलि कूपन के ऊपर मूवी बनाना चाहूंगी जो सब देखें ऐसे भी स्त्रियां हुई हैं जो अपना सर्वस्व खत्म करके आज हम सबको जीवन देकर जा चुकी है।

कपिल कुमार : किसी अन्य भाषा की किताब जिसे पढ़कर आप को लगा हो इसका अनुवाद हिंदी भाषा में किया जाए ताकि हिंदी भाषी लोग भी उसे पढ़ सकें?

पूनम के सुजीबुन : मैं नहीं जानती की किताब हिंदी में है या नहीं पर (Chariot s of the God by Erich von daniken German writer) इन्होंने जो लिखा है उन्हें सबको पढ़ना चाहिए क्योंकि इसको पढ़ने के बाद आप अपने आप को इस तरीके से पाएंगे कि आप पुरानी दुनिया में भी हैं और आज की दुनिया में भी पूरी तरीके से स्ट्रांग्ली खड़े हैं इसमें आपको पता चलेगा पहले जो हवके होते थे वह किस तरह की Gods को यूज कर रहे थे पर आज हम जो खड़े हैं उस समय उन्होंने कितनी मेहनत की थी जिससे आज हम सब के पास सब कुछ है जिसको इस्तेमाल करके हम दुनिया में ही स्वर्ग देख सकते हैं परंतु सिर्फ अपनी खुशी के लिए हम दूसरों को वह सुख नहीं देना चाहते तो यह नहीं होना चाहिए था सब बराबर हैं सब एक है और सबको

सुख और खुशियां मिलनी चाहिए।

कपिल कुमार : मारीशस में आप किसी प्रकार से हिंदी की सेवा कर रही हैं?

पूनम के सुजीबुनः संस्कृत संस्कृति संस्कारों के लिए मैं लोक नीति में लोक भाषा हिंदी का प्रयोग उपयोग करती हूं।

कपिल कुमार : वैश्विक स्तर पर हिंदी को मजबूत करने के लिए आपके हिसाब से क्या कदम उठाने जरूरी हैं?

पूनम के सुजीबुन : कंप्यूटर प्रणाली में हिंदी भाषा के लिए पठन-पाठन कार्य लेख लेखन कार्य अनिवार्य होना चाहिए जिन लोगों को हिंदी बोलने समझने में भारत में रहकर शर्म आती है इसके लिए विदेशी हिंदी मार्ग मर्गयो को आमंत्रित कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार किया जाए।

कपिल कुमार : हिंदी की गूंज त्रैमासिक पत्रिका के विषय में और संपादक रमा शर्मा जी के इस प्रयास के बारे में आपके क्या विचार हैं?

पूनम के सुजीबुनः मेरे सराहनीय विचार उनके इस प्रयास के लिए कोटि-कोटि अभिवादन आभार प्रकट करती हूं अग्रिम भविष्य में आशा करती हूं उनकी हिंदी की गूंज त्रैमासिक पत्रिका की गूंज हिंदी की गूंज की तरह पूरे ब्रह्मांड में फैले।

कपिल कुमार : आपको फिल्म और साहित्य से लगाव कब महसूस हुआ क्षेत्र में ना होती तो आप कहां होती?

पूनम के सुजीबुन : मुझे फिल्मों से लगाव तो शुरू से था क्योंकि लगता था कि लोग कैसे एक डिब्बे में बंद हो जाते हैं और बोलते कैसे हैं और यह डिब्बाबंद कैसे हो जाता है यह लोग कहां चले जाते हैं मैं पीछे जान छक्के देखती थी कि अब निकलेंगे कैसे जब उधर कोई भोजन पकड़ा होता था या कोई खाली परोसी जाती थी तो मैं उसकी खुशबू को सूंघना चाहती थी पर मुझे कोई खुशबू नहीं आती थी तो मुझे उस डिब्बे को समझना था, बाद में एहसास हुआ और परिवार के द्वारा पता चला कि यह एक फिल्म होती है जिसे बनाई जाती है और फिर यह इस डिब्बे में आती है तो इस तरीके से मेरा ध्यान फिल्मों की तरफ, और इस रुझान की वजह से मुझे मुझे पढ़ने का शौक नहीं है था स्कूल की पढ़ाई मुझे बहुत लगती थी और लगता था कि यह जो हम पढ़ने आते हैं इसका क्या फायदा होता है उसको पढ़ कर क्या करेंगे मुझे लगता था कि सिर्फ बोलना ही पढ़ाई होती है मुझे पढ़ाई समझने में बहुत साल लगते हैं फिर मुझे एक रेलवे स्टेशन पर मैंने एक उपन्यास मोहब्बतें नाम का देखा और उसको ऐसे ही एक बड़ी जर्नी में मैं उसे पढ़ने लगी पढ़ते-पढ़ते मैं यह भूल गई कि मुझे पहुंचना कहा था जब मैं जहां पर पहुंची वहां पर भी मैं वह अभी अपने उपन्यास को खोलकर पढ़ना चाहती थी वह पढ़ने लग गई जिस काम के लिए गई भूल गई। मुझे उस उपन्यास में पढ़ना सिखाया जो पहली बार मेरे साथ हुआ।

उसके बाद मैंने काफी उपन्यास किताबें मतलब मेरे जो पैसे होते थे जो भी मिलते थे घर से वह सिर्फ किताबों पर ही खर्च होते थे मुझे किसी और चीज का शौक नहीं होता था मेरे अंदर की इच्छा होती थी कि सब कुछ पढ़ा जाए मतलब सब ने इतना कुछ लिखना है सब कहां से लेना ले जाती है तो मुझे पढ़ने का इंटरेस्ट होने लगा और जब साहित्य में मैं आई तो यह मैं आई 2015 में और वह भी मेरा रियूनियन आईलैंड गाना शायद संसार की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी जो मैं हूं वह सिर्फ और सिर्फ रियूनियन आईल. ैंड में जो मैंने अपने अंदर सूर्य देव के सामने परिवर्तन पाया वही आज मेरे साथ चल रहा है, मैं भगवत गीता से मेरी शुरुआत हुई जो मेरे अंतर्मन से ही उजागर हुई कि कोई इस तरीके का एक ग्रंथ कह लीजिए या किताब है जो मुझे पढ़नी है और मैंने उसको मंगानी पड़ी तो मैं उसको समझने के लिए मैंने रिसर्च करना शुरू किया तो उसके बाद शायद कोई ऐसी ग्रंथ नहीं छोड़ा जो ना पढ़ा हो और ना समझा हो जहां पर भी लगा कि उसको शब्द को या उस पूरे मंत्र को समझना चाहिए तो मैंने उसको बहुत इज्जत मान से समझा और गर्व महसूस होता है अपने ऊपर अपने संस्कारों पर भारत के संस्कार जो हम में आए कि अगर कोई स्त्री अपने आप को दूसरे कामों से हटाकर साहित्य में लाना चाहे तो एक बहुत सुंदर सी जिंदगी जी सकती है तो साहित्य अब मेरे खून में है।अगर मैं अपने ख्वाबों को समय से समझ पाते हैं और समाज के लिए कुछ करना चाहती तो मैं जरूर एक इंडियन पहलीटिशियन होती।

कपिल कुमार

तेरी वह मुस्कराहट

उन दिनों
जब मैंने देखा था तुम्हे
बहुत खुबसूरत लगती थी
तुम्हारी हर अदाएं
दाद दे जाता था
हर देखने वाला .

वह रात
बहुत हसीन लगी थी
जब तुमने
धवल चाँदनी में
देखा था मुझे
लेकिन धवल चांदनी भी
शरमा गयी थी
तेरी मुस्कराहट से .

आज भी
नहीं भूल सका हूँ
रूप लावण्य युक्त लज्जा
भरी मुस्कान को
शायद आगे भी
न भूल सकूँ
लगता तो ऐसा ही है .

लेकिन अब
हर रोज मेरी मेज
भर जाती है
शिकायती पत्रों से
लेकिन शिकायती
शायद वह लम्हा
नहीं पा सके कभी
इसीलिए
ध्यान भी नहीं देता .

काश मिल जाता
उन्हें भी
मेरे जैसा कोई खुबसूरत लमहा
झकझोर जाता उनका भी दर्द जिगर
उड़ा ले जाता उनका भी मन
बना देता उन्हें भी मुझ जैसा
तब
तब शायद वे भी
शिकायती तो न बनते .

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

पुतला

अब गांधी कहाँ रहा मैं
अब तो बस एक पुतला हूँ
जाँ मर्जी लगा दो
जहाँ चाहे खड़ा कर दो
चुपचाप मौन सा निहारूँगा
कोई विरोध कोई सत्याग्रह
कहाँ और कैसे कर सकता हूँ
सब देखता हूँ
सब सहता हूँ
पर बोल नहीं सकता
अब गाँधी कहाँ रहा मैं
तो बस एक पुतला हूँ
चाहे नोटो पर छाप दो या
खड़ा कर दो किसी कहलेज या बाग के किसी कोने में
सब देखता हूँ
सब सहता हूँ
पत्थर की आँखों से
बारिश बन बहता हूँ
अपने सामने !!
अपने देश की आबरू लुटते देखता हूँ
लाठी चला नहीं सकता
कुछ कह नहीं सकता
अब तो बस एक पुतला हूँ
अब गाँधी कहाँ हूँ मैं
बुरा मत बोलो
बुरा मत देखो
बुरा मत कहो
सीख की धज्जियाँ उड़ते
अपनी आँखों के सामने देखता हूँ
बेटियाँ लुटती हैं
बहूयें जलती हैं
माँ बाप सड़कों पर बेआसरा भटकते हैं
और ये सब करने वाले!!!
मेरी ही तस्वीर छाप कर मेरे सामने मेरे देश का व्यापार करते हैं
सब सहता हूँ
चुप रहता हूँ
क्या करूँ
अब मैं सिर्फ एक पुतला हूँ
अब मैं गांधी कहाँ रहा
अंग्रेजों को खदेड़ दिया था
अपनी इस लाठी से

यह भी कोई मरने की उम्र थी

आज दरिंदों पर चला नहीं पाता अपनी लाठी जब
कितना असहाय महसूस करता हूँ
ये कोई क्या जाने
बापू बापू कहने वाले
आज बापू को वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं
बाहर आकर अपने को
देश का सेवक बतलाते हैं
जो माँ बाप की सेवा न कर सका
वो देश का नेता बन इतराता है
नशा, दरिंदगी अब सरे आम होता है
देश का रखवाला
देश की वर्दी डाल ऐश से रहता है
मंदिर मस्जिद के नाम पर
इक दूजे का गला काटते हैं
कैसे ये खुद को हिंदुस्तानी कहते हैं
पहले तब दरिंदे पराये थे पर कुछ लिहाज तो करते थे
अब सब अपने हैं
अब ज्यादा दुखता है
पर क्या करूँ
अब सब सहता हूँ
अब मैं गांधी कहाँ रहा मैं
अब मैं सिर्फ एक पुतला हूँ

रमा शर्मा
मुख्य संपादक
जापान

इन दिनों तुम्हारी आँखें श्मशान सरीखी हो गयी हैं ,
डरावनी,सूनी, चिता की भस्म की तरह मटमैली सफेद,
तुम्हारी हँसी पहले की तरह मोहक-वोहक नहीं रही
रोने से पहले की डबडब आँखों को
छुपाने की कला में प्रवीण नायिका भर रह गई है बस
सुनो! जिसे छुपाकर रख लेना चाहती हो न
उस घाव के नील से अच्छी तरह परिचित है तुम्हारी माँ
जानने की कोशिश में परेशान होकर भी क्या करोगी कि,
लोकमर्यादा की चौखट पर बलि देते
क्यों नहीं काँपते तुम्हारे पिता के हाथ।
कहती हो कि आत्महत्या कर लोगी,कर लो,
तुम्हारे नाम रोने आएँगी मर्यादाएँ , सहानुभूतियाँ,
छाती धुनेंगी,बिलखेंगी,चिल्लायेंगी
हाय!तुम तो अभी बस इक्कीस बरस की थी,
नयी-नवेली अल्हड़ ,मासूम, कुलवधू,
जिसे कुछ महीने पहले ही तो
सजा-धजा दान-दहेज दे विदा किया गया था
कुछ दिन तो इस सज -धज की लाज रखतीं,
पिता की बरसों की संचित पूँजी साथ गयी थी तुम्हारे
कुछ दिन तो उनको अपनी दानवीरता का सुख लेने देतीं
मारा कि सब सत्यानाश कर दिया
मर गयीं !
यह भी कोई मरने की उम्र थी लड़की !

सुमन सिंह
डी ए वी पी जी कालेज
वाराणसी

गजल

वादा वफा का तोड़ के अच्छा नहीं किया।
मझधार में यूँ छोड़ के अच्छा नहीं किया।

मुखड़ा तुम्हारा देख के होती थी जिसकी भोर,
उससे ही मुँह को मोड़ के अच्छा नहीं किया।

करते रहे हो बाग से खिलवाड़ तुम मगर,
कच्ची कली को तोड़ के अच्छा नहीं किया।

सच को सजा तो मिलती रही है सदा से ही,
गरदन मगर मरोड़ के अच्छा नहीं किया।

बेबाक हो के कौन हकीकत बताएगा,
शीशे को तुमने फोड़ के अच्छा नहीं किया।

करता रहा है जान निछावर जो आप पर,
रिश्ता उसी से तोड़ के अच्छा नहीं किया।

लाचार है किसान जमीं उससे छीन कर,
जबरन जमीं को गोड़ के अच्छा नहीं किया।

छिलका भी इसका हो ही गया तार तार अब,
इतना इसे निचोड़ के अच्छा नहीं किया।

अब तक तो सह रहा था सभी कुछ 'विजय' मगर,
बस आत्मा छिंछोड़ के अच्छा नहीं किया।

माना कि फट गया था मगर आपने 'विजय',
मखमल में टाट जोड़ के अच्छा नहीं किया।

विजय तिवारी,
अहमदाबाद

जैसे काट गई रस्ता बिलारी !!

किस-किस की लेकर सुपारी,
कोरोना की आई बीमारी।
हो गये शिकार खुद ही शिकारी।
कोरोना की आई बिमारी।।

इटली चीन टारगेट में
थे यूएसए जापान,
संकट में ईरान कनाडा है अफगानिस्तान।
दे रहे पानी पी-पीके गारी।
कोरोना की आई बीमारी।।

भारत में भी आतंकी बन घुस आया कोरोना,
मुम्बई दिल्ली तमिलनाडु में मचा है रोना-धोना।
जैसे काट गयी रस्ता बिलारी।
कोरोना की आई बिमारी।।

सावन भादौं में पानी को बूंद बूंद को तरसे,
बिना बुलाए मेहमानों से फागुन में आधमके।
भोज में जैसे कुदुआ भिखारी।
कोरोना की आई बीमारी।।

सांप नेवला चूहा बिल्ली मिल सरकार बनाई।
जीती बाजी हार भाजपा ने थी मुंह की खाई।
देख मौका बुलत्ती है मारी।
कोरोना की आई बिमारी।।

हास्य कवि
बाबा कानपुरी

लम्हा

वक्त के दरीचों से झाँकता लम्हा,
आ खड़ा हुआ सामने यूँ,
आँखों में शरारत,
होठों पे मुस्कान लिए,
उसकी मुट्ठी में शायद कुछ बंद था,
मेरे दिल में एक डर था !

ना जाने वक्त का ये कतरा
किस शक्ल का हो,
परसों की तरह खुशनुमा या
कल की तरह दर्द भरा,
वो मुस्कुराया,
धीरे से मेरे पास आया,
हवा की सुगबुगाहट,
सुबह की पहली किरण !

मिचमिचाती आँखों से देखा मैंने
उस खुलती मुट्ठी को
कुछ नहीं
बस घड़ी की टिक टिक सुनाई दी !

गुजरते पल, छितरते लम्हे,
आज भी सब कुछ वैसा ही था,
पहले की तरह !
बस झड़ गया
वक्त के कैलेंडर से
एक और दिन,
टूटा समय की साख से,
एक और पत्ता,
और मैं,
असमंजस के क्षितिज पर खड़ी,
वकत के दरीचे से झांकते,
एक और लम्हे के इंतजार में !!!

योजना साह जैन
बेर्लिन जर्मनी

दोहे

केवल अपने स्वार्थ हित, दें न किसी को कष्ट।
परहित मन में ठान लें, सब दुख होंगे नष्ट।

जड़ के खातिर क्यों करें,सारी चिता यत्न।
चेतन के हित भी करें, उठकर नए प्रयत्न।

नाशवान इस देह को,पगले क्यों दे मान।
जो अपना है ही नहीं ,उस पर क्या अभिमान।

यह शरीर संसार का,आत्मा प्रभु की अंश।
जग की रक्षा के लिए,कहता मन प्रभु हंसं

जो कुछ तेरे पास है,तज दे उसका मोह।
कर ले प्रभु की याचना,लग जा उसकी टोह।

परहित के कुछ काम कर,पायेगा सम्मान।
अपने हित जो कर रहा वह पगला नादान।

अहंकार ममता तुम्हे,दुख देगी हर काल।
प्रभु तेरे संसार का ,बुरा हो गया हाल।

तेरी सेवा के लिए ,नहीं बना संसार।
तू सेवा के लिए है यह ही रखो विचार।

कर्मों में आसक्तियाँ, स्वार्थ भाव जो मीत।
ये बंधन के हेतु है,मत रख इनसे प्रीत।

अपने हित मत कर्म कर,इक दिन होगा अन्त।
गैरों के हित किया कर,कहलायेगा सन्त।

अपनी जिह्वा काटते,कभी कभी निज दंत
मगर न उनकी भावना,बुरे कर्म की भनत।

सुनो कहो देखो नहीं, कभी बुराई तन्त्र।
सोचो समझो फिर जपो अच्छाई के मंत्र।

बुरे कर्म को छोड़ कर ,करना अच्छे काम।
इसे छोड़कर देखिए,क्या मिलते परिणाम।

चन्द्रभानु मिश्र
गाजियाबाद

गजल

कभी खुद से भी प्यार कर लेना
सब में खुद को भी शुमार कर लेना

बामशकत नेकी करते जाना राही तू
बरकतों का जरा इंतजार कर लेना

दिल किसी का सगा नहीं होता प्यारे
चलते फिरते किसी से ना प्यार कर लेना

नगद लेन-देना अच्छी आदत होती है
इश्क कभी मत उधार कर लेना।

जब भी आए बहार बन कर जिन्दगी में
तो मुहब्बत जिन्दगी से बेशुमार कर लेना

जिन्दगी रोज नया रंग लेके आती है
नदी सी जिन्दगी को ना खार कर लेना

रिश्तों को निभाने से ही बसर होती है प्यारे
कोई खुद से कोई दुनिया से करार कर लेना

प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु'

गजल

वतन की चूमकर मिट्टी तिलक माथे लगाए हैं।
लगाकर जान की बाजी तिरंगे को सजाए हैं।।

अमानत है यही अशफाक शेखर मंगलपांडे की।
लहू से सींचकर धरती वतन अपना बचाए हैं।।

बनाकर घास की रोटी कभी राणा ने खायी थी।
न पूछो जंगलों में दिन यहाँ कैसे बिताए हैं।।

जले हैं धूप में, सर्दी में कांपे, मेघ में भीगे।
हमारे अन्नदाता अन्न तब जाकर उगाए हैं।।

उठीं दुश्मन की नजरें जब कभी भी भारती माँ पर।
हमारे सैनिकों से वो हमेशा मुहकी खाए हैं।।

न भूले हैं, न भूलेंगे, कभी उनकी शहादत को।
जुबां पे भारती माँ दिल में हिन्दुस्ताँ बसाए हैं।।

प्रतिभा गुप्ता

अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका

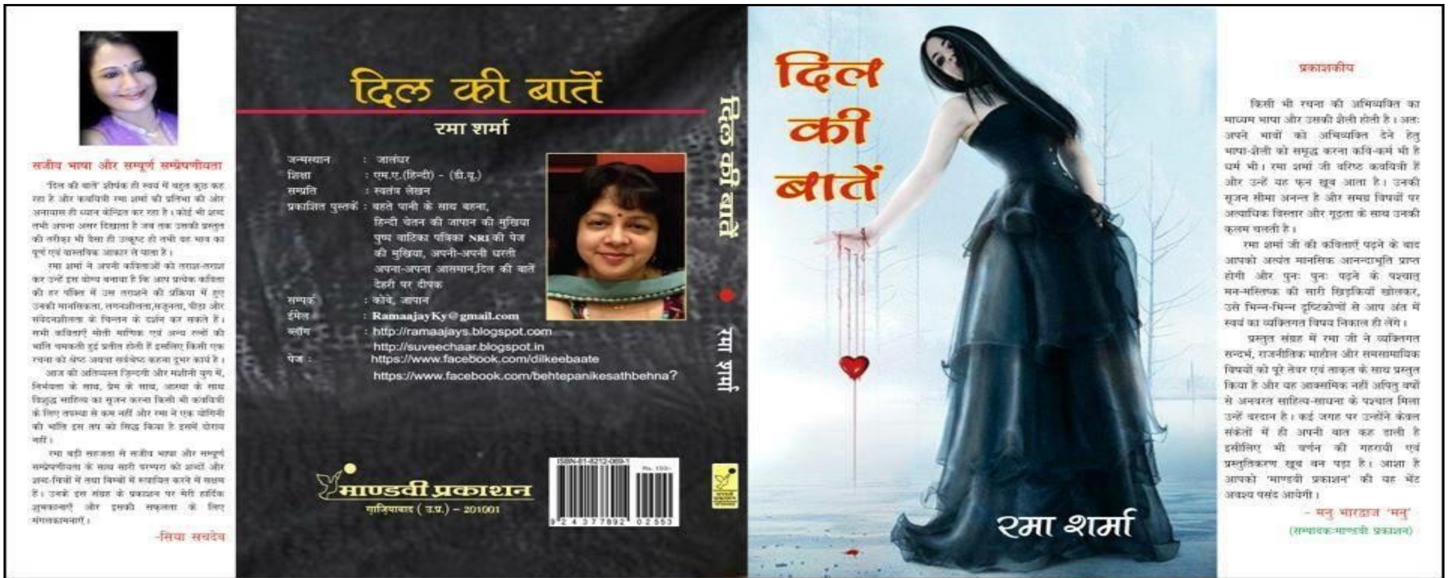
सजीव भाषा और सम्पूर्ण सम्प्रेषणीयता
-सिया सचदेव
दिल की बातें
रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर
शिक्षा : एम.ए.(हिन्दी) - (डी.यू.)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, हिन्दी चेतन की जापान की मुखिया पुष्प वाटिका पत्रिका NRI की पेज की मुखिया, अपनी-अपनी धरती अपना-अपना आसमान,दिल की बातें देहरी पर दीपक
सम्पर्क : कोबे, जापान
ईमेल : RamaajayKy@gmail.com
ब्लॉग : http://ramaajays.blogspot.com
http://suveechaar.blogspot.in
पेज : https://www.facebook.com/dilkeebaate
https://www.facebook.com/behtepanikesathbehna?
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
दिल की बातें ● रमा शर्मा
दिल की बातें
रमा शर्मा
प्रकाशकीय
- मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)
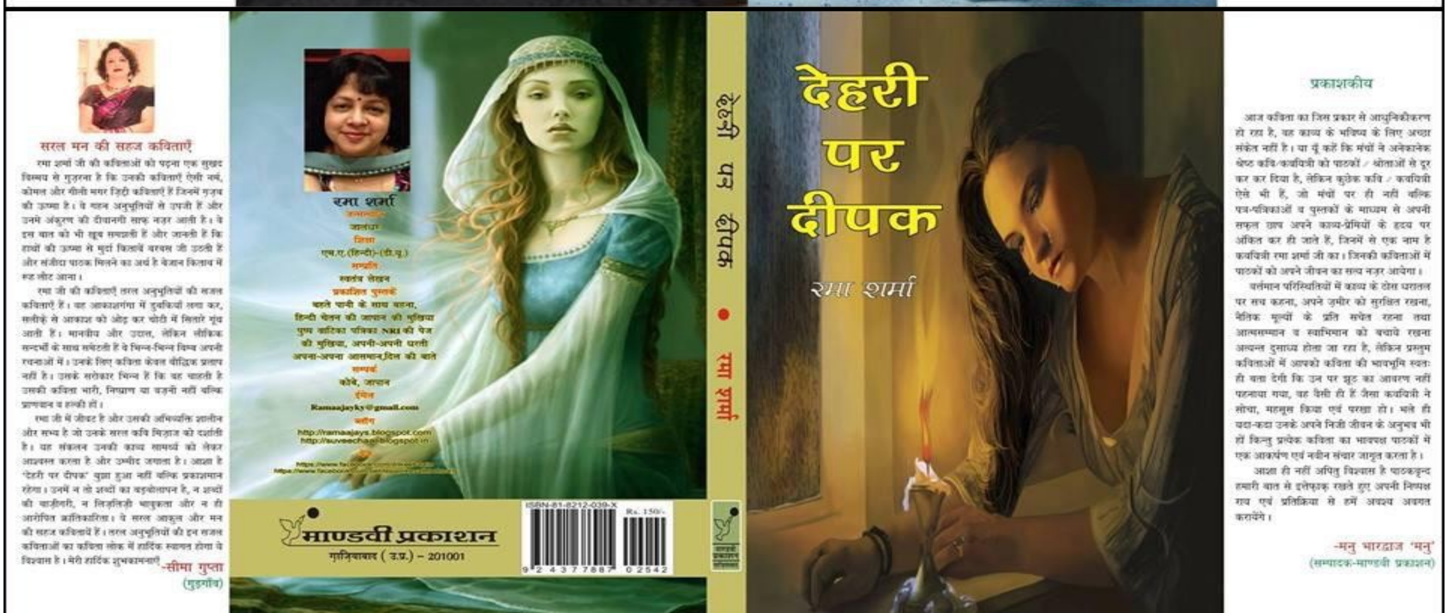
सरल मन की सहज कविताएँ
-सीमा गुप्ता
(गुड़गाँव)
रमा शर्मा
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
देहरी पर दीपक ● रमा शर्मा
देहरी पर दीपक
रमा शर्मा
प्रकाशकीय
-मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)
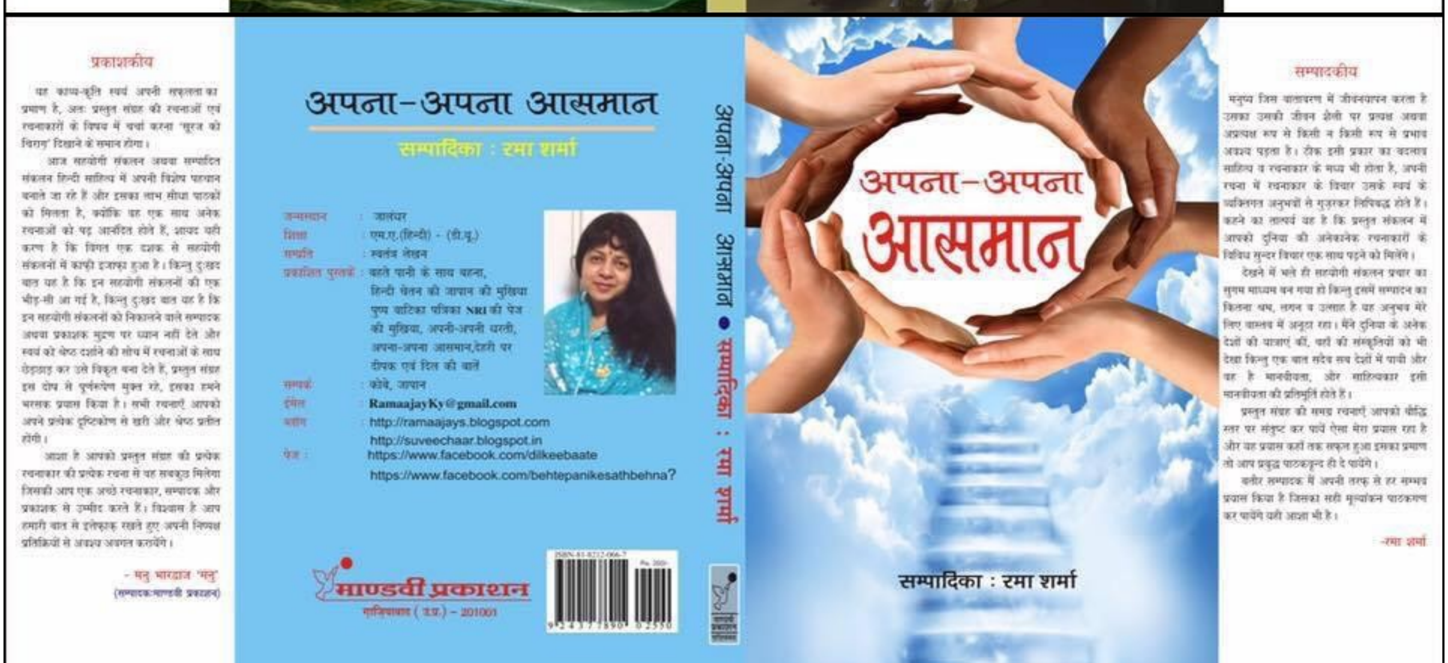
प्रकाशकीय
- मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर
शिक्षा : एम.ए.(हिन्दी) - (डी.यू.)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, हिन्दी चेतन की जापान की मुखिया पुष्प वाटिका पत्रिका NRI की पेज की मुखिया, अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान,देहरी पर दीपक एवं दिल की बातें
सम्पर्क : कोबे, जापान
ईमेल : RamaajayKy@gmail.com
ब्लॉग : http://ramaajays.blogspot.com
http://suveechaar.blogspot.in
पेज : https://www.facebook.com/dilkeebaate
https://www.facebook.com/behtepanikesathbehna?
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
अपना-अपना आसमान ● सम्पादिका : रमा शर्मा
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
सम्पादकीय
-रमा शर्मा

हिन्दी की गूँज

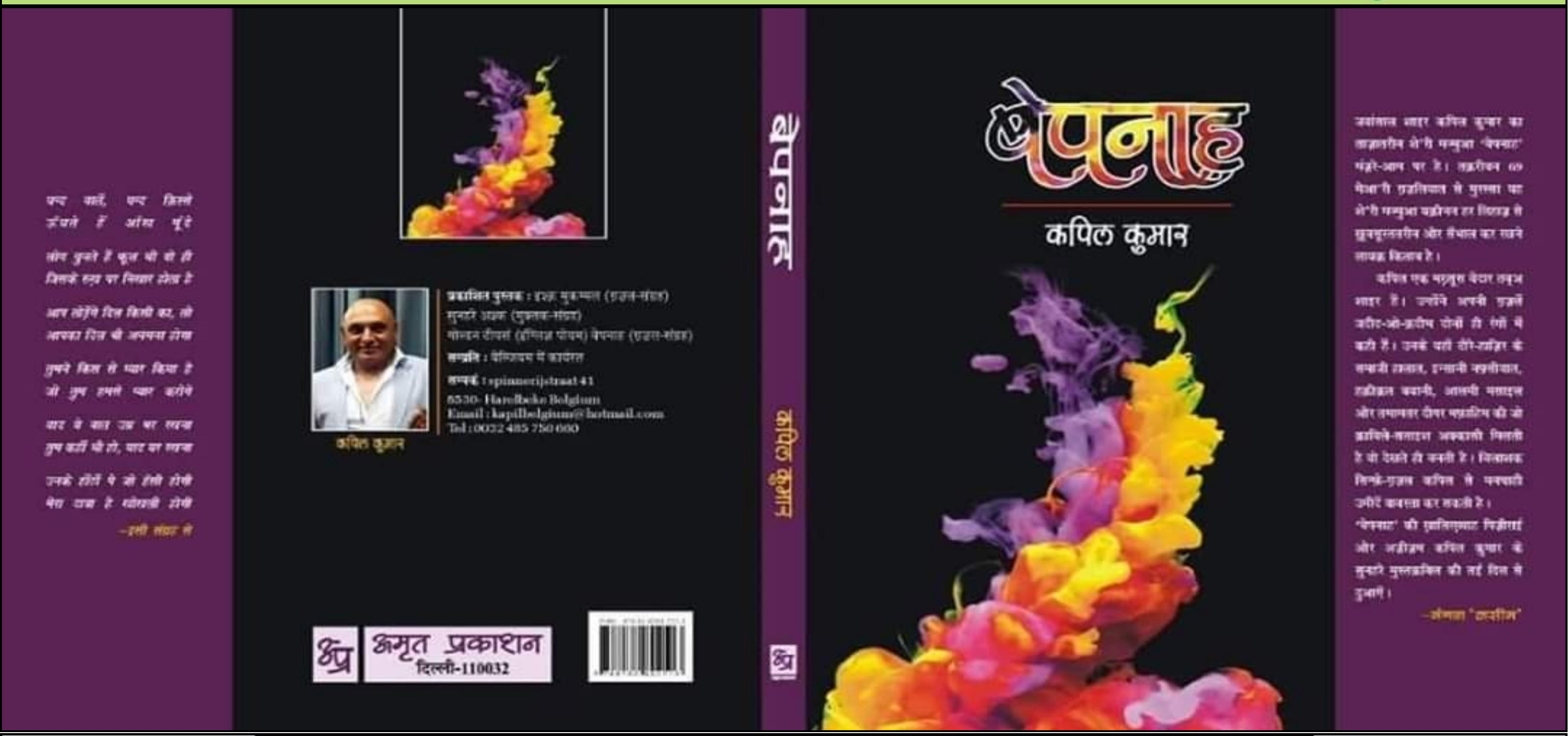

अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका